माध्यमिक स्तर
पर
सीखने के प्रतिफल

सत्यमेव जयते

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

माध्यमिक स्तर
पर
सीखने के प्रतिफल

विद्यया ऽ मृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
दिसंबर 2019 पौष 1941

PD 2T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2019

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 से प्रकाशित तथा श्री राम प्रिंटर्स, डी-6, सैक्टर-63, नोएडा 201 301 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-93-5292-205-5

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फ़ीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनुप कुमार राजपूत*

मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*

मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*

मुख्य व्यापार प्रबंधक : *बिबाष कुमार दास*

संपादन सहायक : *ऋषि पाल सिंह*

सहायक उत्पादन अधिकारी : *अतुल सक्सेना*

आवरण

डी.टी.पी. प्रकोष्ठ, डी.टी.ई.

रमेश पोखरियाल 'निशंक'
Ramesh Pokhriyal 'Nishank'

सत्यमेव जयते

मंत्री
मानव संसाधन विकास
भारत सरकार
MINISTER
HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) द्वारा *माध्यमिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल* दस्तावेज़ को विकसित किया गया है। यह दस्तावेज़ पूर्व में बनाए गए दस्तावेज़, *प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल* की निरंतरता में विकसित किया गया है।

इस दस्तावेज़ में सीखने के प्रतिफल हैं, जिन्हें विद्यार्थियों द्वारा हिंदी, अंग्रेज़ी, उर्दू, संस्कृत, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा तथा कला शिक्षा विषयों में कक्षा 9 और 10 के अंत तक प्राप्त किया जाना अपेक्षित है। इस दस्तावेज़ में इन सभी विषयों की पाठ्यचर्या-अपेक्षाएँ शामिल हैं तथा साथ ही शिक्षा-शास्त्रीय प्रक्रियाएँ भी सुझाई गई हैं, जिनमें आकलन अंतर्निहित है। इसके अतिरिक्त इस दस्तावेज़ में समावेशी कक्षा की आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखा गया है।

इस दस्तावेज़ को देश भर के हितधारकों से प्रतिक्रियाएँ आमंत्रित करने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र में साझा किया गया। प्राप्त सुझावों को समुचित रूप से दस्तावेज़ में शामिल किया गया। इस दस्तावेज़ को सलाहकार बैठक में अंतिम रूप दिया गया, जिसमें राज्यों/संघ शासित प्रदेशों, परीक्षा बोर्डों और राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों के सदस्य सम्मिलित थे।

सीखने के ये प्रतिफल पाठ्यक्रमों और सामग्रियों में विविधता को संबोधित करेंगे और शिक्षकों को बेहतर तरीके से सुपरिभाषित मानदंड प्रदान करेंगे। विद्यार्थी भी माध्यमिक स्तर को पूरा करने के उपरांत विकसित करने में सक्षम हो सकेंगे।

मुझे विश्वास है कि *माध्यमिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल* सीखने-सिखाने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए शिक्षक-प्रशिक्षकों, माता-पिता/अभिभावकों, शैक्षिक योजनाकारों, समुदाय के सदस्यों, राज्य के अधिकारियों और अन्य हितधारकों को देश भर के विद्यालयों में विद्यार्थियों को माध्यमिक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की उनकी भूमिका को सुनिश्चित करने में भी पूर्णतः सहायक होंगे।

(रमेश पोखरियाल 'निशंक')

Room No. 3, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 115
Phone : 91-11-23782387, 23782698, Fax : 91-11-23382365
E-mail : minister.hrd@gov.in

आमुख

बच्चे कई तरीकों से सीखते हैं, जैसे— सुनकर, पढ़कर, खेलकर, बातचीत से और काम करते हुए। इस तरह सीखने से उनके व्यवहार में परिवर्तन आते हैं। ये परिवर्तन जब महसूस किए जाते हैं और आकलित किए जाते हैं तो ये सीखने के प्रतिफल कहलाते हैं। सीखने की यह प्रक्रिया दक्षता विकास की ओर ले जाती है जोकि सतत है और वर्तुलाकार है। यह रैखिक तरीके से नहीं होती, इसलिए सीखने के प्रतिफलों को रैखिक तरीके से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। ये पाठ्यपुस्तकों में दी गई पाठ्यवस्तु पर भी निर्भर नहीं करते हैं, बल्कि हमारी पाठ्यचर्या की अपेक्षाओं से जुड़े होते हैं और प्रक्रिया-आधारित होते हैं।

दक्षता और प्रतिफल में अंतर को लेकर हमेशा से ही बहस रही है। सामान्यतः साहित्य में अंतिम परिणाम को 'सीखने का प्रतिफल' के रूप में देखा गया है और दक्षता को कुशल होने के रूप में, परंतु जब सीखना 'निरंतरता' के रूप में होता है तो शिक्षार्थी सीखने की स्थिति में या सीखने की प्रक्रिया में रहता है।

अतः सीखने के उपागम में सीखने के प्रतिफल वे दक्षताएँ हैं, जिन्हें शिक्षार्थी द्वारा निरंतर विकसित और संवर्धित किया जाना है।

इस परिप्रेक्ष्य में, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने बच्चों के, सीखने के स्तर के संदर्भ में नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा (आरटीई) अधिनियम, 2009 के सरोकार को संबोधित करने के लिए 2017 में प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल का विकास किया था। रा.शै.अ.प्र.प. ने विभिन्न हितधारकों के साथ चर्चा और शिक्षकों के क्षमता संवर्धन का कार्य भी किया था। इसके अनुवर्तन (फ़ॉलो-अप) के रूप में राज्यों और संघ शासित प्रदेशों ने अपने विद्यालयों में सीखने के प्रतिफल को प्रसारित करने का कार्य किया। इस संदर्भ में विभिन्न विद्यालयी शिक्षा-बोर्डों, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् आदि में माध्यमिक स्तर पर सीखने के प्रतिफलों की माँग बढ़ गई।

इस माँग को संबोधित करते हुए, रा.शै.अ.प्र.प. ने विद्यालयी शिक्षा में, सभी विषय-क्षेत्रों में माध्यमिक स्तर के लिए, सीखने के प्रतिफल विकसित किए हैं। विशेषज्ञों, शिक्षक-प्रशिक्षकों एवं शिक्षकों के परामर्श से सीखने के प्रतिफलों में, विषय-वस्तु के वर्चस्व की चुनौती को कम से कम किया गया है और प्रतिफल इस तरह से विकसित किए गए हैं कि प्रत्येक राज्य/संघ शासित प्रदेश अपने राज्य के पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को संज्ञान में लिए बिना भी इनका उपयोग कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, सीखने के प्रतिफल में किशोरों की सीखने की आवश्यकताओं से मेल खाने वाली शिक्षा-प्रक्रियाओं को भी ध्यान में रखा गया है।

सीखने के प्रतिफल दस्तावेज़ में जेंडर, समावेशन, संवैधानिक मूल्य, पर्यावरण की सुरक्षा और विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चे आदि जैसे राष्ट्रीय और सामाजिक सरोकारों को पर्याप्त स्थान दिया गया है। इसके अतिरिक्त, 21 वीं सदी के समस्या समाधान के कौशल, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता आदि भी इस दस्तावेज़ के अभिन्न अंग हैं।

इसके अतिरिक्त, सीखने के प्रतिफल का सार्वभौमिक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ भी सुदृढ़ संबंध है, जो सतत विकास के लक्ष्य-4 से संबद्ध है।

एक समावेशी कक्षा में सीखने के प्रतिफल को प्राप्त करने के लिए शिक्षा-शास्त्रीय प्रक्रियाओं का निर्माण इस दस्तावेज़ का मज़बूत पक्ष है। ये प्रक्रियाएँ केवल प्रस्तावित हैं और एक-एक प्रतिफल के साथ तद्नुरूप नहीं हैं। वस्तुतः शिक्षक संदर्भ और उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप शिक्षा-शास्त्रीय प्रक्रियाओं को अपनाने अथवा उनमें समुचित परिवर्तन करने के लिए स्वतंत्र हैं।

मुझे आशा है कि शिक्षक, शिक्षक-प्रशिक्षक, अभिभावक, नीति-नियोजक और अन्य हितधारक इस दस्तावेज़ को उपयोगी पाएँगे। इस दस्तावेज़ की गुणवत्ता को और संवर्धित करने के लिए टिप्पणियाँ और सुझाव आमंत्रित हैं।

हृषिकेश सेनापति
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
जनवरी 2019

प्राक्कथन

संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य—4 (एसडीजी—4) का मानना है कि शिक्षा एक सशक्त गुणक है; जो आत्मनिर्भर और सक्षम बनाती है, कौशल को बढ़ाकर आर्थिक विकास को सशक्त बनाती है और श्रेष्ठ आजीविका के अवसरों को प्रदान कर लोगों के जीवन को उत्तम बनाती है। एसडीजी—4 ने सार्वभौमिक गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने पर ज़ोर दिया है।

भारत ने शिक्षा की पहुँच प्रदान करने और इसकी गुणवत्ता में सुधार करके प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने में उल्लेखनीय प्रगति की है। अब देश सार्वभौमिक माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने की दिशा में प्रयासरत है। माध्यमिक स्तर पर इसे प्राप्त करने के लिए हमें शासन और समाज के सभी क्षेत्रों से प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। यह माध्यमिक शिक्षा का वह चरण है, जिसमें विद्यार्थी उच्च क्षमता के कौशल को प्राप्त करने के लिए अपनी योग्यता और कौशल को बेहतर बनाते हैं, काम की दुनिया के लिए स्वयं को तैयार करते हैं और शिक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं। यह सतत विकास की नींव है।

फ़रवरी 2018 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा माध्यमिक स्तर के लिए नवीनतम आयोजित राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एनएएस) विभिन्न विषयों, विशेषकर गणित में राज्यों/संघ राज्य-क्षेत्रों के विद्यार्थियों की कम उपलब्धि को दर्शाता है। यह भी अनुभव किया गया है कि विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए, बच्चों को मूल बातें समझने और उन कौशलों को हासिल करने का अवसर प्राप्त करने की आवश्यकता है, जिनकी विश्व स्तर पर आवश्यकता है। यह सुनिश्चित है कि हर बच्चा नयी सदी में प्रभावी कामकाज के लिए आवश्यक कौशल और दक्षता विकसित करे। यह तभी संभव है, जब सभी शिक्षार्थियों को सीखने के लिए समान अवसर प्रदान किए जाएँ और उन्हें केवल स्मरण करने के तरीकों से हटकर दक्षताओं के विकास की ओर ले जाया जाए। इसके लिए ऐसी सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को अपनाने की आवश्यकता होती है जो अर्थपूर्ण हों।

प्रारंभिक अधिगम स्तर पर रा.शै.अ.प्र.प. ने पहले से ही कक्षा एक से लेकर आठवीं कक्षा के लिए भाषा, गणित और पर्यावरण अध्ययन और उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों के लिए 'प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल' विकसित किए हैं। यह दस्तावेज़ उन विभिन्न शैक्षणिक प्रक्रियाओं को भी उजागर करता है, जिन्हें शिक्षक द्वारा दक्षताओं के विकास के लिए कक्षाओं में अपनाने की आवश्यकता होती है।

प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफलों का पालन पूरे देश में किया जा रहा है। प्रारंभिक स्तर की निरंतरता में ही रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा 'माध्यमिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल' नामक दस्तावेज़ विकसित किया गया है। इसमें वे दक्षताएँ सम्मिलित हैं, जो शिक्षार्थियों में हिंदी, अंग्रेज़ी, उर्दू, संस्कृत, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा और कला शिक्षा विषयों में कक्षा 9 और 10 में विकसित की जानी चाहिए। इसमें विस्तृत शैक्षणिक प्रक्रियाओं को भी सम्मिलित किया गया है, जिन्हें अपेक्षित दक्षताओं को विकसित करने के लिए अपनाया जा सकता है।

यह दस्तावेज़ न केवल उपयुक्त शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं के लिए शिक्षकों की सहायता करेगा, अपितु इसके साथ ही स्कूल बोर्डों और स्कूल व्यवस्थाओं को, सीखने के प्रतिफलों को समझने के लिए और लागू करने के लिए भी समर्थन करेगा। इन प्रतिफलों को प्राप्त करने से सभी शिक्षार्थियों की प्रगति के साथ-साथ देश में शिक्षा की गुणवत्ता में भी सुधार होगा। इसके अतिरिक्त यह अन्य हितधारकों, विशेष रूप से

माता-पिता, स्कूल प्रबंधन समिति (एसएमसी) के सदस्यों, पंचायती राज प्रतिनिधियों, राज्य के अधिकारियों और सबसे अधिक, समग्र रूप से समुदाय को उनकी भूमिकाओं को समझने में गति प्रदान करेगा एवं माध्यमिक स्तर तक सभी शिक्षार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए योगदान देगा।

माध्यमिक स्तर पर सीखने के प्रतिफलों के उद्देश्य

जैसा कि पहले कहा गया है, माध्यमिक स्तर के लिए सीखने के प्रतिफलों में, सीखने के प्रारंभिक स्तर के प्रतिफलों की एक निरंतरता है।

निरंतरता इस अर्थ में कि दस्तावेज़ यह इंगित करता है कि शिक्षण-अधिगम में कैसे स्कूल के सभी प्रकार और श्रेणियों के शिक्षार्थियों, जैसे— वंचित समूहों, सीखने में अशक्त बच्चे, विशेष आवश्यकताओं वाले शिक्षार्थियों के साथ-साथ सीखने में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले शिक्षार्थी और कक्षा 1–10 तक की स्कूली शिक्षा की पूरी अवधि को ध्यान में रखना होगा। इस दस्तावेज़ से सभी के लिए अधिगम और सभी द्वारा अधिगम की परिणति होगी। सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए इनमें एकीकृत और समग्र सीखने के दृष्टिकोण को अपनाने के सुझाव दिए गए हैं, जैसा कि सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में संकेत दिए गए हैं। पाठ्यवस्तु-विषयों, भाषाओं और कक्षा के संचालन के माध्यम से दक्षताओं के विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

वर्तमान में सीखने के प्रतिफल नामक दस्तावेज़ में शिक्षा को, शैक्षिक और पाठ्यचर्या योजनाकारों, माता-पिता और शिक्षा में हितधारकों के लिए कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं —

- संपर्णू दस्तावेज़ को प्रयोक्ता-अनुकूल बनाने के लिए यथासंभव सरल भाषा का प्रयोग किया गया है।
- प्रत्येक विषय में पाठ्यचर्या-अपेक्षाओं में *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ़–2005)* दस्तावेज़ पर माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक वर्ग के लिए पाठ्यचर्या में शामिल अपेक्षाएँ सम्मिलित हैं।
- कक्षावार परिभाषित सीखने के प्रतिफल, प्रक्रिया एवं क्षमता-आधारित हैं और कक्षा में शिक्षार्थियों की प्रगति का आकलन करने के लिए गुणात्मक या मात्रात्मक रूप में मापे जा सकते हैं।
- साथ के कॉलम में सुझाई गई सीखने-सिखाने की प्रक्रियाएँ सीखने के प्रतिफलों के साथ एक से एक के अनुरूप नहीं हैं। यहाँ पर शिक्षक संसाधनों की स्थिति, संदर्भ और उपलब्धता के अनुसार नयी प्रक्रियाओं की रचना कर सकते हैं या उन्हें अपना/अंगीकृत कर सकते हैं।
- आकलन सीखने-सिखाने की गतिविधियों का अभिन्न अंग है। यह विद्यार्थियों की उपलब्धि की प्रकृति और विस्तार बताता है, इसलिए सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में यह महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि आकलन को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के साथ समेकित किया जाए, ताकि सीखने-सिखाने के प्रमाणों को पहचाना जा सके। इस दस्तावेज़ में आकलन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में अंतर्निहित है। जिस क्षमता का आकलन करना है, शिक्षक उसके अनुसार आकलन की योजना, रचना और संचालन कर सकते हैं।
- शिक्षण-अधिगम और आकलन को ध्यान, सामर्थ्य में निपुणता से क्षमता-आधारित निपुणता में केंद्रित करने की आवश्यकता है। शिक्षार्थियों को यह समझने की आवश्यकता है कि 'मैं कैसे सीखता/सीखती हूँ?', 'मैं क्यों सीखता/सीखती हूँ?', 'मैं आगे इस अवधारणा या विचार का कैसे उपयोग करूँगा/करूँगी?' यह 'मैं जो सीखता/सीखती हूँ', उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षार्थियों को अकादमिक तंत्र में दक्षताओं को विकसित करने की आवश्यकता होती है, ताकि वे स्कूल छोड़ने के बाद भी वास्तविक जीवन के संदर्भों में उनका उपयोग कर सकें। अंतिम लक्ष्य विषय-वस्तु पर निपुणता प्राप्त करना नहीं है, क्योंकि विषय-वस्तु केवल योग्यता विकसित करने के लिए उपयोग किया जाने

वाला माध्यम भर है। शिक्षार्थियों को वास्तविक जीवन के उद्देश्यों के लिए ज्ञान को समझने, तुलना करने, फेरबदल करने और उसे लागू करने की आवश्यकता है। विभिन्न सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं एवं दक्षताओं का उपयोग करके, उन्हें केवल एक साधन के रूप में अर्जित किया है, जैसे— विकासशील रचनात्मकता, समालोचनात्मक चिंतन एवं संचार कौशल और परीक्षाओं में श्रेणी प्राप्त करना, लेकिन सीखने वाले इतने सक्षम भी हों कि वे अपनी सीखने, सोचने और काम पर इन कौशलों का उपयोग करके राष्ट्र निर्माण की दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

- सीखने के प्रतिफलों को, 21वीं सदी में आने वाली आगामी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है जो कि शिक्षार्थियों से प्रतिस्पर्धा के युग में कार्य की समझ, कौशल एवं उनके प्रयोग की माँग करती हैं।
- साधारणतः ये न केवल विषय-वस्तु को सीखने के प्रतिफल हैं; बल्कि ये वे अपेक्षाएँ, दक्षताएँ और कौशल हैं, जिनसे विद्यार्थी अपने आपको एक अच्छे नागरिक के रूप में स्वयं तैयार कर समतावादी देश बनाने में योगदान दे सकें।
- भावनात्मक क्षेत्र पर फ़ोकस का उचित ध्यान रखा गया है। किसी भी आदर्श पाठ्यचर्या का उद्देश्य शिक्षार्थियों के समग्र विकास को प्राप्त करना है और यह केवल संज्ञानात्मक विचार-सीमा से संबंधित कौशल पर ध्यान केंद्रित करके नहीं किया जा सकता है। यह भावनात्मक क्षेत्र पर भी ध्यान केंद्रित करने की माँग करता है, क्योंकि हमें अपने शिक्षार्थियों को कारीगरों, कवियों, आउट ऑफ़ बॉक्स नवाचारियों, उद्यमियों, वैज्ञानिकों, विचारकों और मूल्यों के साथ दार्शनिकों के रूप में भी आकार देने की आवश्यकता है।
- इस तरह की दक्षताओं को विकसित करने के लिए यह अनिवार्य है कि कक्षा में पर्यावरण को इस प्रकार से संरचित किया जाए, ताकि उपयुक्त सीखने-सिखाने की प्रक्रिया(ओं) को इस्तेमाल करते हुए शिक्षार्थियों को सीखने के अपेक्षित अनुभव प्राप्त हों। दस्तावेज़ में वर्णित की गई सीखने-सिखाने की प्रक्रियाएँ तंत्र को सीमित करने वाली नहीं हैं, बल्कि एक अनुकूल वातावरण बनाने का ध्यान रखती हैं, जहाँ सभी शिक्षार्थी समूहों में काम करते हैं, सहयोग करते हैं और सहयोगी काम और बातचीत में सम्मिलित होते हैं। ये अनुक्रियाएँ सीखने के समृद्ध अनुभवों की प्रक्रियाएँ बनाती हैं, जिनमें सभी शिक्षार्थी सीखने के लिए बातचीत करते हैं, साझेदारी करते हैं, सहयोग करते हैं और संवाद करते हैं, इसलिए सिर्फ़ परिणाम पर ही नहीं, अपितु प्रक्रिया पर भी बल देते हैं।
- इस दस्तावेज़ की एक और विशेषता यह है कि विशेष आवश्यकताओं वाले शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं, अन्य अक्षमताओं वाले शिक्षार्थियों और कठिन परिस्थितियों में सीखने वाले शिक्षार्थियों की सीखने-संबंधित आवश्यक्ताओं को यह संबोधित करता है। यह मातृभाषा के महत्व को रेखांकित करता है और मातृभाषा के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग पर भी ज़ोर देता है। सभी प्रकार के शिक्षार्थियों के लिए उपयुक्त विभिन्न प्रारूपों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के उपयोग के लिए इसमें अतिरिक्त सहायता का प्रावधान किया गया है।

यह परिकल्पना की जाती है कि ऐसी कक्षा में प्रक्रिया-आधारित सीखने के दृष्टिकोण को अपनाया जाना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में अगला महत्वपूर्ण कदम होगा, जहाँ सभी शिक्षक और शिक्षार्थी जवाबदेही के साथ-साथ जानने और अधिगम प्राप्त करने की सुनिश्चितता में सह-कारकों के रूप में कार्य करेंगे।

यह सीखने के प्रतिफल दस्तावेज़, 'सीखने के रूप में मूल्यांकन' का उपयोग करके परीक्षा व्यवस्था में बदलाव लाने के लिए योगदान देगा। यह परीक्षा की वर्तमान व्यवस्था में बदलाव लाने के लिए स्कूल बोर्डों को भी प्रोत्साहित करेगा।

सीखने के प्रतिफल, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए विचार किए जाने वाले बिंदु

- परीक्षाओं में सफलतापूर्वक भागीदारी के लिए अतिरिक्त समय तथा उपयुक्त संसाधन देना।
- पाठ्यचर्या में संशोधन, क्योंकि यह उनके लिए विशिष्ट कठिनाइयाँ पैदा करता है।
- विभिन्न विषय-वस्तु क्षेत्रों में अनुकूलित, संशोधित या वैकल्पिक गतिविधियों का प्रावधान कराना।
- उनकी आयु एवं अधिगम स्तर के अनरूप सुगम पाठ्यवस्तु व सामग्री उपलब्ध कराना।
- घर की भाषा के लिए सम्मान और उनके सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश (परंपराएँ और रीति-रिवाज़ इत्यादि) से संबंध स्थापित कराना।
- समचित कक्षा-कक्ष प्रबंधन उपलब्ध कराना (उदाहरण के लिए ध्वनि, प्रकाश, चमक इत्यादि का प्रबंधन)।
- सूचना एवं संचार तकनीकी (आईसीटी), वीडियो अथवा डिजिटल प्रारूपों के प्रयोग से अतिरिक्त सहयोग एवं सुगमता का प्रावधान उपलब्ध कराना।

सीखने को संबोधित करने के लिए कुछ अतिरिक्त विषय-विशिष्ट दिशानिर्देश, एक विशेष पाठ्यक्रम क्षेत्र के लिए सीखने के परिणामों के प्रत्येक खंड में विभिन्न अक्षमताओं वाले बच्चों की ज़रूरतों का उल्लेख किया गया है। जिन शिक्षण-प्रशिक्षण कठिनाइयों का उल्लेख किया गया है, उन पर ध्यान देने की आवश्यकता है, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सहायता करने के लिए प्रत्येक पाठ्यक्रम के अंतर्गत पहचाने गए, सीखने के परिणामों को पूरा करने की ज़रूरत है। यदि आवश्यकता हो तो गंभीर संज्ञानात्मक हानि (बौद्धिक रूप से अक्षम) वाले बच्चों द्वारा सीखने के परिणामों की उपलब्धि को लचीला रखा जा सकता है।

विषय-सूची

आमुख		*v*
प्राक्कथन		*vii*
1.	हिंदी भाषा सीखने के प्रतिफल	1
2.	Learning Outcomes for the English Language	11
3.	اردو زبان کے آموزشی ماحصل (Learning Outcomes for the Urdu Language)	22
4.	संस्कृतभाषाधिगमस्य प्रतिफलानि	31
5.	विज्ञान सीखने के प्रतिफल	40
6.	सामाजिक विज्ञान सीखने के प्रतिफल	53
7.	गणित सीखने के प्रतिफल	79
8.	स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा सीखने के प्रतिफल	88
9.	कला शिक्षा सीखने के प्रतिफल	99

पढ़ेंगे
लिखेंगे
खेलेंगे
संग-संग

हिंदी भाषा सीखने के प्रतिफल

परिचय

नवीं कक्षा में दाखिल होने वाले विद्यार्थी की भाषा, शैली और विचार बोध एक ऐसा आधार बन चुका होता है कि अब उसे उसके भाषिक दायरे के विस्तार और वैचारिक समृद्धि के लिए जरूरी संसाधन मुहैया कराए जाने की आवश्यकता होती है। माध्यमिक स्तर तक आते-आते विद्यार्थी किशोर हो चुका होता है और उसमें सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने एवं समझने के साथ-साथ आलोचनात्मक दृष्टि विकसित होने लगती है। भाषा के सौंदर्यात्मक पक्ष, कथात्मकता/गीतात्मकता, अखबारी समझ, शब्द की दूसरी शक्तियों के बीच अंतर, राजनैतिक चेतना एवं सामाजिक चेतना का विकास हो जाता है। वह आस-पड़ोस की भाषा और आवश्यकता के अनुसार उपयुक्त भाषा-प्रयोग, शब्दों के सुचिंतित इस्तेमाल, भाषा की नियमबद्ध प्रकृति आदि से परिचित हो जाता है। इतना ही नहीं वह विभिन्न विधाओं और अभिव्यक्ति की अनेक शैलियों से भी वाकिफ़ हो चुका होता है। अब विद्यार्थी की पढ़ाई आस-पड़ोस, राज्य-देश की सीमा को लाँघते हुए वैश्विक क्षितिज तक फैल जाती है। इन बच्चों की दुनिया में समाचार, खेल, फ़िल्म तथा अन्य कलाओं के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाएँ और अलग-अलग तरह की किताबें भी प्रवेश पा चुकी होती हैं।

यह आवश्यकता है कि इस स्तर पर मातृभाषा हिंदी का अध्ययन साहित्यिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक भाषा के रूप में कुछ इस तरह से हो कि उच्चतर माध्यामिक स्तर तक पहुँचते-पहुँचते यह विद्यार्थियों की पहचान, आत्मविश्वास और विमर्श की भाषा बन सके। प्रयास यह भी होगा कि विद्यार्थी भाषा के लिखित प्रयोग के साथ-साथ सहज और स्वाभाविक मौखिक अभिव्यक्ति में भी सक्षम हो सके। हिंदी की प्रकृति के अनुसार वर्तनी और उच्चारण के आपसी संबंध को समझ सके, ताकि उसकी लिखित और मौखिक भाषा में एक समानता एवं स्पष्टता हो।

भाषा को सीखना-सिखाना

इस संदर्भ में हम यही कहेंगे कि अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने के एक माध्यम के रूप में हम भाषा को पहचानते और समझते रहे हैं, इसीलिए हम सब यही परिभाषा पढ़ते हुए बड़े हुए कि भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है; यानी भाषा के ज़रिए ही हम कुछ कहते और लिखते हैं और किसी के द्वारा कहे और लिखे को सुनते और पढ़ते हैं, इसीलिए भाषा के चार कौशलों की बात इस तरह से प्रमुख होती चली गई कि हम भूल ही गए कि कहने-सुनने वाला सोचता भी है। इस संदर्भ में बर्तोल्त ब्रेख्त की कुछ पंक्तियाँ ध्यान देने योग्य हैं, जिनमें सोचने के कौशल की ओर इशारा है—"जनरल, आदमी कितना उपयोगी है, वह उड़ सकता है और मार सकता है। लेकिन उसमें एक नुक्स है— वह सोच सकता है।" बच्चे जो कुछ देखते या सुनते हैं उसे अपनी दृष्टि और समझ से देखते-सुनते हैं और अपनी ही दृष्टि और समझ के साथ बोलते

और लिखते हैं। यह दृष्टि/समझ एक परिवेश और समाज के भीतर ही बनती है, इसलिए परिवेश और समाज के बीच बन रही बच्चे की समझ को उपयुक्त अभिव्यक्ति में समर्थ बनाने की कोशिश होनी चाहिए। जबकि हो यह रहा है कि जब बच्चे स्कूल आते हैं तो घर की भाषा और स्कूल की भाषा के बीच एक द्वंद्व शुरू हो जाता है। इस द्वंद्व से माध्यमिक स्तर के बच्चे जो कि किशोरावस्था में पहुँच रहे होते हैं, को भी जूझना पड़ता है। उनके पास अनेक सवाल हैं, अपने आस-पास के समाज और संसार से। जिनका जवाब वे ढूँढ़ रहे हैं। अगर हमारी भाषा की कक्षा उनके सवालों और जवाबों को, उनकी अपनी भाषा दे सके तो यह इसकी सार्थकता होगी। इसलिए कक्षा में भाषा-कौशलों को एक साथ जोड़कर पढ़ने-पढ़ाने की दृष्टि भी विकसित करनी होगी। यह भी ध्यान रखना होगा कि भाषा-कौशलों को बेहतर बनाने के लिए बच्चे के परिवेश में उस भाषा की उपयुक्त सामग्री उपलब्ध हो। खासतौर से द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने-पढ़ाने वालों के लिए यह ज़रूरी होगा। भाषा पढ़ने के माहौल और प्रक्रिया के अनुसार ही बच्चों में सीखने के प्रतिफल रूपी गुण जाग्रत होंगे।

द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी में निपुणता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हिंदी भाषा में प्रचुर मात्रा में पाठ्यसामग्री के साथ-साथ हिंदी में लगातार रोचक अभ्यास (शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया) करना-कराना। यह प्रक्रिया जितनी अधिक रोचक, सक्रिय एवं प्रासंगिक होगी, विद्यार्थियों की भाषिक उपलब्धि भी उतनी तेज़ी से बढ़ेगी। मुखर भाषिक अभ्यास के लिए वार्तालाप, रोचक ढंग से कहानी कहना-सुनाना, घटना-वर्णन, चित्र-वर्णन, वाद-विवाद, अभिनय, भाषण प्रतियोगिताएँ, कविता पाठ और अंत्याक्षरी जैसी गतिविधियों का सहारा लिया जा सकता है। विभिन्न प्रकार के श्रव्य-दृश्य — वृत्तचित्रों और फ़ीचर फ़िल्मों को सीखने-सिखाने की सामग्री के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। जैसा कि हम जानते हैं बहुभाषिकता हमारे ज्ञान-निर्माण की प्रक्रिया में सकारात्मक भूमिका निभाती है। मातृभाषा के विविध भाषा-कौशलों एवं ज्ञान का उपयोग शिक्षक एवं विद्यार्थी द्वितीय-भाषा के रूप में हिंदी सीखने-सिखाने के लिए कर सकते हैं। प्रयास यह हो कि विद्यार्थी अपनी मातृभाषा और परिवेशगत भाषा को साथ रखकर हिंदी भाषा-साहित्य को समझ सकें, उसका आनन्द लें और अपने व्यावहारिक-जीवन में उसका उपयोग कर सकें।

पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ —

- विद्यार्थी अगले स्तरों पर अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुरूप हिंदी की पढ़ाई कर सकेंगे तथा हिंदी में बोलने और लिखने में सक्षम हो सकेंगे।
- अपनी भाषा-दक्षता के चलते उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और अन्य पाठ्यक्रमों के साथ सहज संबद्धता (अंतर्संबंध) स्थापित कर सकेंगे।
- दैनिक व्यवहार, आवेदन पत्र लिखने, अलग-अलग किस्म के पत्र/ई-मेल लिखने, प्राथमिकी दर्ज कराने इत्यादि में सक्षम हो सकेंगे।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पहुँचकर, भाषा की विभिन्न प्रयुक्तियों में मौजूद अंतर्संबंध को समझ सकेंगे।

- हिंदी में दक्षता को वे अन्य भाषा-संरचनाओं की समझ विकसित करने के लिए इस्तेमाल कर सकेंगे, स्थानांतरित कर सकेंगे।
- कक्षा आठवीं तक अर्जित भाषिक कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना और चिंतन) का उत्तरोत्तर विकास कराना।
- सृजनात्मक साहित्य के आलोचनात्मक आस्वाद की क्षमता का विकास हो सकेगा।
- स्वतंत्र और मौखिक रूप से अपने विचारों की अभिव्यक्ति का विकास हो सकेगा।
- साहित्य की विभिन्न विधाओं के मध्य अंतर्संबंध एवं अंतर की पहचान कर सकेंगे।
- भाषा और साहित्य के रचनात्मक उपयोग के प्रति रुचि उत्पन्न कर सकेंगे।
- ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के, विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति एवं क्षमता का बोध कराना।
- साहित्य की प्रभावकारी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी प्रकार की विविधताओं (राष्ट्रीयता, धर्म, जेंडर, भाषा) के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील रवैये का विकास कराना।
- जाति, धर्म, जेंडर, राष्ट्रीयता, क्षेत्र आदि से संबंधित पूर्वाग्रहों के चलते बनी रूढ़ियों की भाषिक अभिव्यक्तियों के प्रति सजगता एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास कर सकेंगे।
- विदेशी भाषाओं समेत विभिन्न भारतीय भाषाओं की संस्कृति की विविधता से परिचय कराना।
- व्यावहारिक और दैनिक जीवन में विविध किस्म की अभिव्यक्तियों की मौखिक व लिखित क्षमता का विकास कराना।
- संचार माध्यमों (प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से अवगत कराना और उन्हें नए-नए तरीकों से प्रयोग करने की क्षमता का परिचय कराना।
- अर्थपूर्ण विश्लेषण, स्वतंत्र अभिव्यक्ति और तर्क क्षमता का विकास कराना।
- भाषा के अमूर्त रूप को समझने की पूर्व-अर्जित क्षमताओं का उत्तरोत्तर विकास कराना।
- भाषा में मौजूद हिंसा की सरंचनाओं की समझ का विकास कराना।
- मतभेद, विरोध और टकराव की परिस्थितियों में भी भाषा के संवेदनशील और तर्कपूर्ण इस्तेमाल से शांतिपूर्ण संवाद की क्षमता का विकास कराना।
- भाषा की समावेशी और बहुभाषिक प्रकृति के प्रति ऐतिहासिक और सामाजिक नज़रिए का विकास कराना।
- शारीरिक और अन्य सभी प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहे बच्चों में भाषिक क्षमताओं के विकास की उनकी अपनी विशिष्ट गति और प्रतिभा की पहचान कराना।
- इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से जुड़ते हुए भाषा-प्रयोग की बारीकियों और सावधानियों से अवगत कराना।

कक्षा 9

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
सभी विद्यार्थियों को समझते हुए सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने और परिवेशीय सजगता को ध्यान में रखते हुए व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिए जाएँ ताकि— • संगीत, लोक-कलाओं, फ़िल्म, खेल आदि की भाषा पर पाठ पढ़ने या कार्यक्रम के दौरान गौर से करने/सुनने के बाद संबंधित गतिविधियाँ कक्षा में हों। विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए कि वे आस-पास की ध्वनियों और भाषा को ध्यान से सुनें और समझें। • उन्हें इस बात के अवसर मिलें कि वे रेडियो और टेलीविज़न पर खेल, फ़िल्म, संगीत तथा अन्य गतिविधियों से संबंधित कार्यक्रम देखें/सुनें और उनकी भाषा, लय संचार-संप्रेषण पर चर्चा करें। • रेडियो और टेलीविज़न पर राष्ट्रीय, सामाजिक चर्चाओं को सुनने/देखने और सुनाने/समझने तथा उन पर टिप्पणी करने के अवसर हों। • अपने आस-पास के लोगों की ज़रूरतों को जानने/समझने के लिए उनसे साक्षात्कार और बातचीत के अवसर सुलभ हों, ऐसी गतिविधियाँ पाठ्यक्रम का हिस्सा हों। • हिंदी के साथ-साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने-लिखने (ब्रेल तथा अन्य संकेत भाषा में भी) और उन पर बातचीत की आज़ादी हो। • अपने अनुभवों को स्वतंत्र ढंग से लिखने के अवसर हों। • अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों। • अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने की स्वतंत्रता हो। • सक्रिय और जागरूक बनाने वाले स्रोत, अखबार, पत्रिकाएँ, फ़िल्म और अन्य श्रव्य-दृश्य (ऑडियो-वीडियो) सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने और लिखकर अभिव्यक्त करने संबंधी गतिविधियाँ हों।	**विद्यार्थी—** • सामाजिक मुद्दों (जेंडरभेद, जातिभेद, विभिन्न प्रकार के भेद) पर कार्यक्रम सुनकर/देखकर अपनी राय व्यक्त करते हैं। जैसे—जब सब पढ़ें तो पड़ोस की मुसकान क्यों न पढ़े? या मुसकान अब पार्क में क्यों नहीं आती? • अपने आस-पड़ोस के लोगों, स्कूली सहायकों या स्कूली साथियों की आवश्यकताओं को कह और लिख पाते हैं। • पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त नई रचनाओं के बारे में जानने/समझने को उत्सुक हैं और उन्हें पढ़ते हैं। • अपनी पसंद की अथवा किसी सुनी हुई रचना को पुस्तकालय या अन्य स्थान से ढूँढ़कर पढ़ने की कोशिश करते हैं। • समाचारपत्र, रेडियो और टेलीविज़न पर प्रसारित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों, खेल, फ़िल्म, साहित्य-संबंधी समीक्षाओं, रिपोर्टों को देखते, सुनते और पढ़ते हैं। • देखी-सुनी, सुनी-समझी, पढ़ी और लिखी घटनाओं/रचनाओं पर स्पष्टतया मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति करते हैं। • दूसरों द्वारा कही जा रही बातों को धैर्य से सुनकर उन्हें समझते हुए अपनी स्पष्ट राय व्यक्त करते हैं। • अपने अनुभवों, भावों और दूसरों की राय, विचारों को लिखने की कोशिश करते हैं। जैसे— आँख बंद करके यह दुनिया, व्हीलचेयर से खेल मैदान आदि। • किसी सुनी, बोली गई कहानी, कविता अथवा अन्य रचनाओं को रोचक ढंग से आगे बढ़ाते हुए लिखते हैं। • सामाजिक मुद्दों पर ध्यान देते हुए पत्र, नोट लेखन इत्यादि कर पाते हैं।

- कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों, जैसे— अभिनय, भूमिका निर्वाह (रोल-प्ले), कविता पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों तथा उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट (पटकथा) लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर सुलभ हों।
- अपने माहौल और समाज के बारे में स्कूल तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपनी राय देने के अवसर हों।
- कक्षा में भाषा-साहित्य की विविध छवियों/विधाओं के अंतरसंबंधों को समझते हुए उनके परिवर्तनशील स्वरूप पर चर्चा हो, जैसे— आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, कविता, कहानी, निबंध आदि।
- भाषा-साहित्य के सामाजिक-सांस्कृतिक-सौंदर्यात्मक पक्षों पर चर्चा/विश्लेषण करने के अवसर हों।
- संवेदनशील मुद्दों पर आलोचनात्मक विचार विमर्श के अवसर हों, जैसे— जाति, धर्म, रीति-रिवाज़, जेंडर आदि।
- कृषि, लोक-कलाओं, हस्त-कलाओं, लघु-उद्योगों को देखने और जानने के अवसर हों और उनसे संबंधित शब्दावली को जानने और उनके उपयोग के अवसर हों।
- कहानी, कविता, निबंध आदि विधाओ में व्याकरण के विविध प्रयोगों तथा उपागमों पर चर्चा के अवसर हों।
- विद्यार्थी को अपनी विभिन्न भाषाओं के व्याकरण से तुलना/समानता देखने के अवसर हों।
- रचनात्मक-लेखन, पत्र-लेखन, टिप्पणी, निबंध, अनुच्छेद आदि लिखने के अवसर हों।

- पाठ्यपुस्तकों में शामिल रचनाओं के अतिरिक्त, जैसे— कविता, कहानी, एकांकी, गद्य-पद्य की अन्य विधाओं को पढ़ते-लिखते हैं और कविता की ध्वनि और लय पर ध्यान देते हैं।
- संगीत, फ़िल्म, विज्ञापनों खेल आदि की भाषा पर ध्यान देते हैं। जैसे— उपर्युक्त विषयों की समीक्षा करते हुए उनमें प्रयुक्त रजिस्टरों का उपयोग करते हैं।
- भाषा-साहित्य की बारीकियों पर चर्चा करते हैं, जैसे— विशिष्ट शब्द-भंडार, वाक्य-संरचना, शैली-संरचना, मौलिकता आदि।
- अपने आस-पास के रोज़ाना बदलते पर्यावरण पर ध्यान देते हैं तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए सचेत होते हैं। जैसे— कल तक यहाँ पेड़ था, अब यहाँ इमारत बनने लगी?
- अपने साथियों की भाषा, उनके विचार, व्यवहार, खान-पान, पहनावा संबंधी जिज्ञासा को कहकर और लिखकर व्यक्त करते हैं।
- हस्तकला, वास्तुकला, खेतीबाड़ी के प्रति अपनी रुचि व्यक्त करते हैं तथा इनमें प्रयुक्त होने वाली भाषा को जानने की उत्सुकता रखते हैं।
- जाति, धर्म, रीति-रिवाज़, जेंडर आदि मुद्दों पर प्रश्न करते हैं।
- अपने परिवेश की समस्याओं पर प्रश्न तथा साथियों से बातचीत/चर्चा करते हैं।
- सभी विद्यार्थी अपनी भाषाओं की संरचना से हिंदी की समानता और अंतर को समझते हैं।

कक्षा 10

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
सभी विद्यार्थियों को समझते हुए सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने और परिवेशीय सजगता को ध्यान में रखते हुए व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिए जाएँ ताकि— • संगीत लोक-कलाओं, फ़िल्म, खेल आदि की भाषा पर पाठ पढ़ने या कार्यक्रम के दौरान गौर करने/सुनने के बाद संबंधित गतिविधियाँ कक्षा में हों। विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए कि वे आस-पास की ध्वनियों और भाषा को ध्यान से सुनें और समझें। • उन्हें इस बात के अवसर मिलें कि वे रेडियो और टेलीविज़न पर खेल, फ़िल्म, संगीत आदि से संबंधित कार्यक्रम देखें और उनकी भाषा, लय, संचार-प्रभाविता आदि पर चर्चा करें। • रेडियो और टेलीविज़न पर राष्ट्रीय, सामाजिक चर्चाओं को सुनने/देखने और सुनने/सुनाने तथा उन पर टिप्पणी करने के अवसर हों। • अपने आस-पास के लोगों की ज़रूरतों को जानने के लिए उनसे साक्षात्कार और बातचीत के अवसर सुलभ हों, ऐसी गतिविधियाँ पाठ्यक्रम का हिस्सा हों। • हिंदी के साथ-साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने-लिखने (ब्रेल तथा अन्य संकेत भाषा में भी) और उन पर बातचीत की आज़ादी हो। • अपने अनुभवों को स्वतंत्र ढंग से स्वयं की भाषा में लिखने के अवसर हों। • अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों। • अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने की स्वतंत्रता हो। • सक्रिय और जागरूक बनाने वाली रचनाएँ, अखबार, पत्रिकाएँ, फ़िल्म और अन्य दृश्य-श्रव्य (श्रव्य-दृश्य) सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने और लिखकर अभिव्यक्त करने संबंधी गतिविधियाँ हों। • कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों, जैसे—अभिनय, भूमिका निर्वाह (रोल-प्ले), कविता पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों तथा उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट (पटकथा) लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर हों।	**विद्यार्थी —** • अपने परिवेशगत अनुभवों पर अपनी स्वतंत्र और स्पष्ट राय मौखिक एवं लिखित रूप में व्यक्त करते हैं। जैसे—मुसकान आजकल चुप क्यों रहती है? मुसकान को स्कूल में हम लाएँगे। • अपने आस-पास और स्कूली साथियों की ज़रूरतों को अपनी भाषा में अभिव्यक्त करते हैं। जैसे— भाषण या वाद विवाद में इन पर चर्चा करते हैं। • आँखों से न देख सकने वाले साथी की ज़रूरत की पाठ्यसामग्री को उपलब्ध कराने के संबंध में पुस्तकालयाध्यक्ष से बोलकर और लिखकर निवेदन करते हैं। • न बोल सकने वाले साथी की बात को समझकर अपने शब्दों में बताते हैं। • नई रचनाएँ पढ़कर उन पर परिवार एवं साथियों से बातचीत करते हैं। • रेडियो, टी.वी. या पत्र-पत्रिकाओं व अन्य श्रव्य-दृश्य संचार माध्यमों से प्रसारित, प्रकाशित रूप को कथा साहित्य एवं रचनाओं पर मौखिक एवं लिखित टिप्पणी/विश्लेषण करते हैं। पत्रिका पर प्रसारित/प्रकाशित विभिन्न पुस्तकों की समीक्षा पर अपनी टिप्पणी देते हुए विश्लेषण करते हैं। • अपने अनुभवों एवं कल्पनाओं को सृजनात्मक ढंग से लिखते हैं। जैसे—कोई यात्रा वर्णन, संस्मरण लिखना। • कविता या कहानी की पुनर्रचना कर पाते हैं। जैसे— किसी चर्चित कविता में कुछ पंक्तियाँ जोड़कर नई रचना बनाते हैं। • औपचारिक पत्र, जैसे—प्रधानाचार्य, संपादक को अपने आस-पास की समस्याओं/मुद्दों को ध्यान में रखकर पत्र लिखते हैं। • रोज़मर्रा के जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति-विशेष में भाषा का काल्पनिक और सृजनात्मक प्रयोग करते हुए लिखते हैं। जैसे—दिन में रात, बिना बोले एक दिन, बिना आँखों के एक दिन आदि।

- अपने माहौल और समाज के बारे में स्कूल तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपनी राय देने के अवसर हों।
- कक्षा में भाषा-साहित्य की विविध छवियों/विधाओं के अंतरसंबंधों को समझते हुए उनके परिवर्तनशील स्वरूप पर चर्चा हो, जैसे—आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, कविता, कहानी, निबंध आदि।
- भाषा-साहित्य के सामाजिक-सांस्कृतिक-सौंदर्यात्मक पक्षों पर चर्चा/विश्लेषण करने के अवसर हों।
- संवेदनशील मुद्दों पर आलोचनात्मक विचार विमर्श के अवसर हों, जैसे— जाति, धर्म, रीति-रिवाज़, जेंडर आदि।
- कृषि, लोक-कलाओं, हस्त-कलाओं, लघु-उद्योगों को देखने और जानने के अवसर हों और उनसे संबंधित शब्दावली को जानने और उनके उपयोग के अवसर हों।
- कहानी, कविता, निबंध आदि विधाओ में व्याकरण के विविध प्रयोगों पर चर्चा के अवसर हों।
- विद्यार्थी को अपनी विभिन्न भाषाओं के व्याकरण से तुलना/समानता देखने के अवसर हों।
- रचनात्मक लेखन, पत्र-लेखन, टिप्पणी, अनुच्छेद—गद्य-पद्य के सभी रूपों में, निबंध, यात्रा वृतांत आदि लिखने के अवसर हों।
- उपलब्ध सामग्री एवं भाषा में व्याकरण के मौलिक प्रयोग की चर्चा एवं विश्लेषण के अवसर हों।
- दैनिक जीवन मे भाषा के उपयोग के विविध प्रकार एवं परिवेशगत/अनुभव-आधारित-रचनात्मक लेखन के अवसर उपलब्ध हों।

- पाठ्यपुस्तकों में शामिल रचनाओं के अतिरिक्त अन्य कविता, कहानी, एकांकी को पढ़ते-लिखते और मंचन करते हैं।
- भाषा-साहित्य की बारीकियों पर चर्चा करते हैं, जैसे—विशिष्ट शब्द-भंडार, वाक्य-संरचना, शैली के प्रयोगिक प्रयोग एवं संरचना आदि।
- विविध साहित्यिक विधाओं के अंतर को समझते हुए उनके स्वरूप का विश्लेषण निरूपण करते हैं।
- विभिन्न साहित्यिक विधाओं को पढ़ते हुए व्याकरणिक संरचनाओं पर चर्चा/टिप्पणी करते हैं।
- प्राकृतिक एवं सामाजिक मुद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बोलकर/लिखकर व्यक्त करते हैं।
- फिल्म एवं विज्ञापनों को देखकर उनकी समीक्षा लिखते हुए, दृश्यमाध्यम की भाषा का प्रयोग करते हैं।
- परिवेशगत भाषा प्रयोगों पर प्रश्न करते हैं। जैसे—रेलवे स्टेशन/एयरपोर्ट/बस स्टैंड, ट्रक, ऑटो रिक्शा पर लिखी कई भाषाओं में एक ही तरह की बातों पर ध्यान देंगे।
- अपने परिवेश को बेहतर बनाने की कोशिश में सृजनात्मक लेखन करते हैं। जैसे—क्या-क्या रिसाइकलिंग कर सकते हैं और पेड़ों को कैसे बचाएँ।
- हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी के प्रति अपना रुझान व्यक्त करते हैं तथा इनमें प्रयुक्त कलात्मक संदर्भों/भाषिक प्रयोगों को अपनी भाषा में जोड़कर बोलते-लिखते हैं।

समावेशी शिक्षण व्यवस्था के लिए कुछ सुझाव

कक्षा में सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या समान रहती है एवं कक्षा-गतिविधियों में सभी बच्चों की प्रतिभागिता होनी चाहिए। विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या में कई बार रूपान्तरों की आवश्यकता होती है। दिए गए सीखने के प्रतिफल समावेशी शिक्षण व्यवस्था के लिए हैं, परंतु कक्षा में ऐसे भी बच्चे होते हैं, जिनकी कुछ विशेष आवश्यकताएँ होती हैं, जैसे— दृष्टि-बाधित, श्रव्य-बाधित इत्यादि। उन्हें अतिरिक्त सहयोग की आवश्यकता होती है। उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित हैं—

- अध्यापक द्वारा विभिन्न प्रारूपों (जैसे— पत्र लेखन, आवेदन आदि) को मौखिक रूप से समझाया जा सकता है।
- विद्यार्थियों को बोलकर पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
- अध्यापक बातचीत के माध्यम से कक्षा में संप्रेषण कौशल को बढ़ा सकते हैं।
- नए शब्दों की जानकारी ब्रेल लिपि में अर्थ सहित दी जानी चाहिए।
- दैनिक गतिविधियों का मौखिक अर्थपूर्ण भाषिक अभ्यास।
- शब्दों का विस्तृत उच्चारणगत हो, जैसे— मिनट, विशाल, समुद्र, छोटे जीव तथा कीट इत्यादि।
- प्रश्नों का निर्माण करना और बच्चों को उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना। साथ ही बच्चों को भी प्रश्न-निर्माण करने को कहना और स्वयं उनका उत्तर तलाश करने के लिए कहना।
- उच्चारण सुधारने के लिए ऑडियो सामग्री का प्रयोग और कहानी सुनाना। अलग-अलग तरह की आवाज़ों की रिकॉर्डिंग करके, जैसे— झरना, हवा, लहरें, तूफ़ान, जानवर और परिवहन, ताकि उनके माध्यम से संकल्पना/धारणा/विचार को समझाया जा सके।
- विद्यार्थियों को एक – दूसरे से बातचीत के लिए प्रेरित करना।
- अभिनय, नाटक और भूमिका-निर्वाह (रोल-प्ले) का प्रयोग करने के लिए प्रेरणा देना।
- पढ़ाए जाने वाले विषय पर दृश्य-शब्दकोश की शीट तैयार की जाए, जैसे— शब्दों को चित्रों के माध्यम से दिखाया/बताया जाए।
- बोर्ड पर नए शब्दों को लिखना। यदि उपलब्ध हो तो शब्दकोश के शब्दों को चित्र के माध्यम से प्रयोग किया जाए।
- नए शब्दों को बच्चों के रोज़मर्रा के जीवन में इस्तेमाल करना और विभिन्न प्रसंगों में उनका प्रयोग करना।
- शीर्षक और विवरण के साथ दृश्यात्मक तरीके से कक्षा में शब्दों का प्रयोग करना।
- स्पष्ट रूप से समझाने के लिए फुटनोट को उदाहरण के साथ लिखना।

- संप्रेषण के विभिन्न तरीकों (जैसे—मौखिक एवं अमौखिक ग्राफ़िक्स, कार्टून्स (बोलते हुए गुब्बारे), चित्रों, संकेतों, ठोस वस्तुएँ एवं उदाहरण) का प्रयोग करना।
- लिखित सामग्री को छोटे-छोटे एवं सरल वाक्यों में तोड़ना, संक्षिप्त करना तथा लेखन को व्यवस्थित करना।
- बच्चों को इस योग्य बनाना कि वे रोज़मर्रा की घटनाओं को साधारण ढंग से डायरी, वार्तालाप, जर्नल, पत्रिका इत्यादि के रूप में लिख सकें।
- वाक्यों की बनावट पर आधारित अभ्यासों को बार-बार देना, ताकि बच्चा शब्दों एवं वाक्यों के प्रयोग को ठीक ढंग से सीख सके। चित्रों/समाचारों/समसामयिक घटनाओं से उदाहरणों का प्रयोग करें।
- बच्चों के स्तर के अनुसार उन्हें पाठ्य-सामग्री तथा संसाधन प्रदान करना।
- पाठ में आए मुख्य शब्दों पर आधारित तरह-तरह के अनुभवों को देना।
- कलर कोडिंग *(colour coding)* प्रयोग करना (जैसे—स्वर एवं व्यंजन के लिए अलग-अलग रंगों का प्रयोग), कांसेप्ट मैप *(concept map)* तैयार करना।
- प्रस्तुतिकरण के लिए विभिन्न शैली एवं तरीकों, जैसे— दृश्य, श्रव्य, प्रायोगिक शिक्षण इत्यादि का प्रयोग।
- अनुच्छेदों को सरल बनाने के लिए उनकी जटिलता को कम किया जाए।
- सामग्री को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए भिन्न-भिन्न विचारों, नए शब्दों के प्रयोग, कार्डस, हाथ की कठपुतली, वास्तविक जीवन के अनुभवों, कहानी प्रस्तुतिकरण, वास्तविक वस्तु एवं पूरक सामग्री का प्रयोग किया जा सकता है।
- अच्छी समझ के लिए ज़रूरी है कि विषय से संबंधित पृष्ठभूमि के बारे में पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुए नई सूचना दी जाए।
- कविताओं का पठन, समुचित भावाभिव्यक्ति/अभिनय/गायन के साथ किया जाए।
- पाठों के परिचय एवं परीक्षण खंड अथवा आकलन में विभिन्न समूहों के लिए विभिन्न प्रकार के प्रश्नों की रचना की जा सकती है।
- पठन-कार्य को अच्छा बनाने के लिए दो-दो बच्चों के समूह द्वारा पाठ्यसामग्री को प्रस्तुत करवाया जाए।
- कठिन शब्दों के लिए शब्दों के अर्थ या पर्यायवाची, उन शब्दों के साथ ही कोष्ठक में लिखे जाएँ। जिन शब्दों की व्याख्या ज़रूरी हो, उन्हें व्याख्यायित किया जाए तथा सारांश को रेखांकित किया जाए।

सीखने के प्रतिफल— कुछ महत्वपूर्ण बिंदु

- सीखने के प्रतिफल सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान शिक्षकों तथा बच्चों को सिखाने में मदद करने वाले सभी लोगों की सुविधा के लिए विकसित किए गए हैं।
- माध्यमिक स्तर (9–10) पर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया और माहौल में विशेष अंतर नहीं किया गया है। यद्यपि भाषा सीखने-सिखाने के विकासात्मक स्तर में अंतर हो सकता है।
- भाषा सीखने के प्रतिफलों को ठीक ढंग से उपयोग करने के लिए, दस्तावेज़ में प्रारंभिक पृष्ठभूमि दी गई है। इसे पढ़ें, यह बच्चों की प्रगति को सही ढंग से समझने में मदद करेगी।
- इसमें *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005* के आधार पर विकसित पाठ्यक्रम में नवीं और दसवीं कक्षाओं के लिए हिंदी शिक्षण के उद्देश्यों को दृष्टि में रखते हुए पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ दी गई हैं।
- इन पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाओं को विद्यार्थी तभी हासिल कर सकता है, जब सीखने के तरीके और कक्षा में अनुकूल माहौल हो।
- यद्यपि हमारी कोशिश यही रही है कि कक्षावार प्रतिफलों को दिया जाए, लेकिन भाषा की कक्षा में सीखने के विभिन्न चरणों को देखते हुए इस प्रकार का बारीक अंतर कर पाना मुश्किल हो जाता है।
- सीखने के प्रतिफल बच्चे के मनोवैज्ञानिक धरातल को ध्यान में रखते हुए, सीखने की प्रक्रिया के सभी अधिगमानुकूल तथ्यों व आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किए गए हैं।
- ये प्रतिफल सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान सतत और समग्र आकलन में भी आपकी मदद करेंगे, क्योंकि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान ही बच्चे को लगातार फ़ीडबैक (प्रतिपुष्टि) भी मिलता जाएगा।
- इन प्रतिफलों की अच्छी समझ बनाने के लिए पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम को पढ़ना-समझना बेहद ज़रूरी है।
- ये प्रतिफल विद्यार्थी की योग्यता, कौशल, मूल्य, दृष्टिकोण तथा उसकी व्यक्तिगत और सामाजिक विशेषताओं से जुड़े हुए हैं। आप देखेंगे कि विद्यार्थी की आयु, स्तर और परिवेश की भिन्नताओं के अनुसार प्रतिफलों के सिद्धांत परिणाम में भी बदलाव आता है।
- समावेशी कक्षा को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम की अपेक्षाओं, सीखने के तरीके और माहौल तथा प्रतिफलों के विकास में सभी तरह के बच्चों को ध्यान में रखा गया है।
- अलग-अलग शिक्षार्थी-समूहों एवं भाषायी परिवेश के अनुसार उल्लिखित एक ही प्रतिफल का अलग-अलग स्तर संभव है, जैसे— लिखने-पढ़ने या राय व्यक्त करने की दक्षता के अनुसार संबंधित प्रतिफलों का विविध स्तर हो सकता है।
- इस दस्तावेज़ में चिह्नित किए गए प्रतिफलों के अतिरिक्त-प्रतिफलों की ओर भी अध्यापकों का ध्यान जाना चाहिए।

Learning Outcomes for the English Language

Introduction

The Learning Outcomes for Classes IX and X are a continuation of the Learning Outcomes for the Elementary Stage. As we know the process of learning progresses in a continuum. The content and teaching-learning strategies vary in terms of complexity and variety as learners enter the secondary stage of education. The focus from familiar and concrete contexts shifts to unfamiliar and abstract contexts for developing the language skills. Learning outcomes cannot be achieved in isolation but are interconnected with the process of learning. The learning outcomes, for example, of reading skills at primary stage can be differentiated from the upper primary and secondary stages but these should be taken as developmental stages of enhancing language skills.

The process of teaching and learning requires a dynamic framework of knowledge and an understanding of cultural, social, and linguistic make up of the learners. Hence the process is neither static nor prescriptive rather it demands flexibility in pedagogical processes. It calls for attention that linguistic and cultural diversity should be used as a resource.

Language permeates all domains of learning. Therefore, strengthening the skills of one language positively supports and influences the learning of second or third language and other subject areas as well. Hence the content should be drawn from other domains of learning.

Language is linked to the thinking process and its manifestation in the forms of speech and writing through exposure to the variety of languages used. Learners assimilate new concepts largely through language. Thus learners while expressing their interpretations and the constructed meanings learn both the concepts and develop understanding of the ways language is used. This requires that the school should provide an environment in which learners are encouraged to explore concepts, analyse and organise information, solve problems, provide solutions, and express their personal ideas. The process should stimulate mutual involvement between teacher and learners.

There is exposure to the English language through ICT, print, and other media as well. Its popularity and demand has made it one of the relevant languages in our context. In this scenario, it is recommended that English should be taught and learnt along with Indian languages. Learning theories suggest that multilingualism should be explored as resource for

teaching and learning of English. In other words learners' own languages should be used as an instrument (not for translation) for learning English. This will have added advantage of bringing into classroom many languages which otherwise might become extinct. Efforts should be made to strengthen learners' own languages so that the skills acquired in their own language are passed on to learning English.

Learning outcomes (LOs) define what learners are expected to know and how to achieve the curricular expectations following the pedagogical processes. The objective of developing learning outcomes is to articulate the fundamentals of language teaching and learning in terms of pedagogy, materials, and assessment. Great care has been taken to capture and encompass all the possible and expected outcomes. However, there is no exhaustive list. One may encounter situations and may find materials and resources which would lead to some achievements beyond what is being outlined. In fact the learning outcomes will facilitate in improving teaching methods and assessment practices in English language learning. The idea of inculcating values among learners is integrated in pedagogical processes.

Assessment is an integral part of learning any language. The practice of continuous comprehensive assessment (CCE) is integrated with pedagogical process. The tools of assessment are meant to promote learning by providing meaningful inputs to the learners. Parents and the community are considered important participants in this process. Hence, they should be aware of the language learning goals and the achievements of their children. Achieving learning outcomes may be looked at as one of the several purposes of CCE.

Learning Outcomes in English address the issues of diversity in language, culture, and multifaceted abilities of learners. In order to provide equal opportunities of learning to learners with special education needs, Braille or other assistive devices should be made available, while for writing, learners should have support of the scribe, etc.

Curricular Expectations

At this stage learners are expected to:

- develop an understanding of what they hear in formal and informal settings.
- develop an ability to speak fluently and accurately in a variety of situations meaningfully.
- understand the verbal and non-verbal clues used by the speaker.
- develop an ability to read with comprehension and not merely decode.

- develop an ability to construct meaning by drawing inferences and relating the texts with previous knowledge.
- develop the ability to express their thoughts effortlessly, confidently and in an organised manner.
- write a coherent piece undergoing various stages and processes of writing.
- develop imagination, creativity and aesthetic sensibility, and appreciation.
- understand the overarching values embedded in the Indian constitution like equality, social justice, equity, scientific temper; imbibe values and apply.
- respond to contemporary social concerns like violence against women, protection of environment, etc., think critically about various issues and concerns.
- use language as a skill for real life purposes.
- attain a level of proficiency in English language to meet the workplace requirements.
- recognise and accept diversity in terms of language and culture.
- be sensitive to people in difficult circumstances, children with special needs, needs of elderly people, etc.
- realise the uniqueness of Indian culture, heritage and its contribution to world knowledge.
- develop global perspective on various issues through literature, ICT, media, etc.
- develop multilingual competence through using multilingualism as a strategy for learning of languages and subjects.
- develop grammatical competencies moving from procedural knowledge (from use or meaning) to declarative knowledge (form).

Class IX

Suggested Pedagogical Processes	Learning Outcomes
The learners may be provided opportunities individually or in groups and encouraged to— • comprehend audio/video scripts, read aloud texts and answer comprehension and inferential questions by listening. • use English news, films, songs, dramas, role-play, talks on internet, etc., as a resource to develop listening comprehension and understanding of the use of tone/intonation/stress, etc., in speech. • meet people and discuss on variety of issues, or listen to record discussions with people from different professions through face to face or electronic media. • participate in inter and intra school activities like school exhibitions, annual day celebration, debate competitions, discussions, quiz competitions and sports events. • make announcements during school functions, take interviews of people or personalities by framing questions, introduce a speaker; develop news items and present in class or school assembly. • organise and participate in discussions, present viewpoints or arguments, express contrasts with logic and reasoning, in the process develop problem solving and reasoning ability; and critical thinking. • recite poems with proper stress and intonation. • use audio-video or text materials for writing short skits, role plays, street plays and dramatise to communicate messages. • refer to dictionary, magazines and periodicals, thesaurus, encyclopedia, electronic media, visit library and consult various resources for improving English language proficiency.	**The learner—** • listens to announcements, instructions, read aloud texts, audio and videos for information, gist and details; responds by answering questions accordingly. • listens to and discusses literary/non-literary inputs in varied contexts to infer, interpret, and appreciate. • communicates thoughts, ideas, views and opinions verbally and non-verbally. • speaks fluently with proper pronunciation, intonation and pause, using appropriate grammar. • listens to and speaks on a variety of verbal inputs, *viz.* debate, speech, group discussion, power point presentation, radio programme, interview, mock parliament, etc. • reads aloud and recites poems/prose with proper stress, pause, tone, and intonation. • reads with comprehension the given text/materials employing strategies like skimming, scanning, predicting, previewing, reviewing, inferring, and summarising. • reads silently with comprehension and interprets layers of meaning. • writes short answers, paragraphs, reports using appropriate vocabulary and grammar on a given theme. • writes letters both formal and informal, invitations, advertisements, notices, slogans, messages, and e-mails. • writes short dialogues and participates in role plays, skits, street plays, etc., for the promotion of social causes like *Beti Bachao Beti Padhao*, *Swachh Bharat Abhiyaan*, human trafficking, conservation of environment, child labour, drug abuse, promotion of literacy, etc. • uses appropriate punctuation marks and correct spelling of words while taking down dictation.

- ask questions on the texts read in the class and during discussions; be patient and respectful and take turns while listening to others and expressing their views.
- share experiences of language used outside the classroom as in the market, post office, etc., and share their experiences such as journeys, visits, hobbies, etc.
- understand different registers/use of appropriate words through a variety of listening and speaking activities on topics such as sports, cookery, music, gardening, riding; use these registers in their day-to-day life and use them wherever necessary.
- read and narrate stories, describe incidents with fluency and in sequence.
- take down dictation by listening, attentively, using appropriate punctuation marks.
- to improve their listening and reading skills by taking down notes from passages read aloud, news on TV, during discussions in the class; understand the processes on how to make/take notes after reading a passage/article, etc., and then summarise.
- use map to understand directions, space, and distance; look at graphs, charts, and tables to know how data has been given and interpreted.
- connect the issues in the texts they read to the world outside and think on possible solutions.
- design advertisements and invitations for celebrations, prepare weather reports, news items and discussions by using audio-video support.
- jot down ideas, develop an outline, write the first draft, edit, revise, and then finalise (for writing short and long passages/paragraphs, notices, and reports, using these processes).
- utilise the given visual input and graphs with the clues provided and write passages/paragraphs.
- takes notes and makes notes while listening to TV news, discussions, speech, reading aloud/silent reading of texts, etc., and summarises.
- reads with understanding information in his environment outside the schools as in hoardings, advertisements, product labels, visiting market place, etc.
- organises and structures thoughts, presents information and opinions in a variety of oral and written forms for different audiences and purposes.
- interprets map, graph, table to speak or write a paragraph based on interpretation.
- edits passages with appropriate punctuation marks, grammar and correct spelling.
- uses grammar items in context, such as, reporting verbs, passive and tense, time and tense, subject-verb agreement, etc.
- uses words, phrases, idioms and word chunks for meaning-making in contexts.
- understands and elicits meanings of the words in different contexts, and by using dictionary, thesaurus, and digital facilities.
- reads literary texts for enjoyment/pleasure and compares, interprets and appreciates characters, themes, plots, and incidents and gives opinion.
- explains specific features of different literary genres for interpretation and literary appreciation.
- identifies and appreciates significant literary elements, such as, metaphor, imagery, symbol, simile, personification, onomatopoeia, intention or point of view, rhyme scheme, themes, titles, etc.
- writes short stories and composes poems on the given theme or on their own.
- exhibits in action and practice the values of honesty, cooperation, patriotism, and while speaking and writing on variety of topics.

- edit writings of self or peers using appropriate punctuation marks such as capital letters, comma, semicolon, inverted commas, grammar, and correct spelling.
- understand and learn to encode and decode texts of different genre through individual, pair, and group reading.
- understand the functions of grammar, the usages for accuracy in language (both spoken and written) by the processes of noticing and identifying them in use and arriving at the rules.
- familiarise with a variety of vocabulary associated with various themes using these in different contexts through various inputs like collocations, word webs, thematic vocabulary, and word puzzles.
- be acquainted with proverbs, phrases, idioms, and their usage.
- use creativity and imagination and connect the discourse with real life contexts while expressing themselves through speech and writing.
- imagine and describe characters and situations using prompts, flash cards, verbal clues, pictures, and create stories.
- be exposed to a variety of poems like lyric, ballad, ode, limerick, elegy, etc., and notice onomatopoeic sounds, symbols, simile, metaphors, alliteration, and personification, for appreciation.
- identify comparisons, allusions, poet's or writer's point of view, literary devices, etc.
- undertake group or individual project work of interdisciplinary nature on social, cultural, and common themes to work with language—collection, processing, analysing, interpreting of information, and then presenting orally and in writing.
- know and promote core values such as tolerance, appreciation of diversity and civic responsibility, patriotism through debates, discussions, reading
- uses bilingual or multilingual abilities to comprehend a text and participates in activities like translations and bilingual and multilingual discourses on various themes.
- uses Sign Language to communicate with fellow learners with hearing impairment in an inclusive set up.
- reads poems, stories, texts given in Braille; graphs and maps given in tactile/raised material; interprets, discusses, and writes with the help of a scribe.
- appreciates similarities and differences across languages in a multilingual classroom and society.
- recognises and appreciates cultural experiences and diversity in the text and makes oral and written presentations.

of biographies, stories of struggles, and episodes of ethics and morality. • follow the concept of directions on a given map of a locality, town, city, country; tactile or raised material for children with special needs. • read alternative material such as Braille texts, poems, cartoons, graphic presentations, audio tapes, video tapes, and audio visuals to speak on issues related to society. • get familiarised with Sign Language for using with learners with hearing impairment in an inclusive environment in the school. • use bilingual and multilingual ways to exchange ideas or disseminating information by taking the help of ICT, PPT, role play, street play, drama, written scripts, etc.	

Class X

Suggested Pedagogical Processes	Learning Outcomes
The learners may be provided opportunities individually or in groups and encouraged to— • participate in interactive tasks and activities. • take notes and respond accordingly, making use of appropriate vocabulary, and sense of audience while listening to people around. • engage themselves in conversation, dialogue, discussion and discourse in peer-peer mode, and with teacher on various themes. • participate in role play, short speech and skits; interview personalities, common people for the purpose of collecting views on certain relevant issues, during surveys, project works, etc. • give opinion about classroom transactions, peer feedback with clarity, and provide suggestions for improvement. • read alternative material such as Braille texts, poems, cartoons, graphic presentations, audio tapes, video tapes, and audio visuals to speak on issues related to society. • develop familiarity with workplace culture and language and terminology for different vocational skills like carpentry, mobile repairing, tailoring, etc. • volunteer in organising school functions, assembly, community activities and interactions; prepares schedules, reports, etc. • read literature from different countries, and appreciate the ideas, issues, and themes given there. • read texts independently, comprehend, and respond to or ask questions on the text. • read stories and literary texts—both fiction and non-fiction with understanding for pleasure and enjoyment; discuss on characters,	**The learner—** • listens to announcements, instructions, read-aloud texts, audio, videos for information, gist and details; responds by answering questions accordingly. • listens to and discusses literary / non-literary inputs in varied contexts to infer, interpret, and appreciate. • speaks with coherence and cohesion while participating in interactive tasks. • uses language appropriate to purposes and perspectives. • talks on key contemporary issues like social justice, environment, gender, etc., in speech and writing. • participates in bilingual or multilingual discourses on various themes. • reads, comprehends, and responds to complex texts independently. • reads stories and literary texts, both fiction and non-fiction, with understanding for pleasure and enjoyment and discusses about these. • appreciates nuances and shades of literary meanings, talks about literary devices like onomatopoeic sounds, symbols, metaphors, alliterations, comparisons, allusions and the poet's or the writer's point of view. • collects evidences and discusses in groups for reading autobiographies, history and science based literary texts. • writes paragraphs, narratives, etc., by planning revising, editing, rewriting, and finalising. • writes reports of functions in school, family, and community activities. • writes personal, official and business letters, articles, debates, paragraphs based on visual or verbal clues, textual inputs, etc. • evaluates content presented in print and in different genres/formats

issues, situations; and if there is a problem, work on the solutions.

- appreciate nuances and shades of literary meanings in a variety of poems like lyric, ballad, ode, limerick, elegy, etc., and the literary devices like onomatopoeic sounds, symbols, metaphors, alliteration, etc., understand comparisons, allusions, poet's or writer's point of view, etc.
- use subject, or contexts, and content related vocabulary to express their understanding of the texts and tasks.
- understand writing is a process-oriented skill which requires drafting, revising, editing for punctuation, grammatical accuracy, spelling, etc.
- understand the grammar in context, functions, and usages noting from examples and discover rules.
- write using symbols, tables, graphs, diagrams, etc.
- contribute in building safe and stress-free environment for learning.
- collect and make use of meaningful resources generated by the learners.
- make use of their experiences and relate with their learning.
- use visual aids, and locally developed learning materials to complement and supplement the textbook and supplementary reader.
- frame questions to assess their comprehension.
- promote core values such as tolerance, appreciation of diversity and civic responsibility through debate, discussion, etc.
- develop critical thinking on issues related to society, family, adolescence, etc. This will lead to develop their abilities for problem-solving, conflict resolution, and work collaboratively.
- use multilingualism and translation as a strategy and resource for understanding and learning and participating in classroom transactions.

and presents content using symbols, graphs, diagrams, etc.

- analyses and appreciates a point of view or cultural experience as reflected in the text; presents orally or in writing.
- draws references from books, newspapers, internet, etc., and interprets using analytical skills.
- speaks or writes on variety of themes.
- consults or refers to dictionary, periodicals, and books for academic and other purposes; and uses them in speech and writing.
- provides facts and background knowledge in areas such as science and social science and presents view points based on those facts.
- takes down dictation using appropriate punctuation marks and correct spelling of the words dictated.
- takes and makes notes while listening to TV news, discussions, speech, reading aloud or silent reading of texts, etc., and summarises.
- uses grammatical items appropriate to the context in speech and writing.
- uses grammatical items as cues for reading comprehension such as tense, reported speech, conjunctions, and punctuation.
- uses words according to the context and delineate it in speech and writing.
- uses formulaic and idiomatic expressions in speech and writing.
- makes use of collocations and idioms in speech and writing.
- identifies significant literary elements such as figurative language—metaphor, imagery, symbol, simile, intention or point of view, rhyme scheme, etc.
- uses the figurative meaning of words and phrases as given in the texts read.
- assesses one's own and peers' work based on developed rubrics.

• participate in interdisciplinary tasks, activities and projects. • connect and apply their learning to activities, routines, and functions at home and in the community. • maintain diary and journal for recording responses and reflections, develop rubrics with the help of the teacher for self-assessment. • work on the teacher and peer feedback and self-assessment to improve their performance. • understand the concept of directions on a given map of a locality, town, city, country, tactile or raised material for children with special needs. • get familiarised with Sign Language for using with learners with hearing impairment in an inclusive environment in the school.	• develops questions for collecting data for survey on relevant issues. • writes scripts and participates in role play, skit, street plays for the promotion of social issues like *Beti Bachao Beti Badhao*, *Swachh Bharat Abhiyaan*, conservation of environment, child labour, drug abuse, and promotion of literacy, etc. • uses bilingual or multilingual ways to exchange ideas or disseminating information with the help of ICT, PPT, role play, street play, drama, written scripts, etc. • recognises and appreciates cultural experiences given in the text in a written paragraph, or in narrating the situations and incidents in the class. • exhibits core values such as tolerance, appreciation of diversity and civic responsibility through debate, discussion, etc. • learns to use Sign Language to communicate and uses Sign Language with fellow learners with hearing impairment in an inclusive set up. • reads the poems, stories, texts given in Braille; graphs and maps given in tactile or raised material; interprets, discusses, and writes with the help of a scribe.

Suggested Pedagogical Processes in an Inclusive Setup

The curriculum of teaching-learning languages is same for all learners in the classroom. Hence, all learners get opportunities to actively participate in the teaching-learning process. There may be some students who have learning difficulties in language, visual-spatial or mixed processing problems. They may require additional teaching support and some adaptations in the curriculum.

There is variability amongst the CWSN and it requires strategies and approaches that will cater to the needs of all learners in an inclusive classroom. The concept of inclusive pedagogy provides a platform for learning and space to children with mental and physical challenges along with other children in the class. This also focuses on working collaboratively in pairs and groups.

By considering the specific requirements of children with special needs, few pedagogical processes for the teachers are suggested below:

- Use multiple modes of communication (verbal and non-verbal, graphics, cartoons, speech balloons), pictures, symbols, concrete objects and examples to assist in comprehension would help all children.
- Format (for writing letters, applications, etc.) can be verbally introduced by the teacher.
- New vocabulary introduced may be transcribed in Braille with meanings.
- Describe words like minute, huge, near and far away, sea and sky, small organisms and insects, etc., verbally with detailed information.
- Use audio tapes and storytelling for enhancing pronunciation. Different sounds through audio recordings, such as waterfall, wind, waves, thunder, sounds of animals and means of transport can be used to explain various concepts.
- Encourage all the students in the class to interact with each other and use acting, dramatisation, and role play.
- Prepare visual vocabulary sheet on the topics taught (displaying words with pictures).
- Make visual classroom displays with captions and explanations.
- Write footnotes along with examples for comprehension.
- Give repeated exercises on sentence construction so that the child can learn to use words and phrases correctly. Use examples from pictures, news, current events, scrapbook, etc.
- Provide or adapt reading material and resource material at appropriate reading level of the child.
- Illustrate ideas and new vocabulary and make content comprehensible and attractive through the use of cards, colour coding concept maps, hand puppets, use of real life experiences, dramatisation, enacting stories, real objects, and supplementary material.
- Make use of paired reading to promote fluency in reading.

اردو زبان کے آموزشی ماحصل
(Learning Outcomes for the Urdu Language)

تعارف

زبان ترسیل کا ایک اہم ذریعہ ہے۔اس کے ذریعے ہم ایک دوسرے کے خیالات، جذبات اور احساسات سے بھی واقف ہوتے ہیں۔اس لیے زبان کی چاروں مہارتیں سننا، بولنا، پڑھنا اور لکھنا ایک دوسرے سے باہم مربوط ہیں۔ بچے ہر چیز کو اپنے نقطۂ نظر سے دیکھتے اور سنتے ہیں اور اپنی نظر اور سمجھ کے مطابق بولتے اور لکھتے ہیں۔ یہ نقطۂ نظر ماحول اور سماج کے اندر ہی بنتا ہے۔ چنانچہ ماحول اور سماج میں بن رہی بچے کی سمجھ کو پروان چڑھانے کے لیے زبان کو آزاد رکھنے کی کوشش ہونی چاہیے۔مگر اس کے برعکس یہ ہو رہا ہے کہ جب بچے اسکول آتے ہیں تو گھر کی زبان اور اسکول کی زبان کے درمیان ایک کش مکش شروع ہو جاتی ہے جس سے طلبا ثانوی سطح پر بھی دوچار ہوتے ہیں۔ان کے پاس بہت سے سوالات ہوتے ہیں جن کا جواب وہ اپنے ماحول اور سماج میں ڈھونڈتے ہیں۔اگر ان سوالوں کے جواب انھیں اپنی زبان میں دینے کے مواقع فراہم کرائے جائیں تو یہ ان کی مدد ہوگی۔

ثانوی سطح پر طلبا کی زبان غور وفکر کرنے کی ایک ایسی بنیاد بن چکی ہوتی ہے جہاں زبان کے دائرے کو بڑھانے اور غور وفکر کی اہلیت کے ضروری وسائل مہیا کرانے کی ضرورت ہے۔اس سطح پر طلبا نہ صرف زبان کے حسن، جمالیاتی احساس، کہانی اور اخبار پڑھنے کی سمجھ، لفظوں کے مختلف مفاہیم اور لطافتوں کے درمیان فرق کرنا سیکھ جاتے ہیں بلکہ وہ ادب کی مختلف اصناف اور اظہار کے مختلف انداز سے بھی واقف ہو جاتے ہیں۔اس سطح پر طلبا کے مطالعے میں دنیا جہان کی خبریں، کھیل، فلم اور دیگر فنون کے ساتھ ساتھ اخبار، میگزین، رسالے اور مختلف قسم کی کتابیں بھی داخل ہو چکی ہوتی ہیں۔

اردو کو ادبی، تہذیبی اور روزمرہ زبان کی شکل میں اس طرح پروان چڑھانے کی ضرورت ہے کہ ثانوی سطح تک پہنچتے پہنچتے یہ طلبا کی پہچان، خود اعتمادی اور مباحثے کی زبان بن سکے۔اس کے علاوہ یہ کوشش بھی ہو کہ طلبا زبانی اظہار کے ساتھ ساتھ بہ تدریج تحریری اظہار پر بھی عبور حاصل کر سکیں۔

آج دنیا میں تقریباً ساٹھ فی صد لوگ ایک سے زیادہ زبانیں بولتے اور جانتے ہیں۔ذولسانیت اور کثیر لسانیت ہمارے معاشروں کی خاصیت ہے جو اردو کے حوالے سے بھی خاصی معروف ہے۔ہمیں یہ بھی یاد رکھنا چاہیے کہ ہم صرف دوسروں سے بات کرنے کے لیے نہیں بلکہ اپنے آپ سے بھی بات کرنے کے لیے زبان کا استعمال کرتے ہیں۔اصل میں یہ زبان کا سب سے اہم کام ہے۔ ہر انسان مختلف مقاصد کے لیے زبان کا استعمال کرتا ہے یہاں تک کہ مختلف صلاحیت کے حامل طلبا بھی ایک دوسرے سے رابطہ بنانے میں زبان کا استعمال کرتے ہیں۔

اردو ایک مخلوط زبان ہے۔ یہ ہندوستان کی جدید زبانوں میں سے ایک ہے اور پورے ملک میں سہ لسانی فارمولے کے تحت مادری، ثانوی اور تیسری زبان کی حیثیت سے پڑھائی جاتی ہے۔

زبان کی آموزش چوں کہ ایک مسلسل عمل ہے اس لیے ثانوی سطح پر آموزشی ماحصل کا جائزہ لیتے وقت ابتدائی اور اعلا ابتدائی سطحوں کے آموزشی ماحصل کو بھی سامنے رکھنا ہوگا۔ زبان کی جملہ مہارتوں کو مختلف مراحل میں تقسیم کر کے آموزشی ماحصل کی توقع عبث ہے۔ مواد (Content) کے اعتبار سے آموزش الگ الگ ہوسکتی ہے۔ ثانوی سطح تک جب تک زبان کا شعور بہ تدریج پختہ نہ ہو، صحیح آموزشی ماحصل برآمد کرنا مشکل ہے۔ لہٰذا ابتدائی اور اعلا ابتدائی سطحوں پر زبان سیکھنے کے جو مقاصد اور تقاضے ہیں، ثانوی سطح پر بھی ان کا اعادہ ضروری ہے۔

آٹھویں جماعت کے طلبا سے توقع کی جاتی ہے کہ وہ اردو زبان کے عملی پہلوؤں سے واقف ہو گئے ہوں گے اور اس کے موثر اظہار پر قدرت حاصل کر لی ہوگی۔ پڑھی اور سنی ہوئی باتوں کو زبانی اور تحریری طور پر اظہار کی صلاحیت بھی ان میں پیدا ہوگئی ہوگی۔ ثانوی جماعتوں میں ان سے توقع کی جاتی ہے کہ وہ نثر و نظم کے ادبی شہ پاروں کے ذریعے انسانی ذہن کی گہرائی و گیرائی، تفہیم اور تحسین کے شعور سے واقفیت حاصل کر لیں گے۔ زبان کے پیچیدہ مفاہیم کو سمجھنے اور اس کے موثر استعمال کے لیے حسب ضرورت قواعد کی باریکیوں سے بھی واقف ہوں گے۔ زبان کے تقریری، تحریری اور لسانی پہلوؤں پر خاطر خواہ توجہ دیں گے اور زبان کی ساخت کو سمجھتے ہوئے مناسب اسلوب اختیار کریں گے۔ ذخیرۂ الفاظ اور علم و ادب سے لطف اندوزی کے لیے آزادانہ طور پر پڑھنے کی استعداد میں اضافہ، ادب کی مختلف اصناف سے واقفیت، زبان، ادب اور تہذیب کے باہمی رشتے کا شعور، جمالیاتی احساس، تخلیقی اور فکری صلاحیت وغیرہ کا فروغ اس سطح پر اردو زبان و ادب کی تدریس کے اہم مقاصد ہیں۔

اس سطح پر زبان کے دائرے کو مزید وسیع کرنے کی ضرورت ہے تاکہ طلبا میں زبان کے مختلف پہلوؤں کا شعور پیدا ہو سکے اور اس کے موثر استعمال کے تئیں وہ حساس ہو سکیں۔ ثانوی سطح تک آتے آتے طلبا کا شعور پختہ ہو چکا ہوتا ہے۔ سننے، بولنے، پڑھنے اور لکھنے کی مہارتوں کے فروغ کے ساتھ ساتھ ان میں تنقیدی شعور بھی پیدا ہونے لگتا ہے۔ اب وہ زبان اور سماج کے رشتے کو بھی بخوبی سمجھتے اور اس کے بارے میں مختلف زاویوں سے سوچتے ہیں۔ ان کے سامنے زبان کو پرکھنے اور استعمال کرنے کی ایک وسیع دنیا ہے جو انھیں نہ صرف پرامن ماحول کے لیے آمادہ کرتی ہے بلکہ زندگی کو پرلطف بنانے اور جمالیاتی شعور کو بیدار کرنے کی بھی دعوت دیتی ہے۔ زندگی کے مختلف مراحل اور سرگرمیوں کے لیے ان کے سامنے زبان کی ایک کھلی اور آزاد فضا موجود ہے جو انھیں ایک بہتر شہری اور انسان بنانے میں یقیناً مددگار ہوگی۔

نصابی توقعات (Curricular Expectations)

- روانی کے ساتھ بے جھجک بولنا
- بلند خوانی اور خاموش مطالعے کی عادت کو فروغ دینا
- دوسروں کی باتوں کو غور اور صبر و تحمل سے سن کر سمجھنا
- مختلف قسم کی گفتگو، مباحثہ اور تقریر وغیرہ کو سن کر مطلب سمجھنا

- بولنے والے کی بات کو تنقیدی نقطۂ نظر سے سننا اور سمجھنا
- سیاق وسباق کے مطابق الفاظ کے مختلف مفاہیم اور مطالب کے فرق کو سمجھنا
- سبق میں بیان کردہ حقائق اور خیالات کو سمجھنا
- کسی عبارت، کہانی یا نظم کا عنوان تجویز کرنا
- نامکمل کہانی کو مکمل کرنا
- موضوع سے متعلق مربوط اور صحیح جملے بولنا
- کسی موضوع پر آزادانہ اظہارِ خیال کی صلاحیت پیدا کرنا
- مرکزی خیال اور طرزِ تحریر کی خوبیاں بیان کرنا
- اسباق سے متعلق اپنی رائے دینا اور اسلوب بیان کی خصوصیات کو سمجھنا
- معیاری املا کی صحت کا شعور پیدا کرنا
- رموزِ اوقاف کا صحیح استعمال کرنا
- موقع ومحل کی مناسبت سے زبان کا استعمال کرنا
- مشاہدے کا بیان اور اس کے بارے میں اپنی رائے کا اظہار کرنا
- نظم ونثر کے اقتباسات کی تشریح کرنا
- موضوع کے اعتبار سے خیالات کو ترتیب دینا اور پیراگراف میں تقسیم کر کے لکھنا
- سبق کا خلاصہ لکھنا
- جماعت کے معیار کے مطابق دیے گئے موضوع پر بیانیہ یا خیالی مضامین لکھنا
- مختلف ذرائع سے ضروری مواد جمع کر کے کسی موضوع پر مضمون لکھنا
- کسی دیے گئے موضوع یا کہی ہوئی بات پر نوٹ لکھنا اور اس کی مخالفت یا موافقت کا جواز فراہم کرنا
- اپنے تجربات کو آزادانہ طور پر لکھنا
- مجلسی آداب کے مطابق گفتگو کرنا، خوش آمدید کہنا، تعریف کرنا، شکریہ ادا کرنا، مبارک باد دینا، یاددہانی کرانا وغیرہ
- فہرستِ مضامین یا اشاریہ دیکھ کر مطلوبہ مواد تلاش کرنا
- فیچر، رپورٹنگ، درخواست، شکریے کا خط، دعوت نامے، مبارک باد کا خط، معلوماتی اور کاروباری خط لکھنا اور مختلف فارموں کو پُر کرنا وغیرہ۔
- پڑھی ہوئی تحریر کو اپنے لفظوں میں بیان کرنا
- حوالے کی کتابوں اور لغت کا استعمال کرنا

نویں جماعت

مجوزہ تدریسی عمل (Suggested Pedagogical Processes)	آموزشی ماحصل (Learning Outcomes)
طلبا کو انفرادی اور مجموعی طور پر حوصلہ افزائی کرتے ہوئے مواقع دیے جائیں • جماعت میں بولنے اور اسکول میں مباحثے کی سرگرمیاں کرائی جائیں جیسے اسکول کی نمائش، سالانہ جلسے کی تقریبات، مقابلہ جاتی بحث ومباحثہ اور نظم خوانی وغیرہ۔ • سماجی موضوعات سے متعلق فلم اور ڈرامے وغیرہ دکھائے جائیں اور ان پر مباحثہ کرایا جائے۔ • مختلف سمعی اور بصری وسائل جیسے ریڈیو، ٹی وی یا ٹیپ ریکارڈ کی مدد سے طلبا کو اعلانات، انٹرویو، موسم کی رپورٹ اور اشتہارات وغیرہ پر اظہار خیال کے مواقع مہیا کرائے جائیں۔ • زبان کے مختلف رجسٹر مثلاً کھیل، موسیقی، ماحولیات وغیرہ کو سمجھانے کے لیے گفتگو کے مواقع فراہم کیے جائیں۔ طلبا ان رجسٹر کو سراہیں اور روزمرہ زندگی میں ان کا بہ خوبی استعمال کرنے کے لیے ان کی حوصلہ افزائی کی جائے۔ • طلبا کو متن جیسے انشائیہ، کہانی، نظم، مضمون اور سوانح پر مبنی سوالات پوچھنے کے مواقع دیے جائیں تاکہ وہ انھیں اپنی اصل زندگی سے جوڑ سکیں۔ • طلبا کو اپنے خیالات اور نقطۂ نظر کو بھی کمرۂ جماعت میں پڑھنے کے دوران اور بے جھجک بتانے کے لیے ان کی حوصلہ افزائی کی جائے۔ • طلبا میں تنقیدی زاویۂ نگاہ کو فروغ دینے کے لیے مختلف سرگرمیاں کلاس روم میں کرائی جائیں۔ • طلبا میں تقریر، مباحثہ اور سوالات کرنے اور نوٹس لکھنے کے لیے ماحول مہیا کرایا جائے۔ • جماعت میں طلبا کو کہانی، اشعار اور نظمیں پڑھنے کے لیے پوری آزادی اور موقع فراہم کیا جائے۔ جیسے مشاعرہ، بیت بازی، اداکاری اور مائک پر بولنا وغیرہ۔	**آموزگار—** • جماعت میں کہی جا رہی بات چیت کو صبر وتحمل سے سنتے ہیں۔ کہانی اور نظم وغیرہ کو سمجھ کر اپنا خیال پیش کرتے ہیں۔ • پڑھی ہوئی تحریر یا سنی ہوئی گفتگو پر بے جھجک اظہار کرتے ہیں۔ سماج اور ماحول سے متعلق مسئلوں کو سمجھ کر اپنی رائے دیتے ہیں۔ • طلبا کسی کہی یا سنی ہوئی کہانی یا کسی نظم یا غزل کے شعر کو سن کر اس کے متعلق موثر انداز میں اپنی رائے دیتے ہیں۔ • طلبا مختلف موضوعات جیسے فٹ بال، کرکٹ اور ہاکی کے کھیلوں یا کسی فلم، ڈرامے سے متعلق اظہار خیال کرتے ہیں۔۔ • طلبا کہانی، نظم، سوانح اور مضمون سے متعلق سوالات پوچھتے ہیں اور ان کو اپنی روزمرہ زندگی سے مربوط کرتے ہیں۔ جیسے کہانی حج اکبر، نذیر احمد کی کہانی کچھ میری اور کچھ ان کی زبانی، سوانح، انفارمیشن ٹکنالوجی وغیرہ۔ • طلبا نظم کے مرکزی خیال اور کہانی کے کرداروں یا مضامین میں پیش کی گئی معلومات سے متعلق خود اعتمادی کے ساتھ اپنے خیالات اور اپنے تنقیدی نقطۂ نظر کا اظہار کرتے ہیں۔ • طلبا بحث ومباحثے، کوئز اور غزل، نظم خوانی یا مختصر کہانی کی سرگرمیوں میں تنقیدی زاویۂ نگاہ کو پیش کرتے ہیں اور ان پر تحریری اظہار بھی کرتے ہیں۔ • طلبا روزمرہ زندگی سے متعلق سرگرمیوں کو بے باکی سے پیش کرتے ہیں۔ شہری اور دیہاتی زندگی کے فرق کو محسوس کرتے ہیں اور ان سے متعلق سوالات کرتے ہیں اور جینے کے لیے کام کی اہمیت کو سمجھتے ہوئے ان پر زبانی اور تحریری اظہارِ خیال کرتے ہیں۔ جیسے مضمون دیہات کی زندگی اور جینے کا سلیقہ۔ • سبھی طلبا مباحثے اور تقریر میں حصہ لیتے ہیں اور سوالات بھی پوچھتے ہیں۔

- سننے اور بولنے کی صلاحیت سے محروم طلبا کی حوصلہ افزائی کی جائے اور ان کے لیے تصاویر پر مبنی چارٹ یا ماڈل دکھائے جائیں تا کہ وہ طلبا بھی سیکھنے کے عمل میں شریک ہوسکیں۔
- وہ بچے جو دیکھ نہیں سکتے، متبادل (Alternate) مواد جیسے بریل، آڈیو ٹیپ، ویڈیو ٹیپ کا استعمال کرایا جائے تا کہ وہ بولنے کے لیے سرگرم ہوجائیں۔
- قواعد کو سیاق میں استعمال کرنے کے مواقع بھی دیے جائیں۔
- لوک کلاؤں، دست کاریوں (عوامی فنون) کو دیکھنے اور ان سے متعلق لفظیات کو جاننے اور ان کے استعمال کرنے کے مواقع فراہم کرائے جائیں۔
- طلبا کو کسی سفر، تقریب، واقعہ/منظر کے متعلق اپنے تجربات کو آزادانہ طور پر لکھنے کے مواقع فراہم کرائے جائیں۔
- طلبا میں وقت، کام، امید، یقین، آزادی اور انقلاب وغیرہ کی اہمیت اور قدر و قیمت کے احساسات کو فروغ دینے کے لیے آزادانہ ماحول فراہم کیا جائے۔

- طلبا غزل اور نظم کے اشعار کو موثر ڈھنگ سے ادا کرتے ہیں اور پڑھتے وقت روانی، لحن، لب ولہجہ اور تلفظ کا بھی خیال رکھتے ہیں۔
- ڈرامے میں مکالمے کی ادائیگی موثر طریقے سے کرتے ہیں۔ اس کے علاوہ مشاعرہ اور بیت بازی میں بھی حصہ لیتے ہیں۔
- مختلف صلاحیت کے حامل بچے (جو دیکھ اور سن نہیں سکتے) وہ بھی بول کر اور اشاروں سے گفتگو میں حصہ لیتے ہیں۔ مثلاً جو دیکھ نہیں سکتے وہ آڈیو کے ذریعے کہانی یا نظم یا ریڈیائی ڈرامے سن کر اس پر اپنی رائے کا اظہار کرتے ہیں۔
- جو دیکھ نہیں سکتے وہ بریل کے ذریعے لکھتے ہیں۔ جو سن نہیں سکتے وہ تصاویر اور ویڈیوز کے ذریعے اشاروں میں اپنی رائے کا اظہار کرتے ہیں۔
- طلبا قواعد کو سیاق میں استعمال کرتے ہیں جیسے اسم، ضمیر، فعل وغیرہ سمجھتے ہیں اور ان کی مثالیں اپنے سبق سے دیتے ہیں۔
- لوک کلاؤں اور دست کاریوں (عوامی فنون) کے بارے میں اپنی رائے کا اظہار کرتے ہیں جیسے یہ کافی محنت کا کام ہے۔ اسے بہت نفاست سے کیا گیا ہے۔ یہ گیت بہت اچھا ہے۔ وغیرہ
- طلبا اپنے تجربات کو موثر انداز میں لکھتے ہیں جیسے کوئی دل چسپ سفر، خوبصورت منظر، کھیل یا تماشے وغیرہ کا بیان۔
- طلبا کہانی، ڈراما، نظم، غزل وغیرہ کا مطالعہ کرتے ہیں مختلف موضوعات پر مضامین لکھتے ہیں۔ ڈراما اسٹیج کرتے ہیں۔ کہانی اور نظم کے ذریعے بھی اپنے احساسات کو اجاگر کرتے ہیں مثلاً گزرا ہوا زمانہ، جینے کا سلیقہ، سکھ کی تان، دعوتِ انقلاب اور امکانات وغیرہ۔

دسویں جماعت

مجوزہ تدریسی عمل (Suggested Pedagogical Processes)	آموزشی ماحصل (Learning Outcomes)
طلبا کو انفرادی اور مجموعی طور پر حوصلہ افزائی کرتے ہوئے مواقع دیے جائیں • مختلف ادیبوں اور شاعروں پر تیار کیے گئے کیسٹ کو بہ غور سننے سنانے اور ان پر گفتگو کرنے کے مواقع فراہم کرائے جائیں۔ • اشعار لکھنے، یاد کرنے اور اپنی تحریر یا گفتگو میں برمحل ان کا استعمال کرنے میں ان کی حوصلہ افزائی کی جائے۔ • نصاب میں شامل اسباق کے ذریعے جمالیاتی ذوق کے فروغ کے لیے مختلف سرگرمیاں کرائی جائیں۔ • متن کی روشنی میں قواعد کی نشاندہی کرائی جائے اور ان سے متعلق سرگرمیاں کرائی جائیں۔ • گروپ ورک کے ذریعے نصاب میں شامل شاعروں اور ادیبوں کی زندگی پر مبنی چارٹس اور پمفلٹ تیار کرائے جائیں۔ • مشہور و معروف ادبی شخصیتوں کا طلبا سے تعارف کرایا جائے اور ان سے بات چیت کے مواقع فراہم کیے جائیں۔ • جماعت اور جلسوں میں گفتگو، مباحثہ، تحریر اور تقریر وغیرہ میں شرکت کرنے کے لیے طلبا کی حوصلہ افزائی کی جائے۔ • ٹی وی اور ریڈیو پر ہونے والے مباحثے اور تقریر کو سننے اور سمجھنے کا ماحول فراہم کیا جائے۔ • درسی/ غیر درسی کتب، اخبار، رسالے وغیرہ پڑھنے کے لیے بلند خوانی اور خاموش مطالعے کی عادت کو فروغ دینے کی حوصلہ افزائی کی جائے۔ • ادب کی مختلف اصناف کو سمجھنے کا ماحول فراہم کیا جائے اور ان میں پوشیدہ مفاہیم کو سمجھنے اور ان کے حسن سے آگاہ ہونے کے لیے طلبا کی مسلسل حوصلہ افزائی کی جائے۔ • سماجی، سیاسی اور تہذیبی موضوعات پر گفتگو کرنے اور بحث و مباحثے میں شرکت کرنے کا موقع اور ماحول فراہم کیا جائے۔	آموزگار— • پڑھتے اور بولتے وقت جملے کی صحیح ادائیگی کرتے ہیں۔ • اپنے خیالات کا اظہار سادہ زبان میں کرتے ہیں۔ • لکھنے کے دوران جملے مختصر، آسان اور صاف لکھتے ہیں۔ • رموزِ اوقاف (Punctuation) کے صحیح استعمال کو پہچانتے ہیں۔ جیسے ع درد، منت کش دوا نہ ہوا ع لائی حیات، آئے، قضا لے چلی، چلے ع ''آ جائیں گے- بیٹا، سو جاؤ- وہ صبح سویرے آ جائیں گے'' • پڑھنے اور لکھنے کے دوران رموزِ اوقاف کا صحیح استعمال کرتے ہیں۔ جیسے روکو، مت جانے دو۔ روکو مت، جانے دو۔ • طلبا معروف ادبی شخصیتوں سے مل کر محظوظ ہوتے ہیں اور ان سے سوالات پوچھتے ہیں۔ • پڑھنے اور لکھنے کے دوران اضافت کا صحیح استعمال کرتے ہیں۔ جیسے۔ ع بوئے گل، نالۂ دل، دودِ چراغِ محفل۔ • محاوروں اور کہاوتوں کا واضح فرق سمجھتے ہیں اور انھیں اپنی گفتگو میں استعمال کرتے ہیں۔ • گفتگو اور تحریر میں اپنی تخلیقی صلاحیت کا استعمال کرتے ہیں۔ • مختلف ادبی اصناف کو پہچانتے ہیں جیسے غزل، نظم، مثنوی، گیت، قطعہ اور رباعی وغیرہ۔ • نثری اور شعری اصناف کے مختلف اجزا کی وضاحت کرتے ہیں۔ جیسے ردیف، قافیہ، پلاٹ، کردار اور مکالمہ وغیرہ۔ • کسی نثری/ شعری صنف جیسے قطعہ/ رباعی، نثری نظم/ آزاد نظم، مضمون، انشائیہ وغیرہ کی خوبیوں کی نشان دہی کرتے ہیں۔

- موثر طریقے سے کہانی، اشعار اور نظمیں پڑھنے کے لیے مواقع فراہم کرائے جائیں اور طلبا کی مسلسل حوصلہ افزائی کی جائے۔
- گفتگو اور متن میں مستعمل ذو معنی لفظوں اور جملوں کو سمجھایا جائے اور ان سے محظوظ کرایا جائے۔
- مشاعرہ، بیت بازی، اداکاری وغیرہ میں حصہ لینے کے مواقع اور مائک پر بولنے کی آزادی فراہم کرانا اور حوصلہ افزائی کی جائے۔

- ادیبوں اور شاعروں کی تخلیقات کی نشان دہی کرتے ہیں جیسے بھولا، نیا قانون اور دیس سے آنے والے بتا، ڈھونڈو گے اگر ملکوں ملکوں ملنے کے نہیں نایاب ہیں ہم۔ وغیرہ
- مختلف شعری اور نثری فن پاروں کو صحیح تلفظ، ترنم، آہنگ اور مناسب لب و لہجے کے ساتھ پڑھتے ہیں۔ جیسے قطعہ/ رباعی، نثری نظم، آزاد نظم، مضمون، انشائیہ، افسانہ، خاکہ وغیرہ۔ مثلاً

  ایک کا حصہ من و سلوا ● ایک کا حصہ تھوڑا حلوا

  ایک کا حصہ بھیڑ اور بلوا ● میرا حصہ دور کا جلوہ
- مختلف سیاق میں لفظوں کے مفہوم کو سمجھتے ہیں اور انھیں استعمال کرتے ہیں۔ جیسے۔ ہم کہاں کے دانا تھے۔۔۔/ سب کہاں کچھ وغیرہ۔
- عبارت اور شعر میں حسن پیدا کرنے والے عناصر کی نشان دہی کرتے ہیں جیسے۔ محاورے، ضرب الامثال، تشبیہہ، استعارہ، مختلف صنعتیں وغیرہ۔
- حوالے کی کتابوں، لغت اور اشاریے کا استعمال کرتے ہیں۔
- زبان اور سماج کے رشتے کو بہ خوبی سمجھتے اور نباہتے ہیں۔

شمولیتی نظام میں مجوزہ تدریسی عمل

کلاس روم میں نصاب ہر ایک کے لیے ہے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ تمام طالب علم کلاس روم میں فعال طور پر حصہ لے سکتے ہیں۔ وہاں کچھ ایسے طالب علم ہو سکتے ہیں جنھیں زبان، بصری مقامی (visual-spatial) یا مخلوط پروسیسنگ سے متعلق سیکھنے میں مشکلات ہو سکتی ہیں۔ انھیں نصاب میں اضافی تدریس کی مدد اور کچھ موافقت کی ضرورت ہو سکتی ہے۔ خصوصی ضرورتوں والے بچوں کی مخصوص ضروریات پر غور کر کے اساتذہ کے لیے کچھ مجوزہ تدریسی طریقۂ کار ذیل میں دیے جا رہے ہیں۔

بینائی سے محروم بچوں کے لیے

- خطوط نویسی، درخواست وغیرہ کے فارمیٹ کا زبانی تعارف کرایا جا سکتا ہے۔
- طلبا کی مثالی بلند خوانی کے لیے حوصلہ افزائی کی جائے۔ استاد کی مدد سے کلاس روم میں زیادہ سے زیادہ تعامل سے بات چیت گفتگو کی مہارت میں بہتری آئے گی۔
- نئے الفاظ کو بریل میں معنی کے ساتھ لکھا جانا چاہیے۔

- روزانہ کی سرگرمیوں کی مدد سے زبانی مشق کرائی جائے۔
- سوالات بنانے اور بچوں کو اس کا جواب دینے کے لیے آمادہ کیا جائے۔ بچوں سے خود سوال تیار کرنے اور جواب تلاش کرنے کے لیے کہا جائے۔
- تلفظ کو بہتر بنانے کے لیے ٹیپ اور کہانی سنوائی جائے۔ آڈیو ریکارڈنگ کے ذریعے تبصرے سنوائے جائیں۔
- تمام طلبا کی ایک دوسرے سے بات چیت کرنے کی حوصلہ افزائی کی جائے۔
- اداکاری، ڈرامہ اور رول پلے کروائے جائیں۔

سماعت سے محروم بچوں کے لیے

- پڑھائے گئے موضوع پر ذخیرۂ الفاظ کی بصری شیٹ (تصویروں کے ساتھ الفاظ) تیار کرائی جائے۔
- بورڈ پر نئے الفاظ لکھیں۔ اگر دست یاب ہو تو لغت کا استعمال کریں جس میں با تصویر لفظ ہوں۔
- طلبا کی روزمرہ زندگی سے نئے الفاظ کو مربوط کیا جائے اور مختلف سیاق میں اسے دہرایا جائے۔
- کلاس روم میں دکھائی جانے والی اشیا کے اہم نکات کو وضاحت کے ساتھ پیش کیا جائے۔
- تفہیم کے لیے حاشیوں میں مثالوں کا استعمال کرایا جائے۔
- سمجھنے میں مدد کے لیے ترسیل کے مختلف ذرائع (لفظی اور غیر لفظی گرافک کارٹون، اسپیچ بیلون، تصاویر، علامات، ٹھوس اشیا اور مثالیں) کا استعمال کیا جائے۔
- جملوں کو توڑ کر مختصر کیا جائے اور متن کو مختصر کر کے دوبارہ لکھا جائے۔
- بچوں کو روزمرہ کی زندگی سے متعلق موضوعات پر روزنامچے، مکالمے، ڈائری وغیرہ جیسی آسان شکلوں میں لکھنے کے لیے کہا جائے۔
- جملے بنوانے کی بار بار مشق کرائی جائے۔ تاکہ بچے جملوں اور محاوروں کا صحیح استعمال سیکھ سکیں۔ تصاویر، خبروں، حالات حاضرہ، اسکریپ بک وغیرہ سے مثالیں دی جائیں۔
- پڑھنے کی مہارت کو فروغ دینے کے لیے بچہ کے معیار کے مطابق ضروری مواد اور وسائل مہیا کرائے جائیں۔
- کلر کوڈنگ (مصوتی اور مصمتی حروف کے لیے الگ الگ رنگ) اور کنسیپٹ میپ کا استعمال کیا جائے۔

وقوفی اور ذہنی اعتبار سے معذور بچوں کے لیے

- پیش کش کے مختلف انداز اور طریقے (حسی، حرکی، سمعی، بصری وغیرہ) استعمال کرائے جائیں۔
- شعری اور نثری اقتباسات کی تشریح/ وضاحت آسان لفظوں میں کی جائے۔
- کارڈ، کٹھ پتلیوں، اصل زندگی کے تجربات، ڈرامہ، اداکاری، کہانیوں، حقیقی اشیا اور امدادی اشیا کے ذریعے نظریات اور نئے الفاظ کی وضاحت کی جائے اور مواد کو جاذب بنایا جائے۔

- بہتر سمجھ کے لیے تصورات سے متعلق پس منظر کی معلومات فراہم کی جائیں۔
- قرأت کے دوران نظم کو اداکاری کے ذریعہ پیش کیا جائے اور مختلف حرکات وسکنات کے ساتھ اس کی بلند خوانی کی جائے۔
- سبق کے مختلف حصوں جیسے تعارف، مواد، اندازۂ قدر وغیرہ سے متعلق سوالات بنوائے جائیں۔
- پڑھنے میں روانی کو فروغ دینے کے لیے دو بچوں کو ساتھ ساتھ جوڑیوں میں پڑھنے کے لیے کہا جائے۔
- مشکل لفظوں کے معنی اور مترادفات لکھوائے جائیں۔ معنی اور مترادف لفظوں کو بریکٹ میں دیا جائے اور انھیں نمایاں کیا جائے۔

آموزشی ماحصل کے استعمال کے لیے مشورے:

درس وتدریس کے دوران اساتذہ اور بچوں کو آموزش میں مدد کرنے اور آسانیاں فراہم کرنے کے لیے نویں اور دسویں جماعتوں کے لیے نصابی توقعات، تدریسی مراحل اور آموزشی ماحصل تیار کیے گئے ہیں۔ انھیں استعمال کرنے کے لیے ذیل میں چند مشورے دیے گئے ہیں۔

- مجوزہ تدریسی عمل اور آموزشی ماحصل کو جدول میں پیش کیا گیا ہے۔
- پہلے کالم یعنی دائیں طرف مجوزہ تدریسی عمل اور دوسرے کالم یعنی بائیں طرف آموزشی ماحصل کو درج کیا گیا ہے۔جس میں طلبا کی سیکھنے کی سرگرمیوں کو ملحوظ رکھا گیا ہے۔
- پہلے اردو زبان کی تدریس کے مقاصد کے پیش نظر NCF-2005 کے مطابق نصابی توقعات کو درج کیا گیا ہے۔ ان نصابی توقعات کو طلبا تبھی حاصل کر سکتے ہیں جب آموزش کے طریقے اور جماعت/ اسکول کے ماحول میں مطابقت ہو۔
- یہ آموزشی ماحصل درس وتدریس کے دوران Assessment میں بھی آپ کی مدد کریں گے۔ کیوں کہ درس وتدریس کے دوران فیڈ بیک بھی ملتا ہے۔
- آموزشی ماحصل کو اچھی طرح سمجھنے کے لیے درسیاتی خاکہ اور نصاب کو بھی اچھی طرح سمجھنا چاہیے۔
- آموزشی ماحصل بچوں کی قابلیت، مہارت، تصور اور ان کی ذاتی اور معاشرتی اقدار سے تعلق رکھتے ہیں۔
- شمولیتی کلاس کو نظر میں رکھتے ہوئے نصابی توقعات، سیکھنے کے طریقے اور ماحول، نیز آموزشی ماحصل میں سبھی طرح کے بچوں کو اہمیت دی گئی ہے۔

संस्कृतभाषाधिगमस्य प्रतिफलानि

परिचय:

विश्वे समुपलब्धासु भाषासु संस्कृतभाषा प्राचीनतमा। ऋग्वेदादारभ्य इदानीं यावत् भाषेयं अबाधगत्या प्रवहमाना वर्तते। संस्कृतसाहित्ये विद्यमानानां साहित्य-दर्शन-ज्ञान-विज्ञानादीनामध्ययनस्य प्रासंगिकता अद्यापि असंशयतां भजते। अस्याः भाषायाः अध्ययनेन न केवलं भारतीय-सांस्कृतिकपरम्परायाः, सुसमृद्धस्येतिहासस्य ज्ञानविज्ञानस्य च अजस्रस्रोतसः ज्ञानं भवति, अपि तु अन्यभारतीयभाषाणां साहित्यस्य ज्ञानेऽपि सहायता लभ्यते। राष्ट्रियैकतादृष्ट्याऽपि संस्कृतस्य महत्त्वपूर्णं स्थानं विद्यते। संस्कृतस्य इदानीन्तनस्वरूपम् अन्यभाषावत् भारतीयबहुभाषिकतायाः अभिन्नमेकमङ्गम्। दैनन्दिनजीवनेऽपि भाषेयं सर्वथा उपयोगिन्येव। अस्याः अध्ययनेन न केवलं संस्कृतभाषायाः प्रकृतिः संरचना च ज्ञायेते, अपि तु अन्यभारतीयभाषाणामवबोधने शिक्षणे चापि सारल्यमनुभूयते।

भाषायाः प्रमुखमुद्देश्यम् अस्ति भावसम्प्रेषणम्। छात्राः यां भाषां पठन्ति तया भाषया स्व-भावान् प्रकाशयितुं सक्षमाः भवेयुः अपि च अपरैः कथिताः वाचोऽवबुध्य प्रत्युत्तरप्रदाने समर्थाः स्युः। एतदतिरिच्य संस्कृतभाषायाः प्राचीनार्वाचीन-साहित्याध्ययनेऽपि दत्तावधानाः स्युरित्येतदर्थं पाठ्यपुस्तकेषु विविधाः पाठाः समाविष्टाः। पाठ्यांशानां भावार्थाः, प्रयुक्ताः व्याकरणबिन्दवः प्रेष्याश्च सन्देशाः विद्यार्थिनां कृते बहूपयोगिनः भवन्ति।

यथैवान्यभाषाशिक्षणक्रमे संस्कृतं सहायकं भवति, तथैव संस्कृतभाषाशिक्षणक्रमेऽप्यन्यासां भारतीयभाषाणां सहायता स्वीकर्तुं शक्यते। उच्चप्राथमिकस्तरे अन्यभाषाभिः सममेव संस्कृतस्य सुदृढसम्बन्धमवबुद्ध्य माध्यमिकस्तरे छात्राः विविध-भाषाकौशलेषु सुपरिचिताः भवेयुरित्येतत्सुस्पष्टं लक्ष्यम्। माध्यमिकस्तरे भाषाकौशलज्ञानादतिरिच्य ते विविधाभिः साहित्यिकविधाभिः परिचिताः स्युस्तथा च साहित्यांशानां रसास्वादनं कर्तुं शक्नुयुरिति संस्कृतशिक्षणस्योद्देश्यम्। साहित्यांशानां प्रयोगे व्यवहृतैः व्याकरणनियमैः चापि छात्राः अवगताः भवेयुः, तदनुसारं च प्रयोगं कुर्युः इतीयमपेक्षा माध्यमिकस्तरीया।

अधोनिर्दिष्टानि नवमकक्षाया: दशमकक्षायाश्च संस्कृतशिक्षणस्य प्रतिफलानि तेषां विद्यार्थिनां कृते उद्दिष्टानि, यै: षष्ठकक्षात: संस्कृतम् अधीयते।

पाठ्यचर्या-प्रत्याशाः

वयं जानीमः यत् नवमकक्षायाः छात्राः वर्षत्रयं यावत् संस्कृतं पठित्वा अस्यां कक्षायां समागताः। ते संस्कृतभाषासंरचनया स्वरूपादिभिश्च सामान्यतया परिचिताः सन्ति। अस्मिन् स्तरे भाषायाः चतुर्षु कौशलेषु दक्षतायाः अभिवृद्धये छात्रेभ्यः काश्चित् अपेक्षाः क्रियन्ते—

- दैनन्दिनजीवने प्रयुज्यमानानां वाक्यानामवबोधनं सम्भाषणञ्च ।
- कक्षायां शिक्षकैः सहपाठिभिश्च प्रकटितेषु विषयेषु स्व-मतोपस्थापनम्, प्रश्नोपस्थापनम्, विचारविनिमये च सक्रिय-सहभागिता।

- सरलसंस्कृतेन समकालीनविषयेषु समस्यासु घटनासु च स्व-विचाराभिव्यक्तिः।
- आकाशवाणी-दूरदर्शनादिषु प्रसार्यमाणानां संस्कृतकार्यक्रमाणामवधानपूर्वकं श्रवणम्, अवबोधनं सरलभाषया च सारांशप्रकटनम्।
- पाठान् पठित्वा, अन्येषां विचारान् च श्रुत्वा स्व-शैल्या सरलसंस्कृतेन भावकथनम्।
- सरल-संस्कृत-सुभाषितानां बोधपूर्वकमुच्चारणं, स्वभाषायां विद्यमानानां संस्कृतपदानामभिज्ञानमवबोधनञ्च।
- अन्य-विषयेषु समुपलब्ध-पारिभाषिकपदेषु विद्यमान-संस्कृतपदानामभिज्ञानम्।
- ग्रन्थालये अन्तर्जालादिषु स्वेच्छया संस्कृत-पुस्तक-पत्र-पत्रिकादीनां पठनं सारांशलेखनञ्च।
- पाठ्यक्रमे पाठ्येतर-पुस्तकेषु च विद्यमानानां पद्यानां पठनम्, अवबोधनं स्व-भाषया तेषां भावार्थवर्णनञ्च।
- औपचारिकानौपचारिक-पत्रलेखनम्, संवादलेखनं लघुकथा-लेखनञ्च।
- व्याकरणदृष्ट्या शुद्धवाक्यप्रयोगसामर्थ्यप्राप्तिः।
- पाठ्यपुस्तकेषु प्रयुक्तानां छन्दसां लयपूर्वकं सस्वर-वाचनम्।
- गद्यांशानां समुचितोच्चारणेन सह पठनमवबोधनञ्च।
- अंग्रेज़ी-प्रांतीयभाषाणां संस्कृतभाषायामनुवाद: संस्कृताच्च अन्यभाषायामनुवाद:।
- गद्यांशानां पठनं साहित्यिकसौन्दर्यबोधश्च।
- पर्यावरणसंरक्षण- सामाजिकमूल्यपरकविषयान् अवगम्य वाक्यरचनाकौशलप्राप्तिः।
- सुभाषितानां भावार्थं सन्देशञ्च अवबुध्य दैनन्दिनव्यवहारे अनुपालनम्।
- संस्कृतपद्यानां सान्वयार्थावबोधः।
- नाट्य-संवादात्मकपाठानामवबोधः अभिनयकलासामर्थ्यावाप्तिश्च।
- जाति-धर्म-वर्ण-लिङ्ग-प्रान्त-शारीरिकक्षमता-निर्विशेषेण संस्कृतं सर्वजनग्राह्यमिति भावनाजागरणम्।
- संस्कृतसाहित्यांशानाम् अध्ययने श्रद्धा, तद्गत-राष्ट्रिय-सामाजिक-वैयक्तिकमूल्यानां जीवने अनुपालनं प्रसारश्च।

कक्षा 9

प्रस्तावित: शिक्षणशास्त्रीय-प्रक्रिया: (Suggested Pedagogical Processes)	अधिगम-प्रतिफलानि (Learning Outcomes)
व्यक्तिगतरूपेण/सामूहिकरूपेण विद्यार्थिन: अवसरं / प्रोत्साहनं च प्राप्नुयु: — • शिक्षणप्रक्रियायाम् आधिक्येन छात्राणां सहभागिता यथा स्यात्, तादृशं वातावरणं निर्मेयम्। • शिक्षणक्रमे भाषाया: सर्वेषां कौशलानाम् (श्रवणम्, भाषणम्, पठनं लेखनञ्च) उपरि बलं दातव्यम्। • प्रसङ्गवशात् छात्रेभ्य: एतादृशा: प्रश्ना: प्रष्टव्या: येन ते चिन्तनस्य अवसरं प्राप्नुयु: तथा च कञ्चित् निर्णयपर्यन्तं गच्छेयु:। यथा— भवान् अस्यां परिस्थितौ यदि भविष्यति तर्हि किं निर्णयं स्वीकरिष्यति? पाठस्य नायकेन नायिकया वा यन्निर्णयं गृहीतं तद् भवतां दृष्टौ सम्यग् अस्ति अथवा नास्ति। • शिक्षणक्रमे शिक्षक: सरलसंस्कृतवाक्यै: प्रश्नान् पृच्छेत्। छात्रै: पृष्टानां प्रश्नानां यथोचितम् उत्तरं दद्यात्। पाठावबोधनकालेऽपि अध्यापक: हिंदीभाषया उत क्षेत्रीयभाषया सह सरलं संस्कृतं व्यवहरेत्। • कक्षायामधिकाधिकं संस्कृतमयं वातावरणं कल्पनीयम्। तथा च सामान्य-व्यवहाराय अध्यापक: सततं सरलसंस्कृतवाक्यानां प्रयोगं कुर्यात्, एवञ्च छात्रान् अपि कारयेत्। यथा—नमो नम:। सुप्रभातम्। शुभमध्याह्नम्। शुभसायम्। शुभरात्रि:। भवान् कथमस्ति? अद्य वयं पद्यपाठं पठाम:। भवन्त: सन्नद्धा: खलु? • अध्यापक: छात्रेभ्य: अधिकाधिकप्रश्नान् संस्कृतेनैव पृच्छेत् तथा च संस्कृतेनैव उत्तरं दातुं छात्रान् प्रोत्साहयेत्। • समूहाभ्यासं तथा च वैयक्तिकाभ्यासं कारयेत्। • संस्कृतस्य अधिकाधिकसामग्रीणां प्रयोगं कुर्यात्। यथा—अन्तर्जाले समुपलब्ध— दृश्य-श्रव्यसामग्र्य:, कक्षाया: भित्तौ संस्कृतस्य श्लोकवाक्यानि, कक्षायां संस्कृतपाठाधारितानि फलकादीनि। • कथा-नाटक-संवादादिपाठानां पाठनं यथासम्भवं प्रत्यक्षविधिना एव करणीयम्।	• विद्यार्थी सरलसंस्कृतभाषया कक्षोपयोगीनि वाक्यानि वक्तुं समर्थ: अस्ति। • कक्षात: बहि: दैनन्दिन-जीवनोपयोगीनि वाक्यानि वदति। • अपठितगद्यांशं पठित्वा तदाधारितप्रश्नानामुत्तरप्रदाने सक्षम: अस्ति। • सरल-संस्कृत-भाषया औपचारिक-अनौपचारिक-पत्रलेखनार्ह: भवति। • अनुच्छेद-लेखनं संवाद-लेखनं चित्राधारित-वर्णनञ्च करोति। • पाठ्यपुस्तकागतान् गद्यपाठान् अवबुध्य तेषां सारांशं वक्तुं लेखितुं च समर्थ: अस्ति। • तदाधारितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन वदति लिखति च। • संस्कृतश्लोकान् उचितबलाघातपूर्वकं छन्दोऽनुगुणम् उच्चारयति। • श्लोके प्रयुक्तानां सन्धियुक्तपदानां विच्छेदं करोति। • श्लोकान्वयं कर्तुं समर्थ: अस्ति। • तेषां भावार्थं प्रकटयति। • श्लोकाधारितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन वदति लिखति च। • संस्कृत-नाट्यांशानां संवादानां उचितोच्चारणं करोति। • तेषां भावानुरूपं शारीरिकक्रियाकलापान् प्रदर्शयति। • तदाधारितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन वदति लिखति च। • प्रसन्न-आश्चर्य-उत्साह-दु:ख-विनम्रताऽऽदीन्भावान् संस्कृतभाषया वदति लिखति च। • विद्यार्थी उच्चारणानुसारं लिखति, लेखनानुसारञ्च उच्चारणं करोति। • स्वर-व्यञ्जनसंयोगं विन्यासञ्च करोति।

- कविताश्लोकादीनां पाठनं रुचिकरविधिभि: यथा— भावानुरूपं सस्वरगायनेन खण्डान्वयादिविधिना करणीयम्।
- गीतानां पाठनं सस्वरं कुर्यात्। तथा च कदाचित् व्यक्तिगतरूपेण कदाचिच्च समूहात्मकमनुवाचनं कारयेत्।
- व्याकरणनियमानां कण्ठस्थीकरणम् अकारयित्वा अनेकोदाहरणमाध्यमेन बोधनं कार्यम्। येन छात्रा: स्वयमेव निर्णयपर्यन्तं गच्छेयु:। सदैव गद्य-पद्य-नाटकादीनां पाठेषु समागतानामुदाहरणानाम् उल्लेखं कृत्वा तेषां ज्ञानं सम्पोषणीयम्।
- कारकोपपदविभक्तीनां शिक्षणात् प्राक् प्रत्येकोदाहरणानि तादृशान्यनेकानि उदाहरणानि दातव्यानि येन छात्रा: स्वयमेव निष्कर्षपर्यन्तं यान्तु। यथा— बालक: जनकेन सह आपणं गच्छति। स: मित्रेण सह आलपति। पुत्री मात्रा सह क्रीडति इत्यादीनि। एभिः उदाहरणैः छात्राः स्वयमेव 'सह' इत्यस्य योगे तृतीया भवति इति ज्ञास्यन्ति।
- समयावबोधनात् प्राक् संख्याज्ञानस्य परीक्षा कर्तव्या। एकत: द्वादशपर्यन्तं संख्याया: पुन: अभ्यासः कारणीयः। तथा च उदाहरणमाध्यमेन सपाद-सार्द्ध-पादोनादिपदानां ज्ञानं कारयेत्।
- शिक्षक: आदौ पाठनम् अकृत्वा छात्रान् स्वयं पठितुं प्रेरयेत्।
- अन्तर्विषयकप्रकरणानि चित्वा (सामाजिकविज्ञान-विज्ञान-आंग्ल-हिंदी-विषयेभ्य:) अपठितगद्यांशलेखनाय अनुवादाय वा प्रेरयेत्।
- शिक्षक: तत: आदर्शोच्चारणं कुर्यात्, भाषणे लेखने च व्याकरणनियमान् पालयेत्, छात्राणां त्रुटी: सहजं मत्वा शनै: शनै: संशोधनं कारयेत्।
- नाटक-संवाद-समः पाठः साभिनयं पाठनीयः। एतदर्थमपि यत्नं विधेयं यत् नाटकादिषु पात्रानुसारम् अभिनयमपि स्यात्।
- प्रार्थनासभायां विशिष्टसमारोहेषु च संस्कृतगीत-श्लोकपाठ-अन्त्याक्षरीत्यादय: कार्यक्रमा: भवेयु:।
- कारक-विभक्ति-उपपदविभक्तीः प्रयुज्य शुद्धवाक्यानि रचयति।
- सन्धियुक्तपदानां सार्थकविच्छेदं विच्छिन्नपदानां सन्धिं च करोति।
- कृदन्त-तद्धित-स्त्री-प्रत्ययान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयति।
- उपसर्गयुक्तपदानि वाक्येषु व्यवहरन्ति।
- पाठे प्रयुक्तानां सामासिकपदानां विग्रहं विगृहीतपदानां समस्तपदानि च लिखति।
- पाठ्यपुस्तकगत-पाठानां स्रोतः रचनाकाराणां नामानि च अभिव्यनक्ति।

- राष्ट्रियैकतासाधकान् सौहार्दविषयकान् पाठान् अवबोधयन् छात्राणां मनसि राष्ट्रभक्तिं राष्ट्रियैकतां साम्प्रदायिकसौहार्दभावनां च वर्धयितुं प्रयत्नो विधेय:। एतादृग्विषयेषु ते तटस्थीभूय चिन्तने समर्था: भवेयु:, तथा च तदनुसारं निर्णयमपि स्वीकुर्यु:। एतदर्थं प्रासङ्गिकभाषणानाम्, सामूहिकशैक्षिकगतिविधीनां वादविवादादिपरिचर्चाणाम् आयोजनं कारणीयम्।
- औपचारिक-अनौपचारिकपत्रलेखनस्य विभिन्नविषयेषु चर्चां कारयित्वा छात्रान् स्वयमेव पत्राणि लेखनाय प्रेरयेत्।
- किमपि चित्रं दर्शयित्वा/कुत्रापि दर्शनीयस्थलं गत्वा तस्य स्थानस्य विषये किमपि वक्तुं प्रेरयेत्। छात्राः यदि भाषणसमये/लेखनसमये स्खलनं कुर्वन्ति तदा प्रेम्णा तेषां दोषाणाम् अपसारणं कारणीयम्।
- अंतर्जालस्य शब्दकोशस्य वा प्रयोगं कृत्वा नूतनशब्दानाम् अर्थान्वेषणे प्रवृत्तिः कारणीया।
- शिक्षकः सरलसंस्कृतवाक्येषु दैनिकव्यवहारेषु उपयुज्यमानानि वाक्यानि वदेत्। ततः छात्राः तेषाम् अनुवादं संस्कृतभाषायां हिन्दीभाषायां वा कुर्युः। एवमेव छात्राः अपि नूतनसंस्कृतवाक्यानां निर्माणं कुर्युः। शिक्षकः कर्तृ-क्रियाधारितानां सामान्यवाक्यानाम् अभ्यासं कारयेत्।

कक्षा 10

प्रस्तावित: शिक्षणशास्त्रीय-प्रक्रिया: (Suggested Pedagogical Processes)	अधिगम-प्रतिफलानि (Learning Outcomes)
व्यक्तिगतरूपेण/सामूहिकरूपेण विद्यार्थिन: अवसरं/ प्रोत्साहनं च प्राप्नुयु: — • शिक्षणप्रक्रियायाम् आधिक्येन छात्राणां सहभागिता यथा स्यात्, तादृशं वातावरणं निर्मेयम्। • शिक्षणक्रमे भाषाया: सर्वेषां कौशलानाम् (श्रवणम्, भाषणम्, पठनं लेखनञ्च) उपरि बलं दातव्यम्। • प्रसङ्गवशात् छात्रेभ्य: एतादृशा: प्रश्ना: प्रष्टव्या: येन ते चिन्तनस्य अवसरं प्राप्नुयु: तथा कञ्चित् निर्णयपर्यन्तं गच्छेयु:। यथा- भवान् अस्यां परिस्थितौ यदि भविष्यति तर्हि किं निर्णयं स्वीकरिष्यति? पाठस्य नायकेन नायिकया वा यन्निर्णयं गृहीतं तद् भवतां दृष्टौ सम्यग् अस्ति अथवा नास्ति। • शिक्षणक्रमे शिक्षक: सरलसंस्कृतवाक्यै: प्रश्नान् पृच्छेत्। छात्रै: पृष्टानां प्रश्नानां यथोचितम् उत्तरं दद्यात्। पाठावबोधनकालेऽपि अध्यापक: छात्राणां भाषया उत क्षेत्रीयभाषया सह सरलं संस्कृतं व्यवहरेत्। • कक्षायामधिकाधिकं संस्कृतमयं वातावरणं कल्पनीयम्। तथा च सामान्य-व्यवहाराय अध्यापक: सततं सरलसंस्कृतवाक्यानां प्रयोगं कुर्यात्, एवञ्च छात्रान् अपि कारयेत्। यथा— नमो नम:। सुप्रभातम्। शुभमध्याह्नम्। शुभसायम्। शुभरात्रि:। भवान् कथमस्ति? अद्य वयं पद्यपाठं पठाम:। भवन्त: सन्नद्धा: खलु? • अध्यापक: छात्रेभ्य: अधिकाधिकप्रश्नान् संस्कृतेनैव पृच्छेत् तथा च संस्कृतेनैव उत्तरं दातुं छात्रान् प्रोत्साहयेत्। • समूहाभ्यासं तथा च वैयक्तिकाभ्यासं कारयेत्। • संस्कृतस्य अधिकाधिकसामग्रीणां प्रयोगं कुर्यात्। यथा— अन्तर्जाले समुपलब्ध-दृश्य-श्रव्यसामग्र्य:, कक्षाया: भित्तौ संस्कृतस्य श्लोकवाक्यानि, कक्षायां संस्कृतपाठाधारितानि फलकादीनि। • कथा-नाटक-संवादादिपाठानां पाठनं यथासम्भवं प्रत्यक्षविधिना एव करणीयम्।	• विद्यार्थी सरलसंस्कृतभाषया कक्षोपयोगीनि वाक्यानि वक्तुं समर्थ: अस्ति। • कक्षात: बहि: दैनन्दिन-जीवनोपयोगीनि वाक्यानि वदति। • अपठितगद्यांशं पठित्वा तदाधारितप्रश्नानामुत्तरप्रदाने सक्षम: अस्ति। • सरल-संस्कृत-भाषया औपचारिक-अनौपचारिक-पत्रलेखनार्ह: भवति। • अनुच्छेद-लेखनं संवाद-लेखनं चित्राधारित-वर्णनञ्च करोति। • पाठ्यपुस्तकगतान् गद्यपाठान् अवबुध्य तेषां सारांशं वक्तुं लेखितुं च समर्थ: अस्ति। • तदाधारितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन वदति लिखति च। • संस्कृतश्लोकान् उचित-बलाघात-पूर्वकं छन्दोऽनुगुणम् उच्चारयति। • श्लोके प्रयुक्तानां सन्धियुक्तपदानां विच्छेदं करोति। • श्लोकान्वयं कर्तुं समर्थ: अस्ति। • तेषां भावार्थं प्रकटयति। • श्लोकाधारितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन वदति लिखति च। • संस्कृत-नाट्यांशानां संवादानां उचितोच्चारणं करोति। • तेषां भावानुरूपं शारीरिकक्रियाकलापान् प्रदर्शयति। • तदाधारितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन वदति लिखति च। • प्रसन्नताश्चर्योत्साहदु:खविनम्रताऽऽदीन् भावान् संस्कृत-भाषया वदति लिखति च। • विद्यार्थी उच्चारणानुसारं लिखति, लेखनानुसारञ्च उच्चारणं करोति। • कारकविभक्ति-उपपदविभक्ती: प्रयुज्य शुद्धवाक्यानि रचयति।

- व्याकरणनियमानां कण्ठस्थीकरणम् अकारयित्वा अनेकोदाहरणमाध्यमेन बोधनं कारणीयम्। येन छात्रा: स्वयमेव निर्णयपर्यन्तं गच्छेयु:। सदैव गद्य-पद्य-नाटकादीनां पाठेषु समागतानामुदाहरणानाम् उल्लेखं कृत्वा तेषां ज्ञानं सम्पोषणीयम्।
- कारकोपपदविभक्तीनां शिक्षणात् प्राक् प्रत्येकोदाहरणानि तादृशान्यनेकानि उदाहरणानि दातव्यानि येन छात्रा: स्वयमेव निष्कर्षपर्यन्तं यान्तु। यथा- बालक: जनकेन सह आपणं गच्छति। स: मित्रेण सह आलपति। पुत्री मात्रा सह क्रीडति इत्यादीनि। एभिः उदाहरणैः छात्राः स्वयमेव 'सह' इत्यस्य योगे तृतीया भवतीति ज्ञास्यन्ति।
- शिक्षक: स्वयम् आदर्शोच्चारणं कुर्यात्, तथा भाषणे लेखने च व्याकरणनियमान् पालयेत्, छात्राणां त्रुटी: सहजं मत्वा शनै: शनै: सम्यक् कारयेत्।
- गीतानां पाठनं स्वरोच्चारणपूर्वकं कुर्यात्। तथा च कदाचित् व्यक्तिगतरूपेण कदाचिच्च समूहात्मकमनुवाचनं कारयेत्।
- नाटक-संवादसम: पाठ: साभिनयं पाठनीय:। एतदर्थमपि यत्नो विधेय: यत् नाटकादिषु पात्रानुसारम् अभिनयमपि स्यात्।
- प्रार्थनासभायां विशिष्टसमारोहेषु च संस्कृतगीत-श्लोकपाठ-अन्त्याक्षरीत्यादय: कार्यक्रमा: भवेयु:।
- विद्यालये विविधसमारोहायोजनमाध्यमेन छात्रान् संस्कृतवार्तालापाय संवादाय नाटकादिकरणाय च प्रोत्साहयेत्। तथा च तेषां सन्नद्धार्थं सहयोग: करणीय:।
- परीक्षायां स्मृत्याधारितप्रश्नानां न्यूनतां कृत्वा प्रयोगात्मकानां बोधपरकप्रश्नानां चाधिकता कर्तव्या।
- राष्ट्रियैकतासाधकान् सौहार्दविषयकान् पाठान् अवबोधयन् छात्राणां मनसि राष्ट्रभक्तिं राष्ट्रियैकतां साम्प्रदायिकसौहार्दभावनां च वर्धयितुं प्रयत्नो विधेय:। एतादृग्विषयेषु ते तटस्थीभूय चिन्तने समर्था: भवेयु:, तथा च तदनुसारं निर्णयमपि स्वीकुर्यु:। एतदर्थं प्रासङ्गिकभाषणानाम्, सामूहिकशैक्षिकगतिविधीनां वादविवादादिपरिचर्चाणाम् आयोजनं कारणीयम्।
- सन्धियुक्तपदानां सार्थकविच्छेदं विच्छेदयुक्तपदानां सन्धिं च करोति।
- कृदन्त-तद्धित-स्त्री-प्रत्ययान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयन्ति।
- उपसर्गयुक्तपदानि वाक्येषु व्यवहरन्ति।
- पाठे प्रयुक्तानां सामासिकपदानां विग्रहं विगृहीतपदानां समस्तपदानि च लिखन्ति।
- पाठ्यपुस्तकगत-पाठानां स्रोतः रचनाकाराणां नामानि च अभिव्यनक्ति।
- अर्थानुसारं वाच्यपरिवर्तनं (कर्तृवाच्यम्, कर्मवाच्यम् एवं भाववाच्यम्) करोति।
- समयवाचकप्रश्ने पृष्टे सति समुचितमुत्तरं यच्छति।
- उचिताव्ययानि प्रयोजयन्तः वाक्यनिर्माणं कुर्वन्ति।
- विभक्ति-वचन-काल-लिङ्गानां बोधपूर्वकं प्रयोगं कुर्वन्ति।

समावेशीशिक्षणव्यवस्थाया: कृते कानिचन मार्गदर्शकतत्त्वानि

उपरि लिखितानि शिक्षणप्रतिफलानि समावेशीसंस्कृतशिक्षणाय एव सन्ति, परं कक्षासु एतादृशाः अपि अन्यथा सक्षमाः छात्रा: भवन्ति येषाम् आवश्यकता विशिष्टा भवति। तेषाम् आवश्यकता प्रपूर्तये तादृशाः कक्षाप्रविधयः क्रियाकलापाश्च निर्मातव्याः यै: ते पाठ्यांशान् अवगन्तुं समर्थाः भवन्तु। शिक्षकः छात्राणां व्यक्तिगत-आवश्यकतानुसारं शिक्षणप्रविधिषु परिवर्तनं कुर्यात्। यद्यपि कक्षासु सर्वेषां छात्राणां कृते समानपाठ्यचर्या भवति, सर्वेषु गतिविधिषु छात्राणां प्रतिभागिता चापि भवति, तथापि विशिष्टावश्यकतावतां छात्राणां कृते पाठ्यचर्यायां परिवर्तनस्य बहुधा अपेक्षा भवति—

- अध्यापकैः पत्रादीनां (पत्रम्, आवेदनपत्रम्) लेखनस्य प्रारूपं मौखिकरूपेण बोधनीयम्।
- शिक्षकः आदर्शवाचनं कुर्यात् छात्राश्च अनुकरणवाचनं कुर्यु:।
- अध्यापकः कक्षायां वार्तालापमाध्यमेन सम्प्रेषणकौशलं वर्धयितुं शक्नुयात्।
- नवशब्दानुक्रमणिकानां सार्थं ज्ञानं ब्रेललिपि-शैल्यां देयम्।
- प्रतिदिनं मौखिकम् अर्थपूर्णञ्च भाषिकगतिविधीनाम् अभ्यास: भवेत्।
- शब्दानां मौखिकरूपेण विस्तृतं वर्णनं स्यात्। यथा— निमेषः, विशालः, समुद्रः, लघुजीवजन्तवः, कीटपतङ्गाश्च इत्यादयः।
- प्रश्नानां निर्माणं कर्तव्यम्, तथा च तेषाम् उत्तरप्रदानाय छात्राः प्रोत्साहनीयाः पुनः छात्राः प्रश्ननिर्माणार्थं प्रेरणीयाः, तथा च तेषां प्रश्नानाम् उत्तरं स्वयमेवान्वेषणार्थं वक्तव्यम्।
- उच्चारणसंशोधनार्थं कथादीनां श्रवणस्य प्रकल्प: आचरणीयः। विविधानां ध्वनीनां संग्रहणं कर्तव्यम्। यथा – जलतरङ्गः, जलप्रपातः, नदीप्रवाहः, वायुध्वनिः, झञ्झावातः, पशुपक्षिणां कलरवम्, विभिन्नयानानां ध्वनिः इत्यादयः। अनेन माध्यमेन तेषां सङ्कल्पना-धारणा-विचारादीनाम् अवबोधो वर्धनीय:।
- परस्परं वार्तालापार्थं छात्रा: प्रेरणीया:।
- नाटकादिषु साभिनयप्रयोगः स्यात्।
- पाठ्यविषये दृश्यशब्दकोशस्य फलकप्रारूपं निर्मेयम्। (फलके चित्रमाध्यमेन शब्दान् दर्शयेत्।)
- फलके (Chalk Board) नवीनशब्दानां लेखनं यदि शक्यते तर्हि शब्दकोशगतशब्दानां प्रयोगः चित्रमाध्यमेन स्यात्।
- सामान्यव्यवहारे नवीनशब्दानां प्रयोगः कथं स्यात्? इति बोधनीयम्, तथा च विविधप्रसङ्गेषु तेषां प्रयोगोऽपि कर्तव्यः।
- शीर्षकेण विवरणेन च सहैव दृश्यात्मकविधिना कक्षायां शब्दाः प्रयोक्तव्याः।
- सारांशार्थं सोदाहरणं पादटिप्पणी (Footnote) लेखनीया।
- सारांशलेखने सहायतार्थं संवादस्य विविधोपकरणानां प्रयोगः स्यात्। यथा— चित्राणि, विविधसङ्केताः, स्पष्टवस्तूनि विविधसाधनानि च।

- लिखितसामग्र्यः लघु-लघुवाक्यैः सरलवाक्यैश्च विखण्ड्य संक्षिप्य च लेखनं व्यवस्थापनीयम्।
- विद्यार्थिषु तादृशं सामर्थ्यं वर्धनीयं येन छात्राः प्रत्येकदिवसस्य नैजां क्रियां सामान्यतयैव वार्तालापरूपेण, पत्रिकारूपेण वा टिप्पणीपुस्तिकायां लिखेयुः।
- वाक्याधारिताः अभ्यासाः पुनः-पुनः देयाः येन छात्राः शब्दप्रयोगं वाक्यप्रयोगञ्च साधुतया कर्तुं समर्थाः स्युः। एतदर्थं विविधचित्रैः, समाचारैः, समकालीनघटनाभिश्च उदाहरणानि प्रस्तोतव्यानि।
- छात्रस्तरानुगुणं तेभ्यः पाठ्यसामग्र्यः संसाधनानि च दातव्यानि।
- पाठे समागतानां प्रधानशब्दानामाश्रयणं कृत्वा अनुभवान् संकेतमाध्यमेन बोधयेत्।
- वर्णसङ्केतस्य *(Colour Coding)* सङ्कल्पनायाश्च *(Concept Map)* प्रयोगः करणीयः। यथा— स्वरव्यञ्जनबोधनाय पृथक्-पृथक् वर्णयोः प्रयोगः।
- प्रस्तुतीकरणार्थं विविधोपायानां शैलीनाञ्च प्रयोगः स्यात्। यथा— दृश्यम्, श्रव्यम्, प्रायोगिकशिक्षणम् इत्यादयः।
- अनुच्छेदानां सरलीकरणार्थं तत्र सन्धिविच्छेदादिकं कृत्वा सरलता विधेया।
- पाठ्यसामग्र्यः अधिकाः आकर्षिकाः स्युः। एतदर्थं विविधविचारैः, नूतनशब्दानां प्रयोगैः, काष्ठपुत्तलिकाप्रयोगैः, वास्तविकजीवनानुभवैः, कथाप्रस्तुतीकरणद्वारा, प्राकृतवस्तुभिः पूरणसामग्रीभिश्च पाठ्यसामग्र्यः युक्ताः भवन्तु।
- सम्यग् अवगमनाय आवश्यकमस्ति यत् विषयसम्बन्धिपृष्ठभूमिविषये सूचना प्रदेया।
- कवितानाम् अध्यापनं गायनं कृत्वा साभिनयं करणीयम्।
- विविधवर्गार्थम् पाठ्यांशात् आदर्शप्रश्नाः भवेयुः। यथा— परिचयभागतः, मूल्याङ्कनतः इत्यादयः।
- पाठ्यवस्तुनः सम्यग्बोधनाय द्वयोः-द्वयोः छात्रयोः समूहनिर्माणं कृत्वा प्रस्तुतीकरणं स्यात्।
- कठिनशब्दानाम् अवगमनाय सकाशे एव तेषाम् अर्थः पर्यायवाचिशब्दो वा लेखनीयः। आवश्यकं स्यात् चेत् सारांशस्यापि रेखाङ्कनं करणीयम्।

विज्ञान सीखने के प्रतिफल

परिचय

विज्ञान वास्तव में दुनिया को समझने के लिए संकल्पनात्मक मॉडल बनाने के मानवीय प्रयास का प्रमाण है। यह ज्ञान का एक गतिक, विस्तारित होने वाला निकाय है, जिसमें अनुभव के नए प्रक्षेत्र को निरंतर समाहित किया जाता है। वैज्ञानिक ज्ञान, अनेक अंत:संबंधित प्रक्रियाओं के माध्यम से उत्पन्न होता है, जैसे— अवलोकन, तथ्यों की पुष्टि, बारंबारता और प्रतिमानों की तलाश, प्राक्कल्पना करना, गुणात्मक व गणितीय मॉडल तैयार करना, उनके प्रतिफलों का अनुमान लगाना, अवलोकनों तथा नियंत्रित प्रयोगों द्वारा सिद्धांतों को वैध या गलत साबित करते हुए, उनके सटीक कारण उजागर करना और इस प्रकार भौतिक दुनिया को नियंत्रित करने वाले सिद्धांतों, आधारों और कानूनों को बनाना। मोटे तौर पर कहें, ये वैज्ञानिक पद्धति के चरण हैं, लेकिन इन विभिन्न चरणों में कोई स्थिर क्रम नहीं है। कभी-कभी, एक सिद्धांत से एक नए प्रयोग का सुझाव मिल सकता है; अन्य समय में एक प्रयोग से किसी नए सैद्धांतिक मॉडल का सुझाव मिल सकता है। हालाँकि, एक वैज्ञानिक सिद्धांत को स्वीकार्य होने के लिए, इसे प्रासंगिक प्रेक्षणों और/या प्रयोगों द्वारा सत्यापित किया जाना चाहिए।

विज्ञान को माध्यमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम में मूल विषयों में से एक के रूप में लिया जा रहा है। इस स्तर पर, प्रत्यक्ष अनुभवों से परे की अवधारणाओं को भी सम्मिलित किया जाता है। प्राथमिक कक्षाओं की तुलना में अमूर्त और मात्रात्मक तर्क जैसी क्षमताएँ अधिक केंद्रीय स्थान बनाना शुरू करती हैं, जबकि विज्ञान माध्यमिक स्तर पर भी एक एकीकृत विषय है, फिर भी भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के विषयों की झलक उभरने लगती हैं। बच्चे को अनुभवों के साथ-साथ तर्क के ऐसे तरीकों से अवगत कराया जाना चाहिए जो इन विषयों के विशिष्ट हैं, जबकि उन्हें विषय की सीमाओं के पार तथ्यों को देखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। जिस प्रक्रिया से तथ्यात्मक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, वह उतना ही महत्वपूर्ण है जितने वैज्ञानिक तथ्य हैं, इसलिए शिक्षाशास्त्र को केवल परिणाम के बजाय विज्ञान की प्रक्रिया पर ज़ोर देने वाले दृष्टिकोण का एक विवेकपूर्ण मिश्रण होना चाहिए। हालाँकि, माध्यमिक चरण में अवधारणाओं को समझाने के दौरान इनके उच्च प्राथमिक स्तर के साथ एकीकरण और निरंतरता को प्रतिबिंबित किया जाना चाहिए। इस स्तर पर छात्रों को उच्च प्राथमिक चरण की तुलना में अधिक उन्नत तकनीकी मॉडल तैयार करने के लिए हाथों और उपकरणों के साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्हें पर्यावरण और स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दों पर चर्चा/विश्लेषण करने के अवसर मिलने चाहिए, जिनमें प्रजनन और यौन स्वास्थ्य भी शामिल हैं।

विज्ञान में शैक्षणिक प्रक्रिया से विद्यार्थियों को विभिन्न वैज्ञानिक प्रक्रियाओं, जैसे कि अवलोकन, पूछताछ, योजना की जाँच, परिकल्पना, डेटा (आँकड़े) एकत्र करना, विश्लेषण

और सत्यापन, व्याख्या करना, साक्ष्यों के साथ व्याख्याओं का निर्माण और इन्हें संप्रेषित करना, अन्वेषण व्याख्याओं को उचित ठहराना, वैकल्पिक रूप से व्याख्या पर विचार और मूल्यांकन करने के लिए सोचना। कार्यनीतियों की एक विस्तृत शृंखलाबद्ध योजना और उनके कल्पनाशील संयोजन, जैसे कि संलग्न-गतिविधियाँ, प्रयोग, परियोजनाएँ, क्षेत्र का दौरा, सर्वेक्षण, समस्या को हल करना, समूह-चर्चा, वाद-विवाद, भूमिका निभाना आदि में शैक्षणिक प्रक्रियाएँ शामिल हो सकती हैं। शिक्षक अलग-अलग विद्यार्थियों के लिए उनकी सीखने की गति और शैली के अनुसार सीखने के लिए एक उपयुक्त शिक्षण वातावरण की सहज कार्य-क्रियान्वयन कर सकते हैं; विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बच्चे भी इसमें शामिल हैं। आकलन एवं पुर्नबलन, सीखने की प्रक्रिया के अभिन्न अंग होने चाहिए।

एक प्रगतिशील समाज में, विज्ञान वास्तव में लोगों को गरीबी उन्मूलन, अज्ञानता और अंधविश्वास के दुष्चक्र से बाहर निकालने में मददगार भूमिका निभा सकता है। इस स्तर पर विद्यार्थियों को सामाजिक मुद्दों पर चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि विज्ञान सीखना सामाजिक संदर्भ में सार्थक हो सके, इसलिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए विभिन्न पाठ्यक्रम गतिविधियों में स्थानीय मुद्दों और समस्या को सुलझाने के दृष्टिकोण से जुड़ी परियोजनाओं में भागीदारी को समान रूप से महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए।

माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम-अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए, पाठ्यक्रम को मुख्य रूप से सात विषयों के आस-पास आयोजित किया जाता है— खाद्य-सामग्री; जीवन की दुनिया; चीजें कैसे काम करती हैं; चीजों का चलना; लोग और विचार; प्राकृतिक घटनाएँ और प्राकृतिक संसाधन। ये विषयवस्तुएँ संभावित विषय से परे हैं और कक्षा छ: से दसवीं कक्षा में पढ़ाई जा रहीं हैं।

पाठ्यक्रम से अपेक्षाएँ

इस चरण पर विद्यार्थियों से इनके विकास की अपेक्षाएँ की जाती हैं—

- भौतिक दुनिया को नियंत्रित करने वाली अवधारणाओं, सिद्धांतों, आधारों और कानूनों की समझ विकसित करना, संज्ञानात्मक विकास के चरण के अनुरूप।
- विज्ञान की विधियों और प्रक्रियाओं को प्राप्त करने और उपयोग करने की क्षमता विकसित करना, जैसे कि अवलोकन करना, पूछताछ करना, जाँच की योजना बनाना, डेटा की व्याख्या करना, विश्लेषण करना और व्याख्या करना, साक्ष्यों के साथ व्याख्याओं को संप्रेषित करना, व्याख्याओं को उचित ठहराना, वैकल्पिक रूप से व्याख्या पर विचार और मूल्यांकन करने के लिए तर्कसंगत रूप से विचार करना आदि।
- प्रयोगों का आयोजन करना, जिसमें मात्रात्मक माप भी शामिल है।
- इसे समझना कि समय के साथ विज्ञान की अवधारणाएँ किस प्रकार विकसित होती हैं, ताकि इसकी ऐतिहासिक संभावनाओं को महत्व दिया जा सके।

- वैज्ञानिक स्वभाव (निष्पक्षता, तार्किक सोच, भय और पूर्वाग्रह से मुक्ति आदि) का विकास करना।
- प्राकृतिक जिज्ञासा, सौंदर्य बोध और रचनात्मकता का पोषण करना।
- ईमानदारी, अखंडता, सहयोग, जीवन के लिए चिंता और पर्यावरण के संरक्षण के मूल्यों को आत्मसात् करना।
- मानवीय गरिमा और अधिकारों, समता और समानता के लिए आदर विकसित करना।

कक्षा 9

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से या समूहों में अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे— • अवलोकन करें, क्रियाकलाप द्वारा पदार्थों/सामग्रियों का उनके गुणों, यथा घुलनशीलता, प्रकाश का मार्ग इत्यादि के आधार पर वर्गीकरण करें पदार्थों या सामग्रियों के समूह बनाएँ/ वर्गीकृत करें, जैसे कि मिश्रण का, उनके गुणों के आधार पर, जो हैं विभिन्न गतिविधियों का प्रदर्शन करके घुलनशीलता, प्रकाश का मार्ग आदि। अवलोकनों के आधार पर, की गई पुष्टि पर पहुँचने के लिए परिक्षण को सुविधाजनक बनाया जा सकता है। दृष्टिहीन या दृष्टि-बाधित विद्यार्थियों को स्पर्श द्वारा सावधानीपूर्वक सामग्रियों का निरीक्षण करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। • गतिविधियों को डिज़ाइन करें और आयोजित करें, उन्हें प्रयोग करने के किये प्रोत्साहित किया जा सकता है जैसे कि समान और विपरीत दिशा में/पर बल लगाना, इसके बाद सहकर्मी समूह में सामान्य चर्चा की जाए। • अंतर विषयक दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए जीवन के अनुभव का अध्ययन करें, जैसे कि मिट्टी के बर्तनों में पानी ठंडा होने का कारण। उन्हें मिट्टी के बर्तन और धातु के बर्तन, दोनों में पानी के तापमान को मापने और तुलना करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, जिससे उन्हें वाष्पीकरण की प्रक्रिया से शीतलन प्रभाव का संबंध जानने में मदद मिलती है। दृष्टिहीन या दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को बर्तनों की सतहों को छूकर तापमान में अंतर महसूस करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। • बीमारियों के फैलने की प्रक्रिया को समझने के लिए सर्वेक्षण का संचालन करें। विभिन्न बीमारियों के बारे में डॉक्टरों और नर्सों से डेटा एकत्र करने के लिए प्रोत्साहन दिया जा सकता है। वे रोल-प्ले/स्किट के माध्यम से बीमारियों के फैलने, कारणों, रोकथाम और इलाज पर एक रिपोर्ट तैयार कर सकते हैं।	**विद्यार्थी—** • गुणों/विशेषताओं के आधार पर, सामग्री/वस्तुओं/जीवों/ परिघटनाओं/प्रक्रमों को पृथक करता है, जैसे— प्रोकैरियोट और यूकेरियोट, पादप कोशिका और जंतु कोशिका, प्रसार और परासरण, सरल और जटिल ऊतकों, दूरी और विस्थापन, गति और वेग, संतुलित और असंतुलित बल, तत्व, यौगिक और मिश्रण, विलियन, निलंबन और कोलाइड, समभारिक और समस्थानिक आदि। • गुणों/विशेषताओं के आधार पर, सामग्री/वस्तुओं/जीवों/ परिघटनाओं/प्रक्रमों को वर्गीकृत करता है, जैसे कि पौधों का वर्गीकरण, विभिन्न श्रेणीबद्ध उप-समूहों के तहत जंतु, प्राकृतिक संसाधन, पदार्थ की अवस्था संगठन के आधार पर उन का वर्गीकरण (ठोस/तरल/गैस/ तत्व/यौगिक/मिश्रण) आदि। • तथ्यों/सिद्धांतों/परिघटनाओं को समझने और उन्हें सत्यापित करने के लिए या अपने आप प्रश्नों के उत्तर की खोज करने के लिए अन्वेषणों/प्रयोगों की योजना बनाता और आयोजित करता है, जैसे कि वस्तु की गति कैसे बदलती है? जब तरल की सतह पर वस्तुएँ रखी जाती हैं तो वे कैसे तैरती/डूबती हैं? क्या रासायनिक अभिक्रिया होने पर द्रव्यमान में कोई परिवर्तन होता है? पदार्थों की अवस्था पर ऊष्मा का क्या प्रभाव होता है? पदार्थ की विभिन्न अवस्थाओं पर संपीड़न का क्या प्रभाव है? विभिन्न प्रकार के पत्तों में रंध्र कहाँ मौजूद होते हैं? पौधों में वृद्धि करने वाले ऊतक कहाँ मौजूद होते हैं? • प्रक्रमों और परिघटनाओं को कारणों/प्रभावों के साथ संबद्ध करता है, जैसे कि रोग को उनके कारणों एवं लक्षणों के साथ, ऊतकों को उनके कार्य के साथ, उर्वरकों के उपयोग का उत्पादन के साथ, शीतलन प्रभाव के साथ वाष्पीकरण की प्रक्रिया, पदार्थों के भौतिक और रासायनिक गुणों के साथ पृथक्करण की विभिन्न प्रक्रियाएँ। कंपन के स्रोत के साथ ध्वनि का उत्पादन आदि।

वे समुदाय के साथ अपने निष्कर्ष साझा कर सकते हैं और रोकथाम के लिए भी अभियान चला सकते हैं।

- फ़्लो चार्ट/अवधारणा मानचित्र/ग्राफ़ के माध्यम से उनके अवलोकनों/विचारों/सीखी गई बातों और आईसीटी की भूमिका पर चर्चा करें।
- विभिन्न भौतिक मात्राओं की गणना के लिए डेटा जमा करें, जैसे— दूरी, विस्थापन, वेग, जिसे साथियों के साथ साझा किया जा सकता है और समूहों में चर्चा की जा सकती है। इकाइयों के रूपांतरण और रिपोर्टिंग प्रतिफलों का आकलन करने के लिए रुब्रिक्स का उपयोग किया जा सकता है।
- समाचारपत्रों, पत्रिकाओं या इंटरनेट से विभिन्न प्रकार के आरेख जमा करें और इनका विश्लेषण करें। इन्हें रेखांकन करने, इनका विश्लेषण करने और व्याख्या करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है (उदाहरण के लिए, सीधी सड़क पर किसी वाहन की गति के दूरी-समय, गति-समय या त्वरण-समय के आरेख)
- कार्ड के खेल जैसे तरीकों का उपयोग करके सरल यौगिकों, रासायनिक समीकरणों आदि के सूत्र लिखें।
- भौतिक मात्रा को मापने के लिए उपयुक्त उपकरणों का चयन करें और उनका उपयोग करें। किसी भी उपकरण का न्यूनतम और अधिकतम मान पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, जो रीडिंग को सही ढंग से नोट कर सकते हैं और इन्हें एक उपकरण द्वारा मापा जा सकता है।
- समय के साथ वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना करने के लिए पुस्तकों, ई-पुस्तकों, पत्रिकाओं, इंटरनेट आदि से जानकारी एकत्र करें, उदाहरण के लिए परमाणुओं के विभिन्न मॉडल, माइक्रोस्कोप की खोज और इसे परियोजना/रोल-प्ले के रूप में प्रदर्शित करें।
- विभिन्न तकनीकी उपकरणों/नवोन्मेषी प्रदर्शनों, जैसे कि अपशिष्ट प्रबंधन किट, जल निस्पंदन प्रणाली का निरीक्षण करना, कम लागत/बिना लागत वाली पर्यावरण के अनुकूल सामग्रियों का उपयोग करना, उन्हें विकसित करना और इसे विज्ञान प्रदर्शनियों/क्लबों/अभिभावकों-शिक्षकों की बैठकों में दिखाना।

- प्रक्रमों और परिघटनाओं की व्याख्या करता है, जैसे— विभिन्न अंगों के कार्य, रोगों का प्रसार और उनकी रोकथाम, वस्तुओं की गति की स्थिति पर बल का प्रभाव, क्रिया और प्रतिक्रिया, नियमित आवर्तन ग्रहों और उपग्रहों का घूमना, संरक्षण का नियम, हवा से विभिन्न गैसों के पृथक्करण का सिद्धांत, गलना/ उबलना/ जमना, चमगादड़ शिकार को पकड़ने के लिए अल्ट्रासोनिक तरंगों का उपयोग कैसे करते हैं आदि।
- दिए गए आँकड़ों का उपयोग करके गणना करता है, जैसे— दूरी, वेग, गति, आवृत्ति, किए गए कार्य, एक पदार्थ के दिए गए द्रव्यमान में मोल की संख्या, पदार्थों के विलियन की सांद्रता प्रतिशत द्रव्यमान द्वारा द्रव्यमान के संदर्भ में, केल्विन पैमाने पर सेल्सियस स्केल का रूपांतरण और इसके विपरीत, परमाणु संख्या और द्रव्यमान संख्या से एक परमाणु में न्यूट्रॉन की संख्या जानना, किसी वस्तु की ध्वनि की गति, गतिज और स्थितिज ऊर्जा, एक मिश्रण में से द्रवों के पृथक होने के क्रम का उनके क्वथनांकों के आधार पर पूर्वानुमान लगाना।
- लेबल किए गए आरेख/प्रवाह संचित्र/संकल्पना मानचित्र/ आरेख बनाता है, जैसे कि जैव-रासायनिक चक्र, कोशिका अंग और ऊतक, मानव कान, दूरी-समय और गति-समय आरेख, विभिन्न कक्षों में इलेक्ट्रॉनों का वितरण, आसवन/ ऊर्ध्व पातन की क्रिया आदि।
- आरेख/आँकड़े आदि का विश्लेषण और विवेचना करता है, जैसे— दूरी-समय और वेग-समय आरेख, गतिमान वस्तुओं की दूरी/गति/त्वरण की गणना, पृथक्करण की उपयुक्त विधि की पहचान करने के लिए मिश्रण के घटकों के गुण, उर्वरकों के अनुप्रयोग के बाद फ़सल की उपज आदि।
- विभिन्न राशियों/तत्वों/इकाइयों का प्रतिनिधित्व करने के लिए वैज्ञानिक परिपाटियों परंपराओं/प्रतीकों/समीकरणों का उपयोग करता है, जैसे— एसआई इकाइयाँ, तत्वों के प्रतीक, सरल यौगिकों के सूत्र, रासायनिक समीकरण आदि।

- मिथकों/वर्जनाओं/अंधविश्वासों के बारे में उनके विश्वासों और विचारों को साझा करके/खुली चर्चा के साथ शुरू करके, वैज्ञानिक रूप से सिद्ध तथ्यों और उनकी मान्यताओं के साथ तालमेल बनाने के लिए अग्रणी करना। वे समुदाय में जागरूकता अभियानों में भी शामिल हो सकते हैं।

- उचित उपकरणों यंत्रो/ का उपयोग करके भौतिक राशियों को मापता है, जैसे कि स्प्रिंग वाली तुला का उपयोग करके किसी वस्तु का वज़न और द्रव्यमान, एक भौतिक तुला का उपयोग करके द्रव्यमान, एक साधारण पेंडुलम की समय अवधि, मापक सिलेंडर का उपयोग करके द्रव का आयतन, थर्मामीटर का उपयोग करके तापमान आदि ज्ञात करना।
- परिकल्पित स्थितियों पर अपने अधिगम को अनुप्रयुक्त करता है, जैसे कि चंद्रमा पर किसी वस्तु का भार, ध्रुव और भूमध्य रेखा पर किसी वस्तु का भार, अन्य ग्रहों पर जीवन की संभावना आदि।
- दैनिक जीवन में समस्याओं को हल करने मे सहायता करता है और वैज्ञानिक संकल्पनाओं को अनुप्रयुक्त करता है, जैसे कि मिश्रण को अलग करना, ऑटोमोबाइल में सुरक्षा बेल्ट का उपयोग करता है, ध्वनि शोषक सामग्री के साथ बड़े कमरे की दीवारों को कवर करता है, इंटरक्रॉपिंग और फ़सल चक्रीकरण का अनुसरण करता है, रोग पैदा करने वाले कारकों को नियंत्रित करने के लिए निवारक उपाय करता है आदि।
- सूत्रों/समीकरणों/नियमों को व्युत्पन्न करता है, जैसे— न्यूटन के गति के दूसरे नियम के लिए गणितीय अभिव्यक्ति, संवेग के संरक्षण का नियम, गुरुत्वाकर्षण बल के लिए अभिव्यक्ति, वेग-समय के आरेख से गति के समीकरण आदि।
- निष्कर्ष निकालता है, जैसे— जीवन के रूपों का वर्गीकरण विकास से संबंधित है, पोषक तत्वों की कमी का पौधों की शारीरिक प्रक्रियाओं पर प्रभाव होता हैं, पदार्थ कणों से बना होता है, तत्व यौगिक बनाने के लिए एक निश्चित अनुपात में रासायनिक रूप से संयोजित होते हैं, दो अलग-अलग पिंडों पर क्रिया और प्रतिक्रिया का नियम आदि।
- वैज्ञानिक खोजों/आविष्कारों का वर्णन करता है, जैसे— विभिन्न परमाणु मॉडल की खोज, सूक्ष्मदर्शी (माइक्रोस्कोप) के आविष्कार के साथ कोशिका की खोज, लैवोइसेयर और प्रीस्टले के प्रयोग, गति के बारे में मान्यता, पेप्टिक अल्सर के वास्तविक कारण की खोज, आर्किमिडीज सिद्धांत, जीवित वस्तुओं का वर्गीकरण आदि।

	• पर्यावरण अनुकूल संसाधनों का उपयोग करके मॉडल तैयार करने मे रचनात्मकता का प्रदर्शन करता है, जैसे कि कोशिका का 3-डी मॉडल, जल शोधन प्रणाली, स्टेथोस्कोप आदि। • निर्णय लेने, जीवन के लिए सम्मान आदि के लिए ईमानदारी/निष्पक्षता/तर्कसंगत सोच/मिथकों/अंधविश्वासों से मुक्ति के मार्ग प्रशस्त करता है, जैसे— प्रयोगात्मक डेटा के वास्तविक रिकॉर्ड और रिपोर्ट, कि यौन संचारित रोग सहज शारीरिक संपर्क से नहीं फैलते हैं, अंधविश्वास कि बीमारियों की रोकथाम के लिए टीकाकरण महत्वपूर्ण नहीं है आदि। • परिणामों और निष्कर्षों को प्रभावी रूप से संप्रेषित करता है, जैसे कि उपयुक्त आँकड़े/तालिकाओं/आरेख/डिजिटल रूप आदि का उपयोग करते हुए मौखिक और लिखित रूप में प्रयोग/गतिविधि/परियोजना। • पर्यावरण के संरक्षण, जैसे— जैविक खेती, अपशिष्ट प्रबंधन आदि को बढ़ावा देने के लिए पर्यावरण के जीवीय और अजैव कारकों में आपस में निर्भरता और अंतर्संबंध\को स्थापित करता है।

कक्षा 10

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से या समूहों में अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे— • प्रतिक्रियाओं, जैसे— ऊष्माक्षेपी और ऊष्माशोषी के बीच अंतर को पहचानें। • प्रयोगशाला थर्मामीटर का उपयोग करके दोनों प्रतिक्रियाओं में तापमान में अंतर को समझने के लिए निरीक्षण करें। • अपशिष्ट पदार्थों के विघटन के गुण के आधार पर उन्हें अलग करने के तरीकों की जाँच करें। उन्हें घर, स्कूल और सार्वजनिक स्थानों पर निपटान से पहले कचरे के अलगाव करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। • दो भौतिक मात्राओं के बीच संबंध का अन्वेषण करें, जैसे कि किसी चालक के सिरों के बीच विभवांतर और उससे प्रवाहित विधुतधारा के बीच संबंध। एक गतिविधि के डिज़ाइन, आयोजनों और निष्कर्षों को साझा करें। • अंतरविषयक प्रक्रमों और परिघटनाओं, जैसे— पौधों और जानवरों में परिवहन, अयस्कों से धातुओं का निष्कर्षण का गतिविधियों/प्रयोगों/प्रदर्शनों की सहायता से क्यों और कैसे का पता लगाएँ। विद्यार्थियों को अपने साथियों के साथ प्रक्रम/परिघटना पर चर्चा करने, निष्कर्ष निकालने, संबद्ध बनाने और समझाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। • आरेख, जैसे कि पाचन तंत्र और विभिन्न अंगों के नामों का निरीक्षण करें। विद्यार्थियों को स्कूल में प्रदर्शित करने के लिए पाचन तंत्र के पोस्टर बनाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। उन्हें आरेखन के लिए आईसीटी उपकरण का उपयोग करने के अवसर भी प्रदान किए जा सकते हैं। • समाचारपत्रों, पत्रिकाओं या इंटरनेट से विभिन्न प्रकार के आरेख एकत्रित करें, उनमें निहित जानकारी को समझने के लिए विद्यार्थियों को एक आरेख बनाने की सुविधा दी जा सकती है, जैसे कि किसी चालक के सिरों के बीच विभवांतर और उससे प्रवाहित विधुतधारा के बीच संबंध का विश्लेषण करने के लिए V-I आरेख।	**विद्यार्थी —** • गुणों/विशेषताओं के आधार पर, सामग्री/वस्तुओं/जीवों/परिघटनाओं/प्रक्रमों को पृथक करता है, जैसे— स्वपोषी और विषमपोशी पोषण जैव और अजैव, निम्नीकरण पदार्थ, विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएँ, प्रबल और दुर्बल अम्ल और क्षारक, अम्लीय, क्षारकीय और उदासीन लवण, वास्तविक और आभासी चित्र आदि। • गुणों/विशेषताओं के आधार पर सामाग्री/वस्तुओं/जीवों/परिघटनाओं/प्रक्रमों को वर्गीकृत करता है, जैसे कि उनके भौतिक और रासायनिक गुणधर्मों गुणों के आधार पर धातु और गैर-धातु, उनके रासायनिक गुणों के आधार पर अम्ल और क्षार। • तथ्यों/सिद्धांतों/परिघटनाओं को समझने के लिए और उन्हें सत्यापित करने के लिए या अपने आप प्रश्नों के उत्तर की खोज करने के लिए अन्वेषणों/प्रयोगों की योजना बनाता और आयोजित करता है, जैसे— ज़ंग लगने के लिए आवश्यक परिस्थितियों का अन्वेषण करना, विभिन्न प्रकार के विलयनों की विद्युत चालकता का परीक्षण करना, विभिन्न प्रकार के साबुन के नमूनों में झाग बनाने की क्षमता की तुलना करना, प्रकाश के परावर्तन और अपवर्तन के नियमों की जाँच करना, ओम का नियम, क्या विभिन्न प्रकार की पत्तियाँ प्रकाश संश्लेषण करती हैं? किण्वन के दौरान कौन-सी गैस विकसित होती है? पौधों के तने प्रकाश की ओर क्यों बढ़ते हैं। • प्रक्रमों और परिघटनाओं को कारणों/प्रभावों के साथ संबद्ध ज्ञात करता है, जैसे कि हार्मोन और उनके कार्यों, लार के pH के साथ दंतक्षरण, मिट्टी के pH के साथ पौधों की वृद्धि, पानी के pH के साथ जलीय जीवधारियों के उत्तरजीविता, प्रकाश के प्रकीर्णन के कारण आकाश का नीला रंग, विधुतधारा चुंबकीय प्रभाव के कारण दिक् सूचक की सुई का विक्षेपित होना आदि।

- सरल गणितीय कौशल का उपयोग करके रासायनिक समीकरणों को संतुलित कैसे किया जाता है, इसका अध्ययन करें। रासायनिक समीकरणों के संतुलन में महत्व पर चर्चा की जा सकती है।
- सचित्र कार्ड का उपयोग करके नयी काटीज़ियन चिह्न परिपाटी से परिचित हों और गोलाकार दर्पणों द्वारा परावर्तन की विभिन्न स्थितियों में चिह्न परिपाटी को करने के पर्याप्त अवसर दिए जा सकते हैं।
- पारितंत्र पर एक काल्पनिक स्थिति के बारे में एक रोल-प्ले करें, जैसे कि क्या होगा यदि सभी शाकाहारी अचानक पृथ्वी से गायब हो जाएँ। इसके बाद इस बात पर चर्चा हो सकती है कि किस प्रकार जैव विविधता की हानि खाद्य शृंखला को बाधित करता है, जिससे पारितंत्र में ऊर्जा प्रवाह पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- समीकरण, सूत्र, नियम आदि व्युत्पन्न करें, उदाहरण के लिए शृंखला (या समानांतर) में प्रतिरोधों के तुल्य प्रतिरोध के सूत्र की सयोजित व्युत्पत्ति। उन्हें तब तक अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जब तक कि उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न न हों।
- जीन के माध्यम से वशांगत में मिले लक्षणों का अध्ययन करें, जैसे— संलग्न या स्वतंत्र कर्ण पालि। उन्हें अपने मित्रों के कर्ण पालि को देखने और दोस्तों के माता-पिता और दादा-दादी के कर्ण पालि के साथ तुलना करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, ताकि इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सके कि गुण या लक्षण, वंशजों को माता-पिता से वशांनुगत होते हैं।
- वैज्ञानिकों और उनके निष्कर्षों के बारे में पुस्तकालय और इंटरनेट की खोज करके प्रिंट और गैर-प्रिंट सामग्री एकत्र करें, यह समझने के लिए कि समय के साथ अवधारणाएँ कैसे विकसित हुईं। उन्हें पोस्टर तैयार करके और रोल-प्ले/स्किट्स करके अपने निष्कर्षों को साझा करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।
- तकनीकी युक्तियों/अभिनव प्रदर्शों जैसे कि इलेक्ट्रिक मोटर, सोडा अल्म अग्निशामक, श्वसन प्रणाली को डिज़ाइन और विकसित करने के लिए पर्यावरण अनुकूल/

- प्रक्रियाओं और घटनाओं की व्याख्या करता है, जैसे— मानव और पौधों में पोषण, पौधों और पौधों में परिवहन, पौधों और जानवरों में परिवहन, अयस्कों से धातुओं का निष्कर्षण, आधुनिक आवर्ती सारणी में तत्वों को रखना, धातुओं की प्रतिक्रिया शृंखला के आधार पर उनके लवण के घोल से उनका विस्थापन, विद्युत मोटर और जनरेटर का काम, तारों का टिमटिमाना, जल्दी सूर्योदय और देर से सूर्यास्त, इंद्रधनुष का निर्माण आदि।
- लेबल किए गए आरेख/प्रवाह चार्ट/अवधारणा मानचित्र/ आरेख बनाता है, जैसे कि पाचन, श्वसन, संचार, उत्सर्जन और प्रजनन प्रणाली, पानी का इलेक्ट्रोलिसिस, परमाणुओं और अणुओं की इलेक्ट्रॉन डॉट संरचना, धातुएँ, अयस्क, धातुओं के निष्कर्षण के लिए फ़्लो चार्ट फ़ील्ड लाइनें आदि।
- डेटा/आरेख/आकृति का विश्लेषण और व्याख्या करता है, जैसे— सहसंयोजी और आयनिक यौगिकों के बीच अंतर करने के लिए पदार्थों के पिघलने के बिंदु और क्वथनांक, पदार्थों की प्रकृति का पूर्वानुमान करने के लिए घोलों का पीएच, वी-आई आरेख, रे-आरेख आदि।
- दिए गए डेटा का उपयोग करके गणना करता है, जैसे किसी रासायनिक समीकरण को संतुलित करने के लिए अभिकारकों और उत्पादों में परमाणुओं की संख्या, प्रतिरोधों की एक प्रणाली का प्रतिरोध, एक लेंस की शक्ति, विद्युत शक्ति आदि।
- विभिन्न मात्राओं/प्रतीकों/सूत्रों/समीकरणों की इकाइयों का प्रतिनिधित्व करने के लिए वैज्ञानिक परिपाटियों का उपयोग करता है, रासायनिक समीकरण को संतुलित करने के लिए भौतिक अवस्थाओं और संकेतों का प्रयोग, प्रकाशिकी के चिह्न परिपाटी, एसआई इकाइयों आदि में साइन परंपरा सम्मेलन।
- उपयुक्त उपकरणों/यंत्रो/ युक्तियों का उपयोग करके भौतिक राशियों को मापता है, जैसे— विभिन्न संकेतकों के रूप में उपयोग होने वाले पदार्थों का पीएच, विद्युत प्रवाह और एमीटर और वोल्टमीटर का उपयोग करके विभवांतर आदि।

आमतौर पर उपलब्ध सामग्रियों को इकट्ठा करें, विज्ञान प्रदर्शनियों, विज्ञान क्लब, क्लास-रूम में माता-पिता से मिलने के दौरान उन्हें अपने प्रदर्श/मॉडल प्रदर्शित करने के लिए और बातचीत के दौरान उठाए गए प्रश्नों का उत्तर देने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

- कक्षाओं, प्रयोगशालाओं, पुस्तकालय, शौचालय, खेल के मैदान आदि के उन स्थानों की पहचान करें, जहाँ बिजली और पानी की बर्बादी हो रही है। प्राकृतिक संसाधनों और उनके संरक्षण के महत्व पर चर्चा हो सकती है, जिससे उनके दिन-प्रतिदिन के जीवन में अच्छी आदतों को अपनाने के लिए दृढ़ विश्वास पैदा होता है। विद्यार्थी ऐसे मुद्दों पर एक संवेदीकरण कार्यक्रम भी आयोजित कर सकते हैं।
- गतिविधियों/परियोजनाओं/प्रयोगों के अपने निष्कर्षों, जैसे कि अयस्कों से धातुओं का निष्कर्षण, इलेक्ट्रिक मोटर और जनरेटर का काम करना, इंद्रधनुष का बनना आदि को साझा करें। मौखिक और लिखित रूपों में उपयुक्त तकनीकी शब्दों/आकृतियों/तालिकाओं/आरेख आदि का उपयोग करके अपने निष्कर्षों को साझा करने के लिए रिपोर्ट लेखन के लिए सुविधा प्रदान की जा सकती है। उन्हें अपने प्रेक्षणों के आधार पर निष्कर्ष निकालने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- परिकल्पित स्थितियों पर अपने अधिगम को अनुप्रयुक्त करता है, जैसे कि क्या होगा यदि एक पारिस्थितिक तंत्र से सभी शाकाहारियों को बाहर निकाल दिया जाए? यदि ऊर्जा के सभी गैर-नवीकरणीय स्रोत समाप्त हो जाते हैं तो क्या होगा?
- दैनिक जीवन में और समस्याओं को हल करने मे वैज्ञानिक संकल्पंनाओ को अनुप्रयुक्त करता है, जैसे कि यौन-संचारित संक्रमणों को रोकने के लिए जागरूक रहता है, विभिन्न विद्युत उपकरणों के लिए उपयुक्त विद्युत प्लग (5/15 A) का उपयोग करता है, बागवानी में पौधे विकसित करने के लिए कायिक प्रर्वधन का उपयोग करता है, स्वास्थ्य अच्छा रखने के लिए व्यायाम करता है, ओजोन परत में कमी के लिए ज़िम्मेदार उपकरणों का उपयोग करने से बचता है, स्पंज केक आदि बनाने के लिए बेकिंग सोडा के अपघटन प्रतिक्रिया की अवधारणा को अपनाता है।
- सूत्र/समीकरण/नियम व्युत्पन्न करता है, जैसे शृंखला और समानांतर में संयोजित प्रतिरोधों के समतुल्य प्रतिरोध आदि।
- निष्कर्ष निकालता है, जैसे गुण/विशेषताएँ गुणसूत्रों पर मौजूद जीन के माध्यम से विरासत में मिलती हैं, एक नई प्रजाति विकासवादी प्रक्रियाओं के माध्यम से उत्पन्न होती है, जल हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से बना होता है, आवृत तालिका में समूहों और कॉलमों में तत्वों के गुण भिन्न होते हैं, एक धातु कंडक्टर के दो बिंदुओ के मध्य विभवांतर इसमें विद्युत प्रवाह के लिए आनुपातिक है आदि।
- वैज्ञानिक खोजों/आविष्कारों के बारे में जानने के लिए पहल करता है, जैसे कि मेंडेल की अनुवांशिकता की अवधारणा को समझने में योगदान, तत्वों के परीक्षणों की खोज के लिए डोबेरिनर त्रिक, तत्वों की आवर्ती सारणी के विकास के लिए मेंडेलीव, ओडस्टेड की खोज कि बिजली और चुंबकत्व आपस में संबंधित हैं, ओम द्वारा खोज कि एक धातु कंडक्टर के मध्य विभवांतर और विद्युत प्रवाह के बीच संबंध होता है आदि।

	• पर्यावरण अनुकूल संसाधनों का उपयोग करके मॉडल बनाने में रचनात्मकता का प्रदर्शन करता है, जैसे कि श्वसन के क्रियाकारी मॉडल, पाचन और उत्सर्जन प्रणाली क्रियाकारी मॉडल, सोडा एसिड अग्निशामक, आवर्ती सारणी, मिसेल का बनना, हीरा/ग्रेफ़ाइट/बकमिनिस्टर फुलरीन, मानव आँख, इलेक्ट्रिक मोटर और जनरेटर आदि निर्णय लेने में, जीवन के सम्मान में आदि। • ईमानदारी/निष्पक्षता/तर्कसंगत सोच/मान्यताओं/मिथ्या/अंधविश्वासों से मुक्ति का प्रदर्शन करता है, जैसे— रिपोर्ट और रिकॉर्ड प्रायोगिक डेटा को सटीक रूप प्रदर्शित करता, शराब के लिए मना करता है और दूसरों को इसके शारीरिक और मानसिक प्रभाव के बारे में संवेदनशील जानकारी देता है और मानसिक स्वास्थ्य, अंग दान के लिए प्रेरित करता है, प्रसव-पूर्व जेंडर निर्धारण आदि के परिणाम को समझते हैं आदि। • परिणामों और संचार को प्रभावी रूप से संप्रेषित करता है, जैसे कि उपयुक्त आँकड़े/तालिकाओं/आरेख/डिजिटल रूप आदि का उपयोग करते हुए मौखिक और लिखित रूप में प्रयोग/गतिविधि/परियोजना। • पर्यावरण के जीवीय और अजैव समझते हुए कारकों में आपस में निर्भरता और अंतरसंबंध को साकार करने के लिए पर्यावरण के संरक्षण के प्रयासों को करता है, जैसे कि बायोडिग्रेडेबल और गैर-बायोडिग्रेडेबल कचरे के पृथक्करण को बढ़ावा देता है, प्लास्टिक के न्यूनतम उपयोग पर बल देता है। दिन-प्रतिदिन जीवन में संसाधनों के स्थायी प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए उचित कदम उठाता है, ईंधन जो कम प्रदूषण पैदा करता है, के उपयोग का समर्थन करता है ऊर्जा दक्ष विद्युत उपकरणों का उपयोग करता है, जीवाश्म ईंधन का विवेकपूर्ण उपयोग करता है आदि।

एक समावेशी व्यवस्था में शैक्षणिक प्रक्रियाओं के लिए सुझाव

कक्षा में पाठ्यक्रम सभी के लिए समान होता है। इसका अर्थ है कि सभी विद्यार्थी, कक्षा में सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं। कुछ विद्यार्थी ऐसे हो सकते हैं, जिन्हें भाषा, दृश्य-स्थानिक या मिश्रित प्रसंस्करण समस्याओं सहित सीखने में कई प्रकार की कठिनाईयाँ हो सकती हैं। उन्हें अतिरिक्त शिक्षण सहायता और पाठ्यक्रम में कुछ अनुकूलन की आवश्यकता हो सकती है। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं पर विचार करके, शिक्षकों के लिए कुछ शैक्षणिक प्रक्रियाएँ नीचे दी गई हैं—

- सूचना श्रवण, घ्राण (गंध), स्पर्श के साथ-साथ दृश्य स्रोतों को एकीकृत करने के लिए बहु-विषयक दृष्टिकोण का उपयोग करें।
- आकार, आकृति, बनावट, पैटर्न और परिवर्तनों का अनुभव करने के लिए स्पर्श करने वाली वस्तुओं, सामग्रियों, जीवों, मॉडल आदि के माध्यम से सीखने का अनुभव प्रदान करें।
- पाठ्य-विवरण, चित्रों, आरेख और फ़्लो चार्ट आदि की व्याख्या के लिए उभारे गए रेखा चित्रों का उपयोग करें।
- अवधारणाओं, मात्रा आदि के विकास के लिए प्रत्यक्ष संवेदी अनुभव का उपयोग करें।
- प्रयोगों के दौरान साथियों के साथ काम करने के अवसर दें। पूरी कक्षा के लिए साझीदार बनाना, एक अच्छी कार्यनीति होगी।
- विद्यार्थियों को कक्षा के प्रस्तुतीकरण और चयन या पाठ को ऑडियो प्रारूपों में रिकॉर्ड करने की अनुमति दें।
- चित्रों को पाठ से लेबल करें, जब भी संभव हो, यह एक गतिविधि के रूप में विद्यार्थियों द्वारा किया जाना चाहिए।
- वास्तविक जीवन के अनुभवों के लिए परियोजनाओं और प्रयोगों से संबंधित हैं।
- समूहकार्य और परियोजना सहायता के लिए सहकर्मी सहायता को प्रोत्साहित करें।
- परियोजना दें और प्रयोग कम चरणों में करें और दृश्य संकेतों के माध्यम से चरणों का पालन करें। बेहतर समझ के लिए कक्षा या प्रयोगशाला में पूर्ण परियोजना/प्रयोग का उदाहरण प्रदर्शित करें।
- विद्यार्थियों के लिए समान या समान शिक्षण उद्देश्यों के साथ वैकल्पिक/कम कठिन गतिविधियों/अभ्यासों पर विचार करें।
- चॉकबोर्ड पर सभी होमवर्क असाइनमेंट और प्रयोगशाला प्रक्रियात्मक परिवर्तन लिखें।
- छात्र को एक प्रयोग में एक चरण पूरा करने के लिए समय दें, जब तक कि छात्र यह संकेत नहीं देता कि वह आगे काम के लिए तैयार है।
- विषयों को कक्षा की परियोजनाओं, प्रयोगों, उदाहरणों आदि के माध्यम से पढ़ाया जा सकता है। किसी भी सिद्धांत और अवधारणा को समझाने से पहले गतिविधियाँ बहुसंवेदी तरीके से संचालित की जा सकती हैं।

- किसी भी चित्र या तालिका बनाने में सहकर्मी के समर्थन का उपयोग किया जा सकता है। सहकर्मी कार्बन पेपर के साथ ड्रा (नकल के लिए) कर सकता है।
- मुख्य अवधारणाओं को हाईलाइट करें और रेखांकित करें।
- एक प्रयोग को पूरा करने और एक अवधारणा को समझने के लिए अतिरिक्त समय प्रदान करें।
- कार्य को नियोजित तरीके से व्यवस्थित करने के लिए हमेशा उचित दिशानिर्देश प्रदान करें। दृश्य-सहायक, ग्राफ़िक ऑर्गनाइज़र का उपयोग करें और बच्चे के सीखने तक प्रयोगों और अभिहस्तांकन के चरणों की व्याख्या करें।
- घटनाक्रम के अनुक्रम को समझने के लिए दृश्य संकेतों के साथ दृश्य मानचित्र प्रदान किया जा सकता है।

सामाजिक विज्ञान सीखने के प्रतिफल

परिचय

सामाजिक विज्ञान का प्रक्षेत्र सामान्य शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाता है। माध्यमिक स्तर पर, सामाजिक विज्ञान में समाज के विविध सरोकार शामिल किए गए हैं और इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान के विषयों से तैयार की गई विस्तृत सामग्री शामिल हैं। विषय क्षेत्र की सामग्री में समय, स्थान और संस्थानों में प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण के साथ मानव संबंधों की व्यापक समझ शामिल है। यह जानना आवश्यक है कि सामाजिक विज्ञान में स्वयं वैज्ञानिक जाँच के तरीकों को अपनाया जाता है, जो प्राकृतिक और भौतिक विज्ञान से अलग हैं। सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में मानव मूल्यों की स्वतंत्रता, विश्वास और विविधता के लिए सम्मान को बढ़ावा दिया जाता है। सामाजिक विज्ञान की शिक्षा बच्चों के व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण पर असर डालने वाले सामाजिक मुद्दों पर गंभीर रूप से प्रतिक्रिया देने के अवसर प्रदान करती है। इन विषयों से अन्य मूल्यों, जैसे— सहानुभूति, समानता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुत्व, गरिमा और सद्भाव भी विकसित होते हैं। सामाजिक विज्ञान के प्रत्येक अनुशासन में कार्यक्रमों, प्रक्रियाओं और घटनाओं के कारण और प्रभाव के संबंध को समझने के लिए तार्किक और तर्कसंगत दृष्टिकोण को समझने, विश्लेषण, मूल्यांकन और लागू करने के माध्यम से निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए जाँच का अपना तरीका है।

सामाजिक विज्ञान में एक सक्षम पाठ्यचर्या के लिए, कुछ विषय जो अंतर-विषयक सोच को सुविधाजनक बनाते हैं, विषयों में शामिल किए गए हैं। इसके विषय क्या, कहाँ, कौन, कब, कैसे आदि जैसे प्रश्नों को उठाकर जाँच में पर्याप्त गुंजाइश प्रदान करते हैं, जिससे विद्यार्थियों को विषयों के बीच और साथ ही उनके अंदर एक एकीकृत परिप्रेक्ष्य प्राप्त करने में मदद मिलती है, जिससे अंतर-अनुशासनिक दृष्टिकोण मज़बूत होता है। एक उदाहरण लिया जा सकता है, कृषि, विकास, आपदा आदि जैसे विषयों का अध्ययन इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र और राजनीति शास्त्र के परिप्रेक्ष्य से किया जा सकता है।

सामाजिक विज्ञान विद्यार्थियों को देश की समृद्ध और विविध सांस्कृतिक विरासत की सराहना करने के लिए संवेदनशील बनाता है। विद्यार्थी स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में ज्ञात और कम ज्ञात व्यक्तियों और घटनाओं द्वारा किए गए योगदान का मूल्यांकन करने में गर्व का अनुभव करते हैं। ये विषय विद्यार्थियों को हमारे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और परिरक्षण पर ज़ोर देने और सामाजिक समस्याओं और प्राकृतिक आपदाओं से संबंधित चुनौतियों का सामना करने के साथ स्थायी विकास के महत्व को पहचानने में सहायता करते हैं। ये विषय आर्थिक विकास को प्राप्त करने के लिए संसाधनों के महत्व, उनके समान वितरण और उपयोग को समझने में सहायता करते हैं। ये स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक दृष्टिकोण से लोकतांत्रिक सिद्धांतों, नागरिकता, अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में

जागरूकता पैदा करते हैं। इसके अन्य फ़ोकस संघर्ष क्षेत्र के समाधान कौशलों का निर्माण और शांति निर्माण प्रक्रियाओं को मज़बूत करना हैं। ये जेंडर, हाशिए के वर्गों और विशेष ज़रूरतों वाले व्यक्ति के प्रति संवेदनशीलता और सहानुभूति को बढ़ावा देने में मदद करते हैं, जैसे— आदिवासी, अनु. जाति और अनु. जनजाति।

पाठ्यक्रम से अपेक्षाएँ

इस चरण पर विद्यार्थियों से इनके विकास की अपेक्षा की जाती है कि वे —

- प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण के साथ अंतर-संबंध स्थापित करने में ज्ञान के क्षेत्र की सार्थकता को पहचानें।
- घटनाओं, प्राकृतिक और सामाजिक प्रक्रियाओं के संदर्भ में इनके कारण और प्रभाव संबंधों को वर्गीकृत और तुलना करें और समाज के विभिन्न वर्गों पर उनके प्रभाव को समझें।
- विविधता, लोकतंत्र, विकास, विविध कारकों और हमारी सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध करने वाली ताकतों जैसी संकल्पनाओं की व्याख्या करें।
- प्राकृतिक सामाजिक घटनाओं को समझने में दृष्टिकोणों की बहुलता को विकसित करने की आवश्यकता पर चर्चा करें।
- एकीकरण और अंतर्संबंधों के अंदर और विविध विषयों पर विभिन्न तरीकों का प्रदर्शन करें। समकालीन दुनिया में घटनाओं, प्रक्रियाओं और घटनाओं की स्थानिक परिवर्तनशीलता की पहचान करें। लोकतांत्रिक लोकाचार, इक्विटी, आपसी सम्मान, समानता, न्याय और सद्भाव की पहचान करें।
- अवलोकन, पूछताछ, प्रतिबिंब, सहानुभूति, संचार और महत्वपूर्ण सोच का कौशल प्रदर्शित करें।
- पर्यावरणीय मुद्दों, सतत् विकास, जेडर में असमानताओं, समाज के हाशिए पर मौजूद वर्गों और विशेष ज़रूरतों वाले व्यक्तियों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता के भावों में सक्रिय सहयोगी बनें।
- प्रौद्योगिकी की सहायता से विभिन्न विषयों से संबंधित अवधारणाओं को स्पष्ट करें।

सीखने के प्रतिफलों को सामाजिक विज्ञान के विषय-संज्ञान को कक्षा 9 और 10 के लिए मोटे तौर पर 12 व्यापक भागों में बाँटा गया है। प्रत्येक भाग समान प्रकार की दक्षताओं के सेट से संबंधित है और इसमें सामाजिक विज्ञान की प्रकृति के आधार पर सामग्री को जोड़ने वाले कुछ सीखने के प्रतिफल शामिल हैं। कुछ सीखने के प्रतिफल सामान्य रूप से 9 और 10 दोनों कक्षाओं में मिल सकते हैं। शिक्षक विभिन्न उदाहरणों का उपयोग करके इनके साथ काम कर सकते हैं। ये विभिन्न सामाजिक विज्ञानों में उनके महत्व और सामग्री को ध्यान में रखते हुए विकसित किए गए हैं। सीखने के प्रतिफल को समझने के लिए अवधारणाओं, ऐतिहासिक घटनाओं, स्थानों, नामों और तिथियों का उपयोग किया जाता है। इन्हें राज्यों द्वारा अपने सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के आधार पर बदला जा सकता है।

कक्षा 9

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से या समूहों में अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे— • भारत के राजनीतिक मानचित्र या स्कूल भुवन पोर्टल एनसीईआरटी का निरीक्षण करें, इसमें राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के स्थान, सीमा, प्रकार, आकार आदि के संदर्भ में चिह्नित करें। • अन्य स्रोतों, जैसे— अन्य राज्यों की वेबसाइट, पाठ्यपुस्तकें, एटलस, मॉडल आदि से राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के बारे में जानकारी पर चर्चा और सत्यापन करें। • भाषाओं, भोजन, पोशाक, सांस्कृतिक परंपराओं आदि के संदर्भ में राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए परियोजनाओं में संलग्न रहें। • जीन-पॉल मारत, जीन जैक्स रूसो जैसे तथा अन्य प्रख्यात विचारकों के कामों का चयन करें और फ्रांसीसी क्रांति के प्रकोप पर उनके कार्यों का प्रभाव जानें। • महत्वपूर्ण राजनीतिक नियमों और अवधारणाओं, जैसे कि मार्शल लॉ, एक तख्तापलट, एक वीटो और जनमत संग्रह के लिए लोकतंत्र के साथ-साथ तानाशाही की चर्चा में भी भाग लें। • विवरणों पर चर्चा करें (क) उस समय जब सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार पहली बार नागरिकों को प्रदान किया गया था और (ख) उपनिवेशवाद का अंत कैसे हुआ था। • भारतीय संविधान पर जानकारी एकत्र करें और इसके निर्माण की प्रक्रिया पर चर्चा करें। • अपने परिवेश से उत्पादन के विभिन्न कारकों, जैसे— भूमि, पूंजी और मानव संसाधनों का विवरण एकत्र करें। • पास के राशन की दुकान चुनें और स्थानीय बाज़ार के साथ उपलब्ध वस्तुओं की कीमतों की तुलना करें और मतभेदों के कारणों पर चर्चा करें। • खाद्य सुरक्षा में सहकारी की भूमिका का विश्लेषण। • गरीबी, खाद्य सुरक्षा, मानव संसाधन विकास पर ई-सामग्री सहित विभिन्न संसाधनों का अन्वेषण करें।	**विद्यार्थी—** • तथ्यों, आँकड़ों को पहचानता और पुनः प्राप्त करता है और प्रक्रियाओं को अभिव्यक्ति दे पाता है— ▪ भारत के मानचित्र पर स्थान, राज्य, संघ राज्य क्षेत्र और अन्य भौतिक विशेषताएँ बता सकता है। ▪ विभिन्न भौतिक विशेषताओं, वनों के प्रकार, मौसम आदि को पहचानता है और उनका वर्णन करता है। ▪ भूगोल में महत्वपूर्ण शब्दों में, जैसे— मानक मध्याह्न, जल निकासी बेसिन, जल विभाजन, मानसून, मौसम, जलवायु, वनस्पति, जीव, जनसंख्या घनत्व आदि का वर्णन करता है। ▪ वार्षिक विकास दर का अनुमान लगाता है। ▪ गरीबी, साक्षरता, बेरोज़गारी, लोगों की गिनती अनुपात, खाद्य सुरक्षा, निर्यात और आयात जैसे सरल आर्थिक शब्दों को परिभाषित करता है। ▪ उत्पादन के विभिन्न कारकों को सूचीबद्ध करता है। ▪ नाम, स्थान, वर्ष, कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक घटनाओं को याद करता है, जिन्होंने भारत और दुनिया को बदल दिया जैसे कि अमेरिकी क्रांति, फ्रांसीसी क्रांति, रूसी क्रांति और भारत में स्वतंत्रता संग्राम। ▪ मानचित्र पर ऐतिहासिक महत्व के स्थानों का पता लगाता है। ▪ कुछ एक सामाजिक समूहों की अर्थव्यवस्थाओं और आजीविकाओं का वर्णन करता है। ▪ लोकतंत्र और तानाशाही से जुड़े राजनीतिक शब्दों और संकल्पनाओं का वर्णन करता है। जैसे कि स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, न्याय की स्वतंत्रता, जवाबदेही, विधि का शासन इत्यादि। ▪ परिवेश में भौतिक सुविधाओं को वर्गीकृत करता है और उनकी तुलना अन्य स्थानों की भौतिक विशेषताओं से करता है। जनसंख्या, वर्षा जैसे विभिन्न आँकड़ों की तुलना करता है।

- चर्चा करें कि गरीबी रेखा का अनुमान विशेष रूप से सामाजिक वैज्ञानिकों के दृष्टिकोण से कैसे लगाया जाता है।
- आस-पास की भौतिक विशेषताओं के बारे में जानकारी इकट्ठा करें, साथियों के साथ इन विशेषताओं के बारे में चर्चा करें; अन्य प्राकृतिक भूगोल-संबंधी विभाजनों से संबंधित दृश्य दिखाए जा सकते हैं और उनकी विशेषताओं को समझाया जा सकता है।
- समानताएँ और अंतर देखने के लिए विभिन्न प्राकृतिक भूगोल-संबंधी विभाजन/डेटा।
- भारत की भौतिक विशेषताओं को वर्गीकृत करने के लिए स्पर्श मानचित्र/मॉडल का उपयोग करें।
- डेस्मोलिन और रॉबेस्पायर के विभिन्न विचारों को जानने की कोशिश करते हैं कि उन्होंने राज्य बल का किस प्रकार उपयोग किया, अत्याचार के खिलाफ़ स्वतंत्रता की लड़ाई से रॉबेस्पायर का क्या अभिप्राय है, डेस्मोलिन आज़ादी को किस तरह समझते हैं?
- विभिन्न स्रोतों से फ्रांस की संवैधानिक राजशाही के बारे में जानकारी इकट्ठा करें।
- ब्रिटेन, सऊदी अरब और भूटान जैसे समकालीन समय के विभिन्न राजतंत्रों पर चर्चा करें।
- फ्रेंच और रूसी क्रांति के बुरे प्रभाव से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाओं पर समयरेखा विकसित करें। फ्रांस के संबंध में कुछ घटनाओं को समय रेखा में प्रदर्शित किया जा सकता है— संवैधानिक राजतंत्र, मानव अधिकार की घोषणा, गणतंत्र बनने पर और आतंक का शासन। इस समय-रेखा में छात्र फ्रांसीसी क्रांति पर और अधिक जानकारी जोड़ सकते हैं।
- सरकार के विभिन्न प्रकारों की सुविधाओं का अध्ययन करें और चर्चा करें।
- सामाजिक बहिष्कार के साथ-साथ गरीबी उन्मूलन पर एक समूह परियोजना तैयार करें।
- विक्रेताओं, जैसे— सब्जी, अखबार, दूधवाला, लॉन्ड्री (कम से कम दस लोग) से साक्षात्कार लें। उन्हें सरल प्रश्न तैयार करने और व्यापक निष्कर्ष का विकास करने के लिए निर्देशित किया जा सकता है।
- विभिन्न नदियों का पता लगाएँ, नदी के किनारों पर उनके उद्भव, नदी के बहाव के दौर, प्रमुख शहरों, उद्योगों का विवरण खोजें।

  - दुनिया में महत्वपूर्ण क्रांतियों, जैसे— फ्रेंच और रूसी क्रांतियों के लिए अग्रणी घटनाओं के दौर की तुलना करता है।
  - दुनिया भर में संचालित विभिन्न प्रकार की सरकारों के बीच अंतर जानता है।
  - भारतीय राज्यों में गरीबी और बेरोज़गारी के स्तर की तुलना करता है।
  - समकालीन समय, जैसे— ब्रिटेन, सऊदी अरब और भूटान के विभिन्न राजतंत्रों की तुलना करता है।
- घटना, कार्यक्रमों और उनकी घटना के बीच कारण और प्रभाव संबंध बताता है, जैसे —
  - प्रदूषण और लोगों के जीवन पर उनके प्रभाव डालने वाले कारकों की जाँच करता है।
  - एक क्षेत्र की नदी, जलवायु, जनसंख्या वितरण, वनस्पतियों और जीवों को प्रभावित करने वाले कारकों की व्याख्या करता है।
  - विभिन्न क्रांतियों के कारणों और प्रभावों की व्याख्या करता है।
  - यह बताता है कि समकालीन दुनिया में विभिन्न सामाजिक समूहों ने कैसे बदलावों का सामना किया और इन परिवर्तनों का वर्णन करता है।
  - क्रांति और सामाजिक परिवर्तन के बीच अंतर को समझाता है।
  - दुनिया के विभिन्न देशों में लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक शासन के गठन की रूपरेखा बनाता है।
  - लोकतांत्रिक देशों में परिवर्तन की प्रक्रिया की व्याख्या करता है, जैसे— लोकतंत्र, न्याय, स्वतंत्रता, समानता इत्यादि।
  - भारतीय नागरिकों के लोकतांत्रिक अधिकारों की पहचान करता है।
  - गरीबी, भूमिहीनता, खाद्य असुरक्षा जैसे आर्थिक मुद्दों के कारणों और प्रभावों की व्याख्या करता है।
  - सामाजिक बहिष्कार और भेद्यता के प्रभाव का विश्लेषण करता है।

- नदियों के प्रदूषण के लिए शहरों में लोगों के जीवन को प्रभावित करने वाली नदी पर चर्चा करें।
- समूह परियोजनाओं पर काम करें, जिसमें वे विभिन्न स्रोतों से जानकारी एकत्र कर सकते हैं, जैसे— किताबें, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, इंटरनेट, बुज़ुर्ग और एक मानचित्र पर नदी और संबंधित निष्कर्षों को अंकित करें और एक रिपोर्ट तैयार करें।
- विशेष आवश्यकताओं (सीडब्ल्यूएसएन) वाले बच्चों द्वारा विशेष रूप से स्पर्श मानचित्र के साथ काम करें।
- 1905 में रूसी क्रांति के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारणों की पहचान करना; एक प्रवाह चार्ट, पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन, उस अवधि से संबंधित समाचार पत्र की कतरन (1905) जैसे कई प्रकार के शिक्षण सहायक उपकरण का उपयोग करें।
- दुनिया के मानचित्र पर फ्रेंच और रूसी क्रांति के स्थानों को ज्ञात करें।
- एक चर्चा में भाग लें जो फ़रवरी 1917 में राजशाही के पतन पर, मज़दूरों की हड़ताल, मज़दूरों द्वारा किराया देने से इंकार और विभिन्न राजनीतिक दलों, जैसे— लिबरल, सोशल डेमोक्रेट्स और सामाजिक क्रांतिकारियों की गतिविधियों पर की जाए।
- यह चर्चा क्रांति और सामाजिक परिवर्तन की अवधारणाओं पर शुरू की जा सकती है।
- इस विचार को स्पष्ट करें कि फ्रांसीसी और रूसी की तरह कुछ क्रांतियाँ रक्त-बहाव का परिणाम हैं।
- शांतिपूर्ण क्रांतियों पर चर्चा करें, जैसे— भारत में औद्योगिक क्रांति, हरित, श्वेत और नीली क्रांतियों पर चर्चा करें।
- मीडिया और अन्य स्रोतों से वर्तमान विवरण एकत्र करें और लोकतंत्र की सफलता के उपाय पर चर्चा करें।
- दुनिया के लोकतांत्रिक देशों और उनकी स्थापना के इतिहास, उन परिस्थितियों के बारे में जानकारी एकत्रित करें और उन पर चर्चा करें, जिनके तहत सरकारें स्थापित हुईं।

- कुछ उदाहरणों के साथ लोगों द्वारा, लोगों के लिए, लोगों की सरकार के रूप में लोकतंत्र पर चर्चा करें।
- अखबार की कतरन पर चर्चा हो सकती है या शिक्षक सरकारी रिपोर्ट से गरीबी, खाद्य सुरक्षा पर डेटा प्रदान कर सकते हैं।
- प्रमुख जलवायु नियंत्रणों से परिचित होना— अक्षांश, ऊँचाई, दबाव और हवा प्रणाली और समुद्र से दूरी और चर्चा करना कि वे विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों की जलवायु को कैसे प्रभावित करते हैं।
- चर्चा करें कि कैसे पहाड़ी क्षेत्रों की जलवायु मैदानी क्षेत्रों से काफ़ी अलग है।
- औपनिवेशिक शासन के दौरान भारत सहित दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में अतीत में वनों की कटाई के लिए ज़िम्मेदार कारकों जैसे विषयों की जाँच करने के लिए लिखित रिकॉर्ड, मौखिक विवरणों जैसे विभिन्न प्राथमिक और माध्यमिक स्रोतों का उपयोग करें।
- भारत में विभिन्न वन अधिनियमों पर चर्चा— वन अधिनियम—1865, 1878 और 1927 में इसका संशोधन और वनवासियों और ग्राम समुदाय पर इसका प्रभाव।
- नाज़ीवाद चर्चा के उदय पर हिटलर के दृश्य, अख़बार की कतरनें, पोस्टर, पत्रक, वीडियो और भाषण एकत्र करें कि कैसे नाज़ीवाद से नरसंहार युद्ध आगे बढ़ा जिसके परिणामस्वरूप यहूदियों, जिप्सी और पोलिश नागरिकों जैसे निर्दोष नागरिकों की हत्या हुई।
- मॉक पार्लियामेंट और अदालती कार्यवाही का आयोजन करें, जिसमें विभिन्न लोकतांत्रिक अधिकार विषय हो सकते हैं।
- अकाल से जुड़े दृश्य दिखाएँ और वर्तमान ओएमटी (एक मिनट की बात) पेश करें।
- विभिन्न मानचित्रों का सहसंबंध समझें, उदाहरण के लिए– भौतिक सुविधाएँ और जल निकासी, भौतिक सुविधाएँ और जनसंख्या।

- विश्लेषण और जानकारी का मूल्यांकन करता है, जैसे—
  - भारत/विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में पाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की जलवायु का विश्लेषण करता है।
  - वनों की कटाई के लिए अग्रणी कारकों की जाँच करता है।
  - भारतीय संसद और न्यायपालिका के कामकाज की रूपरेखा बनाता या आकलन करता है।
  - साक्षरता और गरीबी जैसे महत्वपूर्ण विकास संकेतकों में ऐतिहासिक रुझानों का विश्लेषण करता है।
  - महत्वपूर्ण सरकारी कल्याण कार्यक्रमों के प्रभाव का आकलन करता है, जिसका उद्देश्य (क) गरीबी उन्मूलन है (ख) खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना; (ग) स्व-रोज़गार के अवसर प्रदान करना (घ) स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएँ प्रदान करना।
- व्याख्या करता है, उदाहरण के लिए—
  - भारत में नदी प्रणालियों के मानचित्र, प्राकृतिक भूगोल संबंधी, जनसंख्या वितरण।
  - दुनिया के बाकी हिस्सों के लिए माल और लोगों के आवागमन के मानचित्र।
  - ग्रंथ
  - प्रतीक जो स्वतंत्रता, समानता बिरादरी के लिए बने हैं।
  - कार्टून

- स्कूल भुवन-एनसीईआरटी पोर्टल पर विभिन्न नक्शों का पता लगाएँ और उन्हें ओवरले करने के अवसर प्रदान किए जा सकते हैं।
- विभिन्न अवधारणाओं को समझने के लिए एटलस मानचित्र का उपयोग करें।
- फ्रेंच और रूसी जैसी विभिन्न क्रांतियों से जुड़े स्थानों का पता लगाने का कौशल प्रदर्शित करें।
- अतीत और वर्तमान में स्थानों की भौगोलिक सीमाओं के परिवर्तन और उन कारणों के बारे में बताएँ, जिनके कारण यह हुआ है। आप इसे पाठ्यक्रम/पाठ्यपुस्तकों में विषय के साथ जोड़ सकते हैं।
- विभिन्न प्रतीकों का अध्ययन करें जो भारत और दुनिया की रूपरेखा मानचित्र पर सड़क, रेलवे, इमारतों, स्मारकों, नदियों आदि का चित्रण करते हैं। इसका उपयोग अध्ययन के तहत थीम के अनुसार किया जा सकता है।
- एक आर्थोफ़ोटो मानचित्र से जानकारी की व्याख्या करें और वास्तविकता के साथ तुलना करें।
- राज्यों और संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों के सीमांकन के लिए भारत के राजनीतिक मानचित्र का उपयोग करें।
- निम्नलिखित (1) उच्च और निम्न गरीबी (2) साक्षरता स्तर (3) खाद्यान्नों के उत्पादन और राज्यों के बीच अंतर के कारणों के संदर्भ में व्याख्या करने के लिए भारत के राज्यों के नक्शे का उपयोग करें।
- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में विभिन्न व्यवसायों में लगे व्यक्तियों की तसवीरें चुनें और अर्थव्यवस्था के तीन क्षेत्रों में वर्गीकृत करें।
  (1) शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में मौजूद बेरोज़गारी
  (2) विभिन्न राज्यों में मौजूद गरीबी पर अपने परिवेश और सरकार की रिपोर्ट से डेटा संकलित करें।
- जनसंख्या के संबंध में साक्षरता दर, खाद्यान्नों के उत्पादन और खाद्य असुरक्षा के आँकड़ों का प्रतिनिधित्व करने के लिए तालिकाओं का उपयोग करें और जनता के कल्याण के संदर्भ में इनकी व्याख्या करें।

- तसवीरें
- पोस्टर
- सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों से संबंधित अखबार की कतरनें।
- कृषि उत्पादन, साक्षरता, गरीबी और जनसंख्या से संबंधित डेटा के पाई और बार आरेखों को तैयार करता है।

- तालिकाओं से बार और पाई आरेख बनाएँ और इनमें परिवर्तित करें।
- अखबार की कतरनों से समझाएँ या शिक्षक, सरकार की रिपोर्ट में से गरीबी, खाद्य सुरक्षा, सामाजिक बहिष्कार और भेद्यता पर, उनके कारणों और समाज पर प्रभाव के बारे में डेटा प्रदान कर सकते हैं।
- बार/पाई आरेख विकसित करें और आरेख में डेटा को प्लॉट करें, उदाहरण के लिए— जनसंख्या डेटा, प्राकृतिक वनस्पति आदि।
- विषयों का अन्य विषयों के साथ सहसंबंध बनाएँ, जैसे कि उत्तर में विभिन्न मार्ग और दक्षिण में बंदरगाह होने से यात्रियों को मार्ग प्रदान किया है और प्राचीन काल से विचारों और वस्तुओं के आदान-प्रदान में इन मार्गों द्वारा कैसे योगदान दिया गया है?
- औपनिवेशिक काल में वनों की कटाई और वनवासियों के जीवन पर उनके प्रभाव; औपनिवेशिक और समकालीन समय में वन के अंतर्गत आने वाली भूमि की सीमा जैसे भौगोलिक पहलुओं के साथ जुड़ी वनों की कटाई पर चर्चा करें।
- चर्चा करें कि अतीत और वर्तमान में वन अधिनियम महिलाओं सहित विभिन्न आदिवासी समुदायों को कैसे प्रभावित करते हैं।
- कुछ राजनीतिक विकासों और सरकार के फैसलों का अध्ययन करें और भौगोलिक महत्व और चुनावी क्षेत्रों की दृष्टि से उन्हें देखें।
- देशों के भू-राजनीतिक महत्व को रेखांकित करके विभिन्न देशों में लोकतांत्रिक आंदोलनों का इतिहास पढ़ें।
- 1940 की ऐतिहासिक घटनाओं और 1946-49 के दौरान भारत में संविधान बनाने का अध्ययन करें।
- भूगोल और कृषि के घटक के रूप में उत्पादन और खाद्य सुरक्षा जैसे कारकों के साथ भूगोल में संसाधनों के हिस्से के रूप में भूमि और कृषि के मुद्दों पर फ़ोकस करें।
- सामाजिक विज्ञान के साथ अंतर-संबंध जोड़ता है, उदाहरण के लिए—
  - ऐतिहासिक काल से व्यापार और संचार के लिए भारत में विभिन्न रास्तों और समुद्री बंदरगाहों के बीच अंतर्संबंध बताता है।
  - चुनावी निर्वाचन क्षेत्रों के भौगोलिक महत्व की जाँच करता है। कृषि के एक घटक के रूप में खाद्य सुरक्षा का विश्लेषण करता है।
  - जनसंख्या वितरण और खाद्य सुरक्षा के बीच संबंधों का विश्लेषण करता है।
  - वनवासियों, आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण सहित विभिन्न सामाजिक समूहों के आजीविका पैटर्न के बीच अंतर्संबंधों की व्याख्या करता है।

- लोकतंत्र में मनुष्यों के अधिकार को उजागर करने के लिए राजनीतिक आयामों के साथ संबंध जानें और नागरिकों को अर्थव्यवस्था के लिए एक संपत्ति के रूप में देखें।
- 3 शेड्स, मिर्च मसाला, मंथन जैसे— चलचित्र, वृत्तचित्र दिखाएँ और इन्हें कम आय और गरीबी से जोड़ दें, जिसके बाद कक्षा में आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संघर्ष पर चर्चा की जा सकती है।
- राष्ट्रीय जनसंख्या नीति–2000 पढ़ें और किशोरावस्था से संबंधित इसकी सामग्री पर चर्चा करें।
- जब वे विभिन्न लेखकों के साहित्यिक कार्यों को पढ़ते हैं तो तथ्य और कथा के बीच के अंतर को समझने के लिए ऐतिहासिक स्रोतों की व्याख्या करें।
- हमारे ऐतिहासिक अतीत के विभिन्न बिंदुओं पर आधारित उपन्यासों, जीवनी और कविताओं का आकलन करें।
- विभिन्न लोगों की धारणाओं, पूर्वाग्रहों और पूर्वधारणाओं का पता लगाने और उन पर चर्चा करने के लिए चित्रों, कार्टून और अखबारों की कतरनों का उपयोग करें। शिक्षक, विद्यार्थियों को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक पहलुओं से उदाहरणों का उपयोग करके तथ्यों और विचारों के बीच अंतर को पहचानने के लिए मार्गदर्शन दे सकते हैं।
- पुरातात्विक अवशेष, आधिकारिक रिकॉर्ड, मौखिक ब्यौरों जैसे अन्य स्रोतों का उपयोग करके अध्ययन के तहत अवधि की समग्र तसवीर का पता लगाएँ और इसका निर्माण करें। निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा शुरू की जा सकती है—
  - यह स्रोत किस के बारे में है?
  - लेखक कौन है?
  - इससे क्या संदेश निकाला जा सकता है?
  - क्या यह प्रासंगिक/उपयोगी है?
  - क्या इससे घटना को समग्रता में समझा जाता सकता है?
  - यह समझना कि ऐतिहासिक रिकॉर्ड रखने वाला व्यक्ति, व्यक्तिवाद से मुक्त नहीं है।

- मान्यताओं/पूर्वाग्रहों/रूढ़ियों की पहचान करता है, उदाहरण के लिए—
  - ग्रंथ
  - दृश्य
  - राजनीतिक विश्लेषण
  - समाचार
  - भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में लोग
  - महत्वपूर्ण सरकारी कल्याण कार्यक्रम

- फ़्रांसीसी क्रांति के दस्तावेज़ी उदाहरणों से इस नाटकीय रूप को पेश करें जो ओलेंपी गोज़ेस द्वारा पुरुषों और नागरिकों के अधिकार की घोषणा में से महिलाओं को बाहर करने के विरोध में इस ऐतिहासिक दस्तावेज़ में मौजूद पूर्वाग्रह को सामने लाने के लिए किया गया।
- नियमित रूप से टीवी या समाचारपत्रों के विभिन्न मुद्दों और घटनाओं पर दिए जाने वाले नेताओं के बयानों को देखें और नोट करें। शिक्षक, उदाहरण प्रदान कर सकते हैं और मान्यताओं, झुकावों, पूर्वाग्रहों और रूढ़ियों को इंगित करने के लिए एक मुद्दे पर छात्रों के अपने विचार भी हो सकते हैं।
- अपने क्षेत्र में मज़दूरी कर रहे पुरुषों और महिलाओं को भुगतान की गई मज़दूरी के विवरणों को सूचीबद्ध करें और चर्चा करें कि क्या अंतर मौजूद है, यदि कोई हो, तो कारण प्रदान किए जा सकते हैं।
- खाद्य सुरक्षा, रोज़गार सृजन, अपने क्षेत्र में स्वास्थ्य और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न सरकारी योजनाओं का विश्लेषण करें।
- मानसून के तंत्र को समझने के लिए प्रश्न पूछें, उदाहरण के लिए इससे ज़मीन और पानी के गर्म होने में अंतर का प्रभाव, इंटर ट्रांपिकल कन्वर्जेंस ज़ोन (आईटीसीजेड), एल नीनो और जेट स्ट्रीमों का स्थानांतरण मानसून को प्रभावित करता है।
- विभिन्न प्रकार के प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों को इकट्ठा करने के लिए जाँच कौशल का उपयोग करें और यह जानें कि फ़्रांस, यूरोप के बाकी हिस्सों और विभिन्न औपनिवेशिक संघर्षों में स्वतंत्रता, समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व से प्रेरित राजनीतिक आंदोलनों के आदर्श कैसे हैं; समूहों में इस क्षेत्र पर परियोजनाओं, पोस्टर और मल्टीमीडिया मॉडल तैयार किए जा सकते हैं।
- विभिन्न अखबारों, पत्रिकाओं और पुस्तकों से विभिन्न सामयिक, राजनीतिक, सामाजिक या स्थानीय मुद्दों पर विवरण एकत्र करें। समान मुद्दों के बारे में विभिन्न विचारों की तुलना करें।

- जिज्ञासुता/पूछताछ के कौशल को प्रदर्शित करता है अर्थात् इससे संबंधित प्रश्नों को प्रस्तुत करता है, उदाहरण के लिए—
  - भौगोलिक घटनाएँ जैसे मानसून का तंत्र और प्राकृतिक आपदाओं का कारण।
  - भारत/उनके अपने क्षेत्र में हरित क्रांति का प्रभाव।
  - भारत और दुनिया में फ्रांसीसी क्रांति की विरासत।

- वंचित समूहों द्वारा सामना की जाने वाली सुभेद्यता के बारे में एक विशेष आर्थिक समस्या की व्याख्या करें।
- हरित क्रांति पर सामग्री का विश्लेषण।
- डेटा/अनुभवों से विवरण का पता लगाएँ, उदाहरण के लिए (क) किसी स्थान की भौगोलिक विशेषता वितरण को कैसे प्रभावित करती है; (ख) किसी क्षेत्र की जलवायु परिस्थितियाँ किसी स्थान की प्राकृतिक वनस्पति को कैसे प्रभावित करती हैं?
- बाघ और नदियों के संरक्षण परियोजना जैसे विषयों पर एक रोल-प्ले तैयार कराएँ और भारत में बाघ संरक्षण की प्रासंगिकता पर चर्चा करें।
- उन जीवित किंवदंतियों के साक्षात्कार रिकॉर्ड या इकट्ठा (इंटरनेट/यूट्यूब से) करें, जिन्होंने नाज़ीवाद के अत्याचारों और कष्टों का अनुभव किया है।
- ई-सामग्री दिखाएँ और जनसंख्या की गुणवत्ता से संबंधित मामले के अध्ययन का विश्लेषण करें।
- विभिन्न स्रोतों, जैसे कि दैनिक समाचारपत्रों से मौसम और आबादी से संबंधित जानकारी एकत्र करें और रिकॉर्ड किए गए डेटा/सूचना का विश्लेषण करें।
- फ्रांसीसी क्रांति पर एक रोल प्ले तैयार करें और इसमें पादरी, राजवंश, व्यापारियों, किसानों और कारीगरों की भूमिका निभाएँ, प्रत्येक समूह के फेसिलिटेटर द्वारा प्रत्येक वर्ग की भावनाओं से उनकी धारणाओं का निष्कर्ष निकाला जा सकता है।
- भारत में अकाल के बारे में जानकारी एकत्र करें। औपनिवेशिक काल में अकालों के कारणों का अन्वेषण करें।
- समस्या पैदा करने वाले कारकों की पहचान करना और नदी प्रदूषण, जनसंख्या वृद्धि, वनस्पतियों और जीवों की सुरक्षा आदि से संबंधित समाधानों तक पहुँचने के लिए रचनात्मक और गंभीर रूप से निर्णय लेना।
- इस विषय पर एक वर्ग बहस का आयोजन करना कि— क्या मानव अधिकार उल्लंघन के विभिन्न रूपों को संबोधित करने के लिए हिंसा का उपयोग उचित दृष्टिकोण है या नहीं।

- एकत्रित/दी गई जानकारी के आधार पर तर्कों/विचारों का निर्माण करता है, उदाहरण के लिए—
  - विभिन्न जलवायु परिस्थितियों के साथ लोगों और उनके अनुकूलन
  - जीवित ऐतिहासिक किंवदंती निर्माताओं के मौखिक और लिखित ब्यौरे
  - संसाधन के रूप में लोग
- कार्यक्रमों और घटनाओं का पहले से अनुमान लगाता है, उदाहरण के लिए—
  - मौसम
  - प्रदूषण और बीमारियाँ
  - अकाल और गरीबी
- निर्णय लेने/समस्या सुलझाने के कौशल दर्शाता है, उदाहरण के लिए—
  - जल प्रदूषण के प्रभाव को कम करना
  - संसाधनों का संरक्षण
  - भोजन की कमी की समस्या
  - भारत में भूख और अकाल से बचें
  - ऐतिहासिक घटनाओं और विकास में संसाधनों की उपयुक्तता पर निर्णय लेना

- योजना और पाठ्येतर गतिविधियों में भाग लेना, स्कूल में दैनिक काम, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, जिनमें समस्या को हल करने और निर्णय लेने के कौशल की आवश्यकता होती है।
- कुछ सीमित लोगों के हाथों में संसाधनों के जमाव के प्रभाव को दिखाने के लिए समाचार पत्र और पत्रिकाओं को ठीक करें।
- अमीर और गरीब के बीच संसाधनों के वितरण के संदर्भ में असमानता के कारण और प्रभाव का वर्णन करें।
- वनस्पतियों और जीवों के मूल्यों और आपदा तैयारियों और अपशिष्ट प्रबंधन परियोजनाओं को पहचानने के लिए समूह परियोजनाओं में भाग लें।
- पर्यावरण (पौधों, जलाशयों आदि) के संरक्षण, जल विवादों— अंतरराज्यीय और सीमा पार और प्रकृति-मानव स्थायी संबंधों को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों में भाग लें।
- अपने नागरिकों के लिए स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और नौकरी की सुरक्षा को सुरक्षित करने के लिए सवाल उठाना; समुदाय के लोगों को इन मुद्दों को सुधारने के लिए प्रस्तुति देने के लिए आमंत्रित किया जाना चाहिए।
- विभिन्न संसाधनों, जैसे कि फ़िल्मों, ऑडियो विज़ुअल्स और रिकॉर्ड्स की फ़ोटोकॉपी, निजी कागज़ात, और विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़े नेताओं के मूल भाषणों सहित पुरातात्विक संग्रह से प्रेस क्लीपिंग को संकलित करना।
- नाजीवाद और आदिवासी विद्रोह जैसे विषयों पर परियोजनाओं का निर्माण करें।
- भारत की स्वतंत्रता प्राप्त करने में गांधीजी द्वारा अपनाई गई सत्याग्रह और अहिंसा की रणनीति पर चर्चा करें, स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न आंदोलन पर चर्चा करें जहाँ नेताओं द्वारा अपार ताकत और साहस को पहचानने के लिए सत्याग्रह को अपनाया गया था।

- संवेदनशीलता और प्रशंसा कौशल दर्शाता है, उदाहरण के लिए—
  - समाज के विभिन्न दिव्यांग और अन्य सीमांत वर्गों जैसे अनुसूचित जनजाति के साथ सहानुभूति रखता है।
  - राजनीतिक विविधता की सराहना करता है।
  - सांस्कृतिक विविधता की सराहना करता है।
  - धार्मिक विविधता की सराहना करता है।
  - भाषा विविधता को पहचानता है।
  - सामाजिक विविधता को पहचानता है।
  - प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाओं, अन्य युद्ध व राजनीतिक संघर्ष से प्रभावित लोगों के साथ सहानुभूति रखता है।
  - शारीरिक और मानसिक हिंसा एवं अन्य यातनाओं की मर्मतता से मानव को कैसे अत्यधिक पीड़ा होती है इसके लिए संवेदनशील रहता है।
  - स्वच्छता, समय की पाबंदी और नियमों का अनुपालन और एक ज़िम्मेदार नागरिक होने का कर्तव्य निभाता है।

• होलोकॉस्ट के जीवंत अनुभवों के प्रकाशित रिकॉर्डों का पता लगाना और उनकी जाँच करना। • वंचित समूहों, अल्पसंख्यकों की स्थितियों में सुधार के लिए उपलब्ध संवैधानिक प्रावधानों का अध्ययन करें, देशभक्ति, देश की एकता, लोगों की समानता, सभी मनुष्यों के लिए सम्मान और अपने कर्तव्यों का पालन करना आदि। • आबादी के लिए खाद्य असुरक्षा के साथ-साथ गरीबों के सामने आने वाली समस्या को उजागर करने के लिए रोल-प्ले/लघु नाटक करें और इसके बाद चर्चा करें। • लक्षित आबादी के लिए आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए अपने आस-पास के क्षेत्र में स्थापित राशन की दुकानों की शृंखला को पहचानें। • सभी के लिए जेंडर-समानता और गरिमा पर एक छोटा भाषण लिखें (हाशिये पर रहने वालों के साथ-साथ विशेष आवश्यकताओं वाला समूह)।	

कक्षा 10

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से या समूहों में अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे— • आस-पास से मिट्टी के विभिन्न नमूने एकत्र करें, उनके रंग, बनावट और संरचना की मदद से उन्हें पहचानें; नक्शे पर दिखाए गए भारत के भौगोलिक क्षेत्रों के साथ उनका संबंध जानें; इन मिट्टी के निर्माण की प्रक्रिया का अध्ययन करें। • भारत के विभिन्न प्रकार के मानचित्र, जैसे कि— राजनीतिक, भौतिक और रूपरेखा मानचित्र, वॉल मैप, एटलस, सूची और चिह्नित स्थानों/क्षेत्रों पर जहाँ विभिन्न कृषि फ़सलों, खनिजों आदि का उत्पादन किया जाता है। • दृश्य-बाधित छात्रों के लिए स्पर्श मानचित्र का उपयोग किया जा सकता है। • भूगोल के शब्दकोश से संसाधनों, निर्वाह कृषि, वृक्षारोपण आदि का अर्थ खोजें। • विभिन्न स्रोतों को पढ़ें और भारत की स्वतंत्रता तक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौर की खोज करें। • राष्ट्र और राष्ट्रवाद की संकल्पनाओं से परिचित हों। • विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक समूहों और व्यक्तियों के लेखन और आदर्शों से परिचित हों। • 1921 के असहयोग आंदोलन में शामिल होने वाले सामाजिक समूहों का विवरण एकत्र करें। • भारत के राष्ट्रीय आंदोलन की महत्वपूर्ण घटनाओं पर एक समय रेखा बनाएँ। • भारत की प्रमुख भाषाओं और उन भाषाओं को बोलने वाले व्यक्तियों की संख्या का विवरण भारत की जनगणना की नवीनतम रिपोर्टों से एकत्र करें और चर्चा करें। • भारतीय संविधान को पढ़ें और इसमें विभिन्न भागों पर चर्चा करें। • विभिन्न प्रकार के संसाधन, जैसे— वनों, पानी, खनिजों आदि को इकट्ठा करें और कक्षा में समूह बनाने और प्रदर्शित करने के लिए कई प्रकार के मानदंड का उपयोग करें।	**विद्यार्थी —** • तथ्यों, आँकड़ों को पहचानता और पुनः प्राप्त करता है और प्रक्रियाओं को बताता है। ▪ विभिन्न प्रकार की मिट्टी, खनिजों, ऊर्जा संसाधनों, नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों की पहचान करता है। ▪ भारत के मानचित्र पर कोयला, लौह अयस्क, पेट्रोलियम, चावल, गेहूँ, चाय, कॉफ़ी, रबर, सूती कपड़े के उत्पादन किए जाने वाले इलाकों/क्षेत्रों का पता लगाता है। ▪ भूगोल में महत्वपूर्ण शब्दों को परिभाषित करता है, जैसे— संसाधन, नवीकरणीय और अप्राप्य संसाधन, निर्वाह कृषि, वृक्षारोपण, कृषि को स्थानांतरित करना। ▪ स्थायी विकास, सकल घरेलू उत्पाद, प्रति व्यक्ति आय, मानव विकास सूचकांक, बहुराष्ट्रीय कंपनी, विदेशी निवेश जैसे आर्थिक शब्दों को परिभाषित करता है। ▪ धन के विभिन्न रूपों और ऋण के स्रोतों, उपभोक्ताओं के अधिकारों को सूचीबद्ध करता है ▪ कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं जैसे फ़्रांसीसी क्रांति, राष्ट्रवाद, औद्योगिकीकरण, वैश्वीकरण और शहरीकरण से जुड़े लोगों के नाम, स्थान, दिनांक याद करता है। ▪ राष्ट्रवाद, उपनिवेशवाद, प्राच्यवाद, लोकतंत्र, सत्याग्रह, और स्वतंत्रता जैसे शब्दों और संकल्पनाओं को परिभाषित करता है। ▪ संघीयता, विविधता, धर्म, राजनीतिक पार्टी जैसे महत्वपूर्ण शब्दों को परिभाषित करता है। • घटनाओं, तथ्यों, आँकड़ों और आँकड़ों को वर्गीकृत और तुलना करता है, जैसे— ▪ संसाधनों, खनिजों, खेती के प्रकारों को वर्गीकृत करता है, उदाहरण— निर्वाह और व्यावसायिक खेती। ▪ भारत के मानचित्र पर चावल और गेहूँ उगाने वाले क्षेत्रों की तुलना करता है।

- भारत में विभिन्न फ़सल पैटर्न और आर्थिक विकास पर उनके प्रभाव का संबंध जानें और कक्षा में चर्चा करें।
- इंटरैक्टिव विषयगत मानचित्रों, उदाहरण के लिए स्कूल भुवन-एनसीईआरटी पोर्टल पर कृषि, खनिज, ऊर्जा, उद्योग आदि का अध्ययन करने के लिए इंटरनेट का उपयोग करें।
- यूरोपीय राष्ट्रवाद और उपनिवेशवाद विरोधी राष्ट्रवाद के बीच संबंध/अंतर पर चर्चा करें।
- राजशाही देश और एक उपनिवेश में औद्योगीकरण पर चर्चा करें।
- विभिन्न संदर्भों में वैश्वीकरण का अध्ययन।
- दक्षिण अमेरिका में किसी एक देश में उपनिवेश-विरोधी आंदोलन के बारे में पता करें और कुछ मापदंडों के आधार पर भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के साथ तुलना करें।
- इसका विवरण एकत्र करें कि विभिन्न सामाजिक समूहों द्वारा अपने दैनिक जीवन में उपयोग किए जाने वाले सामानों और सेवाओं, जैसे कि— टेलीविज़न, मोबाइल फ़ोन, घरेलू उपकरणों और अन्य लोगों का उपयोग करके वैश्वीकरण का अनुभव अलग-अलग तरीके से कैसे किया जाता है और चर्चा करें।
- दुनिया में विभिन्न प्रकार की सरकारों का अध्ययन करें — लोकतांत्रिक, कम्युनिस्ट, सैन्य तानाशाही आदि। लोकतंत्रों के अंदर भी सरकारों के विभिन्न रूप, जैसे— संघीय और एकात्मक, गणतंत्र और राजशाही आदि का भी अध्ययन किया जा सकता है।
- विभिन्न दलों या गठबंधन द्वारा राज्य सरकारों के कामकाज को पढ़ें उनकी विशिष्ट विशेषताओं, जैसे— उनके नारों, एजेंडे, प्रतीकों और उनके नेताओं की विशेषताओं की जाँच करें।
- विभिन्न राजनीतिक दलों की विशिष्ट विशेषताओं का अध्ययन करें।
- राज्यों और देशों के आर्थिक विवरणों का विवरण एकत्र करें। उदाहरण के लिए, मानव विकास सूचकांक के आधार पर, वे कुछ देशों को वर्गीकृत कर सकते हैं। वे सकल घरेलू उत्पाद (राज्य घरेलू उत्पाद के आधार पर राज्य), जीवन प्रत्याशा और शिशु मृत्यु दर आदि के आधार पर देशों को समूह या श्रेणीबद्ध कर सकते हैं।
  - जर्मनिया की छवि के साथ भारतमाता की छवि जैसे दृश्यों की तुलना करता है।
  - भारत, दक्षिण अमेरिका, केन्या, इंडो चीन जैसे देशों में उपनिवेशवाद विरोधी राष्ट्रवाद के साथ यूरोपीय राष्ट्रवाद की तुलना करता है।
  - कुछ महत्वपूर्ण देशों की प्रति व्यक्ति आय की तुलना करता है। उपभोक्ता के अधिकारों में अंतर पता करता है।
  - मानदंडों का उपयोग करके क्षेत्रों में व्यवसायों और आर्थिक गतिविधियों को वर्गीकृत करता है।
  - भारत में राज्य और केंद्र सरकार की शक्तियों और कार्यों की तुलना करता है।
  - भारत में राष्ट्रीय और क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का वर्गीकरण करता है।
  - राजनीतिक चर्चाओं में प्रयुक्त शब्दों और उनके अर्थ, जैसे— गांधीवादी, साम्यवादी, धर्मनिरपेक्षतावादी, नारीवादी, जातिवादी, सांप्रदायिकतावादी आदि की व्याख्या करता है।
- घटना, कार्यक्रमों और उनकी घटना के बीच कारण और प्रभाव संबंध बताता है, जैसे—
  - भारत में विभिन्न फ़सलों के उत्पादन के लिए ज़िम्मेदार कारकों के बारे में बताता है।
  - उद्योगों और पर्यावरण पर उनके प्रभाव की व्याख्या करता है।
  - विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं और विकास के बीच कारण और प्रभाव जैसे कि भारत में राष्ट्रवाद के विकास पर प्रिंट संस्कृति का प्रभाव बताता है।
  - खाद्य उपलब्धता पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव की जाँच करता है। दुनिया के उदाहरण के लिए अमेरिका के उपनिवेश में विभिन्न क्षेत्रों में पूर्व-आधुनिक दुनिया में बीमारी के वैश्विक हस्तांतरण के प्रभाव का आकलन करता है।
  - भू-जल और कच्चे तेल जैसे प्राकृतिक संसाधनों के अति प्रयोग के प्रभाव का विश्लेषण करता है।
  - सकल घरेलू उत्पाद की क्षेत्रीय संरचना में परिवर्तन का विश्लेषण, क्रेडिट के विभिन्न स्रोतों पर निर्भरता के प्रतिफलों का विश्लेषण करता है।

- अपने पड़ोस में आर्थिक गतिविधियों/नौकरियों/व्यवसायों का विवरण एकत्र करें और कुछ मानदंडों का उपयोग करके उन्हें समूहित करें। उदाहरण के लिए— संगठित और असंगठित/ औपचारिक और अनौपचारिक प्राथमिक-माध्यमिक-तृतीयक।
- अपने पड़ोस से क्रेडिट के स्रोतों पर डेटा एकत्र करें, जहाँ से लोग उधार लेते हैं और उन्हें औपचारिक और अनौपचारिक में समूहित करें।
- स्कूल भुवन-एनसीईआरटी पोर्टल पर नक्शे की विषयगत परतों को विश्लेषित करें, भारत में चावल का वितरण और मिट्टी, वार्षिक वर्षा, राहत सुविधाओं की परतों का निष्कर्षण करें और कारण और प्रभाव संबंध स्थापित करने के लिए इन परतों को स्वाइप करें।
- कच्चे माल के आधार पर विभिन्न प्रकार के उद्योगों को वर्गीकृत करना, उन्हें मानचित्र पर खोजना और उन्हें आस-पास के क्षेत्रों में प्रदूषण से संबंधित करना।
- पिछले 100 वर्षों में प्रिंट तकनीक में बदलाव के बारे में पता करें। बदलावों पर चर्चा करें, वे क्यों हुए हैं और उनके परिणाम क्या हैं।
- भारतीय संविधान के विभिन्न प्रावधानों, कारणों और इसके प्रभाव के रूप में राजनीतिक परिदृश्य के बारे में पढ़ें। उदाहरण के लिए— न्यायपालिका की स्वतंत्र स्थिति संघवाद के सुचारु संचालन में प्रभाव डालती है।
- चर्चा करें कि (क) भारत की जनसंख्या का एक बड़ा वर्ग प्राथमिक क्षेत्र पर निर्भर क्यों है (ख) सेवा क्षेत्र के उत्पादन में तेजी से वृद्धि में क्या योगदान दिया।
- पड़ोस और घरों के बीच एक सर्वेक्षण करें और क्रेडिट के औपचारिक या अनौपचारिक स्रोतों पर उनकी निर्भरता के कारणों को इकट्ठा करें। शिक्षक इस बात पर बहस का आयोजन कर सकते हैं कि क्या बैंक ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले ज़रूरतमंद उधारकर्ताओं के लिए योगदान करते हैं या नहीं।

- भारत के राज्यों में विभिन्न राजनीतिक दलों की नीतियों और कार्यक्रमों की व्याख्या करता है।

- विश्लेषण और जानकारी का मूल्यांकन करता है, जैसे—
  - सतत विकास को ध्यान मे रखते हुए किसी भी क्षेत्र में लोगों के जीवन पर प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रभाव का आकलन करता है।
  - जल/वन/वन्यजीव/मिट्टी के संरक्षण के स्वदेशी/आधुनिक तरीकों का विश्लेषण करता है।
  - आम चुनावों में राजनीतिक दलों की जीत और हार के बारे में बताता है।
  - भारत में लोकतंत्र में सुधार के लिए विभिन्न सुझावों का मूल्यांकन करता है।
  - ग्रंथों और दृश्यों का विश्लेषण करता है जैसे कि यूरोप के बाहर के देशों में राष्ट्रवाद के प्रतीक यूरोपीय प्रतीकों से कैसे भिन्न हैं।
  - मनरेगा के प्रभाव, ऋण के स्रोत के रूप में बैंकों की भूमिका का आकलन करता है।
  - अपने क्षेत्र/इलाके/स्थानीय अर्थव्यवस्था में वैश्वीकरण के प्रभाव का आकलन करता है।
  - आउटपुट और रोज़गार के लिए विभिन्न क्षेत्रों के योगदान का विश्लेषण करता है।
- व्याख्या करता है, उदाहरण के लिए—
  - मानचित्र
  - ग्रंथ
  - प्रतीक
  - आरेख जैसे कि पाई और बार
  - कार्टून
  - तसवीरें
  - पोस्टर
  - अखबार की कतरनें

- भारत के विभिन्न हिस्सों से पर्यावरण संरक्षण में शामिल समुदायों की कहानियों को इकट्ठा करें और उन्हें भौगोलिक दृष्टिकोण से अध्ययन करें।
- पर्यावरण संरक्षण आंदोलनों में लोगों की भागीदारी और क्षेत्र के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन पर उनके प्रभाव का विवरण इकट्ठा करें और चर्चा करें, उदाहरण के लिए चिपको और अप्पिको आंदोलन।
- भारत के आर्थिक सर्वेक्षण, समाचार पत्र, सकल घरेलू उत्पाद से संबंधित पत्रिकाएँ, प्रति व्यक्ति आय, विभिन्न घरों के लिए ऋण की उपलब्धता, भूमि-उपयोग, फ़सल के पैटर्न और भारत में खनिजों के वितरण, विभिन्न वर्षों के अनाज का उत्पादन और उन्हें परिवर्तित करने के लिए डेटा एकत्र करें। कक्षा में पाई या बार आरेख और पैटर्न और प्रदर्शन का अध्ययन करें।
- विभिन्न स्रोतों से प्राप्त चित्रों, तसवीरों, कार्टून, निष्कर्ष से परिचित हों— प्रत्यक्षदर्शी ब्यौरे, यात्रा साहित्य, समाचार पत्र/पत्रिकाएँ, नेताओं के बयान, आधिकारिक रिपोर्ट, संधियों की शर्तें, दलों द्वारा घोषणाएँ और कुछ मामलों में समकालीन कहानियाँ, आत्मकथाएँ, डायरी, लोकप्रिय साहित्य, भारत और समकालीन दुनिया के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं और मुद्दों के इतिहास को समझने और पुनर्निर्माण करने के लिए मौखिक परंपराएँ।
- विभिन्न प्रकार के स्रोतों का अवलोकन करें और पढ़ें; सोचें कि ये क्या कहते हैं और क्यों किसी चीज़ को एक विशेष तरीके से दर्शाया जाता है। चित्रों और निष्कर्ष के विभिन्न पहलुओं पर सवाल उठाएँ, ताकि इनके साथ एक महत्वपूर्ण जुड़ाव की अनुमति दी जा सके यानी मैनचेस्टर और भारत के क्लॉथ लेबल के दृश्य; इनका ध्यानपूर्वक अवलोकन करें और प्रश्नों का उत्तर दें, जैसे— वे इन चित्रों में क्या देखते हैं? इन लेबल से उन्हें क्या जानकारी मिलती है? इन लेबल में देवी-देवताओं या महत्वपूर्ण आकृतियों के चित्र क्यों दिखाए गए हैं? क्या ब्रिटिश और भारतीय उद्योगपति इन चित्रों का एक ही उद्देश्य के लिए उपयोग करते थे? इन दो लेबल के बीच समानताएँ या अंतर क्या हैं?
  - विभिन्न क्षेत्रों/जलवायु क्षेत्रों में पानी की कमी
  - यूरोप में विभिन्न संधियों द्वारा लाए गए मानचित्रों में परिवर्तन
  - भारत से पश्चिम एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया और दुनिया के अन्य हिस्सों में व्यापार के समुद्र और भूमि लिंक को बनाता है।
  - भारत में सकल घरेलू उत्पाद, विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन और उद्योगों, रोज़गार और जनसंख्या से संबंधित डेटा के पाई और बार आरेखों को बनाता और उनकी व्याख्या करता है।
- सामाजिक विज्ञान के साथ अंतर-संबंध जोड़ता है—
  - फ़सल पैटर्न, व्यापार और संस्कृति में परिवर्तन का विश्लेषण करता है।
  - बताता है कि भारत के कुछ क्षेत्रों को क्यों विकसित किया गया है।
  - संस्कृति पर व्यापार के प्रभाव का विश्लेषण करता है।
  - आर्थिक विकास और लोकतंत्र के बीच संबंधों को दर्शाता है।
- मान्यताओं/पुरानी सोच/पूर्वाग्रहों रुढ़ियों की पहचान करता है, उदाहरण के लिए—
  - क्षेत्र
  - ग्रामीण और शहरी क्षेत्र
  - भोजन की आदतें
  - जेंडर
  - भाषा
  - विकास का विचार
  - मतदान का व्यवहार
  - जाति
  - धर्म
  - लोकतंत्र
  - राजनैतिक दल
  - हाशिए पर और नि:शक्त लोगों के समूह
  - विभिन्न विकासों, जैसे— भूमंडलीकरण और औद्योगीकरण के कई पक्षों की पहचान करता है।

- प्रिंट और प्रिंटिंग तकनीकों के विविधीकरण पर विभिन्न दृष्टिकोणों का अध्ययन और चर्चा करें।
- विद्यार्थियों या उनके परिवार के अनुभवों, जैसे कि मध्याह्न भोजन योजना; किसानों के लिए ऋण माफ़ी योजनाओं के आधार पर सरकारी योजनाओं के कार्यान्वयन की गंभीरता से जाँच करें; छात्रों को नकद हस्तांतरण के माध्यम से छात्रवृत्ति; प्रदान करना; निम्न आय वाले परिवारों को तरल पेट्रोलियम गैस प्रदान करना, निम्न आय वाले परिवारों के लिए जीवन बीमा योजना/गृह निर्माण, एमयू आदि के लिए वित्तीय सहायता की योजना। इन्हें साक्ष्य के रूप में डेटा/समाचार कतरनों के साथ मार्गदर्शन दिया जा सकता है।
- ओवरले मानचित्र संसाधनों का वितरण दिखाते हैं, उदाहरण— भारत के नक्शे पर खनिज, उद्योग और इसे भारत की भौतिक विशेषताओं और स्कूल भुवन एनसीईआरटी पोर्टल पर परतों को ओवरलैप करके और नक्शे को विश्लेषण से संबंधित करें।
- एटलस का उपयोग करके विभिन्न विषयगत मानचित्रों के बीच विस्तृत संबंध।
- स्थानों, लोगों, क्षेत्रों का पता लगाएँ (विभिन्न संधियों जैसे कि वर्साय की संधि, आर्थिक गतिविधियों आदि से प्रभावित)।
- विभिन्न क्षेत्रों के बीच आपसी संबंध बनाना और विभिन्न क्षेत्रों और इस दिन और दिन के दौरान उपयोग किए जाने वाले स्थानों के नामकरण में अंतर को खोजना, अर्थात विद्यार्थी को भारत से एशिया के मानचित्र पर मध्य एशिया, पश्चिम एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया से कपड़ा व्यापार के समुद्र और ज़मीन के लिंक को खोजने और बनाने के लिए कहा जा सकता है।
- देश के महत्व को पहचानने के लिए विश्व और भारत के राजनीतिक मानचित्रों का तथा विश्व राजनीति में इसकी भूमिका का अध्ययन करें।
    - प्रगति और आधुनिकता की धारणा की आलोचना करता है।
- जिज्ञासुता/पूछताछ के कौशल को प्रदर्शित करता है अर्थात् इससे संबंधित प्रश्नों को प्रस्तुत करता है, उदाहरण के लिए—
    - कुछ क्षेत्रों में उद्योगों की सघनता।
    - पानी की कमी
    - विभिन्न देशों के राष्ट्रवादी संघर्षों में महिलाओं की भूमिका।
    - वित्तीय साक्षरता के विभिन्न पहलुओं से संबंधित मुद्दे।
    - स्थानीय से राष्ट्रीय स्तर तक लोकतंत्र का काम करना।
- एकत्रित/दी गई जानकारी के आधार पर विचारों/तर्कों/विचारों का निर्माण करता है, उदाहरण के लिए—
    - किसी भी क्षेत्र की सांस्कृतिक विविधता
    - ऐतिहासिक घटनाएँ और व्यक्तित्व
    - आर्थिक मुद्दे, जैसे— आर्थिक विकास और वैश्वीकरण
    - गंभीर रूप से जाँच करें (क) विभिन्न आर्थिक अवधारणाओं के लिए पाठ्यपुस्तकों में आमतौर पर उपलब्ध परिभाषाएँ; (ख) संगठित/असंगठित क्षेत्र के सकल घरेलू उत्पाद, गरीबी, धन की आपूर्ति और आकार का अनुमान लगाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली पद्धति।

- राज्यों के राजनीतिक मानचित्रों की जाँच करें, उनके आकार और स्थान पर विचार करें और राष्ट्रीय राजनीति में उसके महत्व पर चर्चा करें।
- उन स्थानों का पता लगाएँ, जिनमें महत्वपूर्ण बहुराष्ट्रीय निगमों ने भारत के नक्शे पर अपने कार्यालय और कारखाने स्थापित किए हैं और लोगों की आजीविका पर स्थान के चयन के कारणों और उसके निहितार्थ पर चर्चा करें।
- कार्टून, स्केच में व्यक्त किए गए संदेश पढ़ें, राजनीतिक घटनाओं से संबंधित तसवीरें देखें और चर्चाओं में भाग लें।
- जनसांख्यिकीय डेटा, राजनीतिक दल की प्राथमिकताओं और सामाजिक विविधता से संबंधित डेटा पढ़ें।
- विकासात्मक मुद्दों, वैश्वीकरण और सतत विकास से संबंधित लोकप्रिय पत्रिकाओं और पत्रिकाओं से समाचार कतरनों/ ग्रंथों को इकट्ठा करें और विवरणों को तैयार करें और कक्षा में प्रस्तुत करें।
- प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक क्षेत्रों में जीडीपी और रोज़गार से संबंधित तालिकाओं को पाई, बार और लाइन आरेखों में परिवर्तित करें।
- कुछ मापदंडों का उपयोग करके चार्ट की व्याख्या करें और पैटर्न एवं अंतर का वर्णन करें। वे नवीनतम वर्ष और समाचार पत्रों के लिए पुस्तकों, भारत के आर्थिक सर्वेक्षण का उल्लेख कर सकते हैं।
- भारत के मानचित्र पर कच्चे माल के उत्पादन का पता लगाएँ और उस क्षेत्र अर्थात् कोयला, लौह अयस्क, कपास, गन्ना आदि की आर्थिक गतिविधियों और विकास से संबंध ज्ञात करें।
- स्वतंत्रता के बाद से भारत के विभिन्न क्षेत्रों के विकास के बारे में जानकारी एकत्र करें। उदाहरणों के माध्यम से विभिन्न विषयों के बीच की कड़ी को बाहर करें और कुछ विषयों पर समूह-परियोजनाएँ करें, जैसे— 'वैश्वीकरण' पर समूह परियोजना। शिक्षक सवाल उठा सकते हैं, जैसे— क्या यह एक नयी घटना है या इसका लंबा इतिहास है? यह प्रक्रिया कब शुरू हुई और क्यों? प्राथमिक, माध्यमिक और

तृतीयक गतिविधियों पर वैश्वीकरण के प्रभाव क्या हैं? क्या इससे दुनिया में असमानता पैदा होती है? वैश्विक संस्थानों का महत्व क्या है? क्या ये संस्थान भूमंडलीकरण में प्रमुख भूमिका निभाते हैं? वे इन संस्थानों की भूमिका पर विकसित देशों को कैसे प्रभावित करते हैं? वैश्विक अर्थव्यवस्था से आपका क्या अभिप्राय है? क्या आर्थिक वैश्वीकरण एक नई घटना है? क्या पर्यावरणीय समस्याएँ वैश्विक समस्याएँ या स्थानीय समस्याएँ हैं? वैश्वीकरण संभावित रूप से बेहतर पर्यावरण में कैसे योगदान दे सकता है?

- लोकतंत्रों में और तानाशाही में आर्थिक विकास की दर और विशेषताओं का अध्ययन करें।
- 1950 के दशक के बाद से जीडीपी और अन्य आर्थिक पहलुओं पर समय शृंखला डेटा की जाँच करें;
- तर्क करें— (क) भारत की स्वतंत्रता का संघर्ष भारत की अर्थव्यवस्था से कैसे संबंधित था? (ख) 1947 के बाद भारत विनिर्माण गतिविधियों के निजीकरण के लिए क्यों नहीं गया? (ग) विकसित राष्ट्र चमड़े और वस्त्र की वस्तुओं के लिए भारत जैसे देशों पर अधिक निर्भर क्यों हैं और पहले नहीं थे? (घ) विकसित देशों की बहुराष्ट्रीय निगमों ने विकासशील देशों में अपने उत्पादन और निर्माण इकाइयों की स्थापना क्यों की, अपने देशों में नहीं और अपने ही देशों में रोज़गार पर इसका प्रभाव।
- विनिर्माण क्षेत्र की बहुराष्ट्रीय कंपनियों (हरियाणा में गुरुग्राम) और सेवा क्षेत्र की बहुराष्ट्रीय कंपनियों (कर्नाटक के बेंगलुरु) में विशिष्ट स्थानों पर स्थित हैं— भौगोलिक कारकों की प्रासंगिकता पर चर्चा करें।
- भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के धर्म, भोजन की आदतों, पोशाक, रंग भेद, केश, भाषा, उच्चारण आदि के बारे में जानकारी एकत्र करना।
- विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के ख़िलाफ़ पक्षपात/पूर्वाग्रहों, रूढ़ियों को सूचीबद्ध करें और कक्षा में इन पर चर्चा करें।
- आधुनिकता यानी वैश्वीकरण, औद्योगिकीकरण के प्रतीक के रूप में देखे जाने वाले घटनाक्रमों पर प्रश्न उठाएँ और इन विकासों के इतिहास के कई पक्षों को देखें अर्थात्

विद्यार्थी से पूछा जा सकता है। दो उदाहरण दें, जहाँ आधुनिक विकास जो प्रगति से जुड़ा है, उसने समस्याओं को जन्म दिया है। पर्यावरणीय मुद्दों, परमाणु हथियारों या बीमारी से संबंधित क्षेत्रों के बारे में सोचें।

- सत्य, पूर्वाग्रह और पूर्वाग्रहों की जाँच करने के लिए समाचारपत्रों और टेलीविज़न कथाओं में नेताओं या राजनीतिक दलों के कथन को पढ़ें। इसी तरह, समय-समय पर राजनीतिक दलों की विभिन्न मांगों का भी विश्लेषण किया जा सकता है।
- इस बात पर विचार करें कि क्यों लोकप्रिय पूर्वाग्रहों/रूढ़ियों को कम आय वाले परिवारों, निरक्षरों और कम साक्षरता स्तर वाले व्यक्ति, दिव्यांग, कुछ सामाजिक, धार्मिक और जैविक श्रेणियों से संबंधित व्यक्ति के बारे में जाना जाता है। शिक्षक विद्यार्थियों को उनकी उत्पत्ति और समीक्षा पर चर्चा करने की सुविधा प्रदान करें।
- (क) सतत विकास प्रथाओं को बढ़ावा देना, (ख) उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम–1986 जैसे कुछ राष्ट्रीय स्तर के अधिनियमों का अधिनियमन, सूचना का अधिकार अधिनियम–2005, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम–2005 और बच्चों के लिए नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 के पीछे संभावित मान्यताओं पर चर्चा करें। छात्रों को उन वर्षों में स्थिति का विवरण प्राप्त करने की आवश्यकता हो सकती है जब ये कानून बुज़ुर्ग व्यक्तियों, माता-पिता और शिक्षकों से लागू किए गए थे।
- मानचित्र पर औद्योगिक क्षेत्र दिखाएँ और इसे उस क्षेत्र के बुनियादी ढाँचे के विकास से संबंधित करें। आस-पास की नदियों, रेलवे, राजमार्ग, कच्चे माल के उत्पादन क्षेत्र, बाज़ार आदि उद्योग क्यों स्थित हैं?
- कश्मीर के बर्फ़ से ढके क्षेत्रों, गुजरात के शुष्क क्षेत्रों और पश्चिम बंगाल के बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों जैसे दृश्यों में पानी की कमी दिखाएँ, विद्यार्थियों को विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में स्थित प्रत्येक क्षेत्र के पानी की कमी के कारणों की जाँच करने और रिपोर्ट या चार्ट तैयार करने के लिए कहा जा सकता है।

- प्रश्नों के उत्तर, जैसे— 'सविनय अवज्ञा आंदोलन में भारतीयों के विभिन्न वर्गों और समूहों ने क्यों भाग लिया?' या 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने बंगाल के विभाजन का जवाब कैसे दिया और क्यों दिया?' और उन मुद्दों, घटनाओं, व्यक्तित्वों पर पूरक साहित्य की तलाश करने की आवश्यकता है, जिनमें वे अधिक जानने के लिए रुचि व्यक्त कर सकते हैं। लोकतंत्र के फ़ायदे और कमियों पर शिक्षक-निर्देशित बहस में भाग लें।
- विकासात्मक मुद्दों से संबंधित अर्थशास्त्र से एक उदाहरण चुनें और आर्थिक जानकारी एकत्र करें और समाधान के साथ आगे आएँ। (क) रोज़गार (क्या भारत में पर्याप्त रूप से रोजगार के अवसर पैदा हो रहे है?) (ख) जीडीपी (क्यों केवल सेवा क्षेत्र अन्य क्षेत्रों की तुलना में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने में सक्षम है?) वित्तीय मुद्दों (कम आय वाले परिवारों तक क्रेडिट पहुँच कैसे सुधारें?)
- मान्यताओं को चुनौती दें और अपने क्षेत्र, इलाके या राज्य में विशिष्ट सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक मुद्दे के लिए रचनात्मक समाधान के साथ बाहर आने के लिए प्रेरित करें।
- भारत के मानचित्रों की जाँच करें— (भौतिक और राजनीतिक), भारत की अक्षांशीय और अनुदैर्ध्य सीमा, राहत सुविधाओं और क्षेत्रों की सांस्कृतिक विविधता पर इन के प्रभाव के बारे में विचारों के साथ सामने आएँ।
- रचनात्मक रूप से डिज़ाइन की गई गतिविधियों और किसी भी घटना या उनकी पसंद के व्यक्तित्व पर भूमिका के माध्यम से इतिहास के विभिन्न विषयों को प्रदर्शित करें।
- ऐतिहासिक और समकालीन दोनों दृष्टिकोणों से विभिन्न घटनाओं की व्याख्या पर बहस में संलग्न हों। उन्हें डिजिटल तैयार करने में मदद करें, साथ ही ऑडियो-विज़ुअल सामग्रियों को प्रिंट करें, जिन्हें ब्रेल में परिवर्तित किया जा सकता है।

- समकालीन/आधुनिक समय में ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं के अंदर परिवर्तनों पर समूह चर्चा में भाग लें।
- बुज़ुर्गों, समाचारपत्रों/टी.वी. से जानकारी प्राप्त करें। नदियों या झीलों/कुओं/भू-जल आदि, जैसे— जलाशयों में प्रदूषण के बारे में रिपोर्ट और उनके पड़ोस में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ। उदाहरण के लिए पश्चिम बंगाल में भू-जल में आर्सेनिक का प्रभाव।
- उत्तर-पूर्व क्षेत्र के पहाड़ी क्षेत्रों में मिट्टी के कटाव में वनों की कटाई के प्रभाव पर चर्चा करें और बाढ़ और भूस्खलन के साथ इसका संबंध ज्ञात करें।
- भारत में स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले दो व्यक्तियों के बीच बातचीत की कल्पना करें। विद्यार्थी ऐसे सवालों का जवाब देते हैं, जैसे कि किस तरह की छवियाँ, कथाएँ, लोकगीत और गीत, लोकप्रिय प्रिंट और प्रतीक। वे इस बात पर प्रकाश डालना चाहेंगे कि लोग किस तरह राष्ट्र की पहचान कर सकते हैं और इन सभी का क्या मतलब है।
- निर्यात और आयात, वर्तमान रोज़गार की स्थिति, स्कूलों और अस्पतालों के रुझानों को देखने के लिए शिक्षक/माता-पिता/साथियों की मदद से जानकारी इकट्ठा करें।
- अपने स्वयं के क्षेत्र में कृषि से संबंधित समस्याओं को एकत्रित करें और उपचारात्मक उपाय पेश करें।
- एक ब्रिटिश उद्योगपति और एक भारतीय उद्योगपति के बीच बातचीत की कल्पना करें, जिसे नए उद्योग स्थापित करने के लिए राजी किया जा रहा है। ऐसी भूमिका में विद्यार्थी ऐसे सवालों का जवाब देते हैं, जैसे— (क) भारतीय उद्योगपति को मनाने के लिए ब्रिटिश उद्योगपति क्या कारण बताएँगे और (ख) भारतीय उद्योगपति को किन अवसरों और लाभों की तलाश है?
- छात्रों द्वारा स्कूल में अतिरिक्त पाठ्येतर गतिविधियों, दैनिक कार्यों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, समस्या सुलझाने के कौशल बढ़ाने के निर्णय लेने और मदद करने के लिए आयोजन करें।

- कार्यक्रमों और घटनाओं का पहले से अनुमान लगाता है, उदाहरण के लिए—
  - जल, वायु, भूमि और मानव स्वास्थ्य पर शोर के प्रदूषण के प्रभाव की भविष्यवाणी करता है।
  - वनों की कटाई के कारण प्राकृतिक आपदाओं का अनुमान लगाता है।
  - कलाकारों और लेखकों द्वारा कला, साहित्य, गीत और कहानियों के माध्यम से राष्ट्रवादी संवेदनाओं का पोषण कैसे किया है, इन स्थितियों से निष्कर्ष और संभावित अतिरिक्त विस्तार।
  - यदि रचनात्मक तरीके से जवाब दिया जाए तो (क) भारत पेट्रोलियम कच्चे तेल का आयात बंद कर देता है (ख) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ बंद हैं (ग) 2050 में भारत में रोज़गार की प्रकृति (घ) यदि भारत के सभी स्कूलों और अस्पतालों का निजीकरण हो जाता है तो क्या होगा?
- निर्णय लेने/समस्या सुलझाने के कौशल दर्शाता है, उदाहरण के लिए—
  - अपने क्षेत्र में निम्नलिखित मुद्दों के समाधान के साथ आता है।
  - कृषि और परिवहन से संबंधित समस्याएँ
  - रोज़गार के अवसर प्रदान करना
  - कम आय वाले परिवारों के लिए ऋण तक पहुँच में सुधार
  - यह आकलन करता है कि औपनिवेशिक भारत में कुछ विकास उपनिवेशवादियों के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों, जैसे— साहित्य, परिवहन और उद्योगों में राष्ट्रवादियों दोनों के लिए उपयोगी थे।

- जीवन में उनके लक्ष्यों का वर्णन करें और वे कैसे प्राप्त करने जा रहे हैं।
- क्रेडिट और उनके प्रभाव के स्रोतों की समीक्षा करें। उन्हें कम ब्याज दरों के साथ क्रेडिट तक आसान पहुँच के लिए विभिन्न समाधानों पर चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- रोजगार पैदा करने के नए तरीके/नई नौकरियाँ पैदा करना।
- सतत विकास प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए अपने दैनिक जीवन में पालन किए जाने वाले चरणों का सुझाव देते हुए समूह परियोजनाएँ प्रस्तुत करें।
- सहकर्मी/नि:शक्त व्यक्तियों द्वारा किए गए कार्यों और एक-दूसरे के साथ सहयोग करने की आवश्यकता पर चर्चा करें।
- पाठ्यपुस्तकों, समाचार पत्रों आदि के माध्यम से नदी के पानी/बाँध/भूमि-उद्योग/वनभूमि और वनवासियों आदि जैसे कई मुद्दों पर संघर्ष के उदाहरण प्रदान करते हैं। उन्हें इन मुद्दों पर समूहों में बहस करने और रचनात्मक समाधान के साथ आने के लिए निर्देशित किया जा सकता है।
- एक समय अवधि के व्यक्तियों और समुदायों के लोगों के अनुभवों की कहानियों को पढ़ें अर्थात विद्यार्थी उसकी कल्पना कैरेबियन में काम करने वाले एक भारतीय मज़दूर के रूप में कर सकते हैं। पुस्तकालय से या इंटरनेट के माध्यम से एकत्र किए गए विवरण के आधार पर, विद्यार्थी को उसके जीवन और भावनाओं का वर्णन करने वाले परिवार को एक पत्र लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- तसवीरों और चित्रों के साथ पोस्टर तैयार करें और स्वराज के लिए अहिंसक संघर्ष के महत्व पर मौखिक और लिखित प्रस्तुति करें।
- उनके रहने की जगह और स्कूल इलाके के आस-पास के जीवन पर चर्चा करें। पाठ्यपुस्तक में प्रासंगिक पाठों के अलावा उपलब्ध स्थानीय उदाहरणों का चयन करें, ताकि विषय-वस्तु की संवेदनशीलता और शांतिपूर्ण समाधान सिखाया जा सके।

- संवेदनशीलता और प्रशंसा कौशल दर्शाता है, उदाहरण के लिए—
  - समाज के विभिन्न दिव्यांग और अन्य सीमांत वर्गों, जैसे— वनवासी, शरणार्थी, असंगठित क्षेत्र के कर्मचारियों के साथ सहानुभूति रखता है।
  - राजनीतिक विविधता की सराहना करता है।
  - सांस्कृतिक विविधता की सराहना करता है।
  - धार्मिक विविधता की सराहना करता है।
  - सामाजिक विविधता को पहचानता है।
  - विस्थापन, अतिवाद और प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाएँ, जैसे— विभिन्न देशों में भारतीय गिरमिटिया मज़दूर कैरेबियन और फिजी के साथ सहानुभूति रखता है।

• (क) कम आय वाले परिवारों, दिव्यांग/बुज़ुर्ग व्यक्तियों, प्रदूषण से पीड़ित लोगों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों पर भूमिका निभाएँ (ख) विभिन्न तरीके जिनके माध्यम से उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों से वंचित किया जाता है और उपभोक्ताओं को उनकी शिकायतों का समाधान करने के लिए चुनौती दी जाती है। • विभिन्न भारतीय राज्यों में स्कूली शिक्षा सहित लोगों के दैनिक जीवन पर युद्धों और संघर्षों के प्रभाव पर चर्चा करें। • उन देशों का विवरण एकत्र करें, जिनमें हाल ही में युद्ध और संघर्ष हुए, लेकिन वे आर्थिक रूप से सक्षम थे और इस पर चर्चा आयोजित करें।	

एक समावेशी व्यवस्था में सुझाई गई शैक्षणिक प्रक्रियाएँ

कक्षा में पाठ्यक्रम सभी के लिए समान होता है। इसका अर्थ है कि सभी छात्र कक्षा में सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं। कुछ ऐसे छात्र हो सकते हैं, जिन्हें भाषा, दृश्य-स्थानिक या मिश्रित प्रसंस्करण समस्याओं सहित सीखने में कठिनाई हो सकती है। उन्हें पाठ्यक्रम में अतिरिक्त शिक्षण सहायता और कुछ अनुकूलन की आवश्यकता हो सकती है। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं पर विचार करने के साथ, शिक्षकों के लिए कुछ शैक्षणिक प्रक्रियाएँ नीचे दी गई हैं—

- मानचित्र, जैसे— चित्रमय प्रतिनिधित्व और चित्रों के विस्तृत मौखिक विवरण का उपयोग करें। इन्हें उचित कंट्रास्ट के साथ स्पर्श योग्य बनाया जा सकता है।
- मॉडल, ब्लॉक चित्रों का उपयोग करें।
- विभिन्न तथ्यों/अवधारणाओं को समझाने के लिए रोज़मर्रा के जीवन से उदाहरणों का उपयोग करें।
- अमूर्त अवधारणाओं को समझने के लिए ऑडियो-विज़ुअल सामग्री, जैसे— फ़िल्मों और वीडियो का उपयोग करें; उदाहरण के लिए— भेदभाव, रूढ़िवादिता आदि।
- याद रखने के लिए उभरी हुई समय रेखा विकसित करें; उदाहरण के लिए, विभिन्न ऐतिहासिक काल।
- समूह कार्य में वाद-विवाद, प्रश्नोत्तरी, मानचित्र पढ़ने की गतिविधियों आदि का आयोजन करें।
- छात्रों के लिए ऐतिहासिक स्थानों के लिए भ्रमण, सैर और यात्राएँ (शैक्षिक दौरे) आयोजित करें।
- गंध और स्पर्श जैसी अन्य इंद्रियों का उपयोग करके पर्यावरण की खोज में छात्रों को सम्मिलित करें।
- प्रत्येक पाठ की शुरुआत में एक संक्षिप्त अवलोकन दें।

- पाठ से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी की फ़ोटोकॉपी प्रदान करें।
- मुख्य बिंदुओं और शब्दों को हाइलाइट/रेखांकित करें।
- दृश्य/ग्राफ़िक ऑर्गनाइज़र, जैसे— समय रेखाएँ (विशेष रूप से घटनाओं की कालानुक्रमिक स्थिति), प्रवाह चार्ट, पोस्टर आदि का उपयोग करें।
- कट और पेस्ट जैसी गतिविधियों से संबंधित समूह कार्य का आयोजन करें और तथ्यों/संकल्पनाओं को चित्रित करने हेतु सचित्र डिस्प्ले, मॉडल, चित्र, पोस्टर, फ़्लैश कार्ड या किसी भी प्रकार की विज़ुअल वस्तुओं का उपयोग करें।
- वास्तविक जीवन के अनुभवों के साथ अवसरों की योजना बनाएँ।
- फ़िल्मों/प्रलेखन और वीडियो का उपयोग करें।
- पाठ्य सामग्री को समझने के लिए पत्रिकाओं, स्क्रैपबुक और समाचार पत्रों आदि का उपयोग करें।
- पहले जो सिखाया गया है, उसके साथ संबंध बनाएँ।
- मल्टीसेन्सरी इनपुट्स का उपयोग करें।
- पाठ्यपुस्तक में चित्रों के साथ दिए गए सभी उदाहरणों को बताया जा सकता है (यदि आवश्यक हो तो फ़्लैश कार्ड का उपयोग करना)।
- अध्यायों को पढ़ाने के दौरान, बहुत सारे ग्राफ़िक ऑर्गनाइज़र, समय और तालिकाओं का उपयोग करें, क्योंकि इससे कार्य सरल हो जाएगा।
- मानचित्र को बड़ा और रंग से चिह्नित किया जाना चाहिए।
- चित्रों के साथ पाठ को बड़ा किया जा सकता है। चित्र कार्ड बनाया जा सकता है और इसे कहानी के रूप में क्रमिक रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। अनुक्रमण से जानकारी से संबंध बनाना आसान हो जाता है।
- यह जाँचने के लिए समय-समय पर संगत-प्रश्नों को पूछें कि बच्चे ने कितना सीखा है, क्योंकि इससे जानकारी को आत्मसात् करने में मदद मिलती है।
- विभिन्न तरीकों, उदाहरण के लिए— नाटकीय रूप के माध्यम से, इलाके के भ्रमण, वास्तविक जीवन का उदाहरण, परियोजना कार्य आदि से सिखाएँ और मूल्यांकन करें।
- सभी महत्वपूर्ण वाक्यांशों और सूचनाओं को हाइलाइट करें।
- तसवीरों के लेबल और कैप्शन लिखें।

गणित सीखने के प्रतिफल

परिचय

गणित की शिक्षा का मुख्य लक्ष्य बच्चों में गणित को पूरी तरह समझने की सामर्थ्य विकसित करना है। गणित की पाठ्यचर्या के दो सरोकार हैं— गणित की शिक्षा प्रत्येक विद्यार्थी के मस्तिष्क को व्यस्त रखने में तथा उसको समालोचनात्मक और रचनात्मक बनाने में उस विद्यार्थी के आंतरिक संसाधनों को विकसित करने हेतु क्या कर सकती है?

माध्यमिक स्तर वह स्तर है, जहाँ गणित विद्यार्थियों के सामने एक शैक्षिक विषय के रूप में आता है तथा वह गणित की संरचना को समझना प्रारम्भ कर देते हैं। इसके लिए पाठ्यचर्या में तर्कसंगतता और उपपत्तियों की धारणाएँ केंद्रीय विषय हो जाती हैं। गणित की शब्दावली अत्यधिक शैली-आधारित, स्वयं सचेत तथा दृढ़तापूर्ण होती है। विद्यार्थी सीखता है कि किसी ढाँचे (सिद्धांत) का निर्माण किस प्रकार होता है तथा किसी प्रमेय को सिद्ध करने के लिए, जिसका उपयोग बाद में अन्य प्रमेयों को सिद्ध करने में किया जाता है , ऐसे कथनों का उपयोग करते हुए, जिनका औचित्य सिद्ध हो चुका है, किस प्रकार तर्कों की संरचना की जाती है।

माध्यमिक स्तर पर प्रयोगीकरण तथा अन्वेषण पर विशेष बल देना अहम हो जाता है। गणित प्रयोगशालाएँ हाल ही की एक परिघटना हैं, जिसके भविष्य में प्रसारित होने की अधिक अपेक्षा है। प्रायोगिक गणित में किए गए कार्यों से विद्यार्थियों को गणित सीखने में काफ़ी सहायता मिलती है।

इसलिए इस स्तर पर यह आवश्यक है कि पैटर्नों से प्राप्त अनुमानों *(Conjectures)* के अन्वेषण, प्रयोग, सत्यापन और उनको सिद्ध करने के माध्यम से पाठ्चर्या को उच्चतर स्तरों के गणित अधिगम परिणामों को अन्य विषयों के बीच संबंधों की कल्पना करना विद्यार्थियों से अपेक्षित है। इस प्रकार, इस स्तर पर गणित के अधिगम के विकास पर केंद्रित होना चाहिए। गणित के विभिन्न क्षेत्रों के बीच संबंधों की कल्पना करना विद्यार्थियों से अपेक्षित है। इस प्रकार, इस स्तर पर गणित के अधिगम परिणामों को अन्य विषयों के साथ एकीकृत रूप में देखना चाहिए, जैसे— संख्या, ज्यामिति से संबंधित है (संख्या रेखा पर बिंदु और वास्तविक संख्याएँ)। साथ ही, इनको विज्ञान और सामाजिक विज्ञान तथा बाद में समस्या हल करने के कौशल के साथ भी एकीकृत होना चाहिए।

प्राय: बच्चों का आकलन कागज़-पेंसिल की परीक्षाओं द्वारा किया जाता है, जिनमें बिना किसी उचित विश्लेषण के, एक विशेष प्रकार के प्रश्न सम्मिलित किए जाते हैं। यह नहीं देखा जाता कि किसी विशिष्ट कक्षा के बच्चों की समझ का स्तर इन प्रश्नों का आकलन करने में समर्थ है या नहीं। अनेक बच्चों के लिए गणित का अधिगम एक पाठ्यपुस्तक में दी हुई समस्याओं को हल करने तक ही सीमित रहता है तथा वह भी सीमित एल्गोरिथ्म/प्रक्रियाओं के साथ।

परंतु विद्यार्थियों को विभिन्न प्रक्रियाओं का क्रांतिक रूप से विश्लेषण करने तथा नवीनतम एल्गोरिथ्म की रचना करने के लिए योग्य और सक्षम होना चाहिए।

इस दस्तावेज़ में उन क्षमताओं और कौशलों के संदर्भ में अधिगम परिणामों पर बल दिया गया है, जिनको कक्षाओं 9 और 10 में प्रत्येक बच्चे को प्राप्त होने की उम्मीद की जाती है। इसलिए विद्यार्थियों को गणित तथा अन्य क्षेत्रों में अधिगम परिणामों को प्राप्त करने के लिए अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। इस अनुभाग में गणित को समग्र अंतर्दृष्टि गणित पाठ्यचर्या से उम्मीदें, विभिन्न प्रकार के सुझाए गए शिक्षाशास्त्र के साथ अधिगम परिणामों के बारे में बताया गया है। ये सुझाई गई शिक्षाशास्त्र संबंधित प्रक्रियाएँ तथा क्रियाकलाप केवल प्रदर्शकों के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। प्रयोक्ता किसी दी हुई स्थिति में कुछ और प्रक्रियाओं के बारे में सोच सकते हैं।

आगे माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी गणित की संरचना को एक विषय के रूप में अनुभव प्रारंभ कर देते हैं। वे गणितीय संचार की विशेषताओं— सावधानीपूर्वक परिभाषित शर्तों और अवधारणाओं, उनका प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रतीकों का उपयोग, बारीकी से प्रस्तावित साध्य और उन्हें उचित ठहराने वाली उपपत्तियों से परिचित हो जाते हैं। इस प्रकार वे एक विशेष भाषा को अपनाते हैं जो एक विचार माध्यम के रूप में कार्य करता है। जिसमें शब्दों का संयोजन, तार्किक तर्क, सूत्र आदि शामिल होते हैं। इन पहलुओं को विशेष रूप से ज्यामिती के क्षेत्र में विकसित किया गया है। छात्र इन पहलुओं को बीजगणित के साथ विकसित करते हैं, जो न केवल गणित के अनुप्रयोगों में महत्वपूर्ण हैं बल्कि गणित के अंदर भी औचित्य और उपपत्ति प्रदान करने में महत्वपूर्ण हैं। इस स्तर पर विद्यार्थी सीखी गई अवधारणाओं और कौशलों को समस्या सुलझाने की क्षमता में एकीकृत करते हैं।

पाठ्यक्रम से अपेक्षाएँ

इस चरण पर विद्यार्थियों से इनकी क्षमता और मनोवृत्ति के विकास की अपेक्षा की जाती है

- प्रक्रियाओं के ज्ञान (औपचारिक और यांत्रिक) के स्थान पर गणितीयकरण की संकल्पनाओं को समझना (तार्किक रूप से सोचने, सूत्रित करने तथा अमूर्त तथ्यों को संभालने की सामर्थ्य)।
- गणितीय शब्दावली का चयन एवं क्रियान्वयन।
- अभी तक सीखी गई संकल्पनाओं का समेकन और व्यापीकरण सीखना।
- गणितीय कथनों को समझना और उन्हें सिद्ध करना।
- विज्ञान और सामाजिक विज्ञान जैसे अन्य क्षेत्रों से आने वाली समस्याओं का समाधान।
- समस्या हल करने का सामर्थ्य प्राप्त करने में बच्चों द्वारा सीखी गई संकल्पना और कौशलों को एकत्रित करना।
- गणितीय विवेचन में संबद्ध प्रक्रियाओं का विश्लेषण तथा रचना करना।
- गणित और दैनिक जीवन के अनुभवों के बीच तथा संपूर्ण पाठ्यचर्या के बीच कड़ी (तालमेल) स्थापित करना।

कक्षा 9

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से या समूहों में अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे— • वास्तविक संख्याओं के साथ कार्य करें तथा पिछले कक्षा में अध्ययन की गई संख्याओं की संकल्पना को सुदृढ़ बनाएँ। ऐसे कुछ अवसर ये हो सकते हैं— ▪ वास्तविक संख्याओं का अवलोकन करना तथा उनकी चर्चा करना। ▪ पहले अध्ययन की गई विभिन्न गणितीय संकल्पनाओं में संबद्ध प्रक्रियाओं का स्मरण करना और उनका अवलोकन करना तथा वे स्थितियाँ ज्ञात करना, जिनमें इनके सम्मुख अपरिमेय संख्याएँ आती हैं। उदाहरण के लिए वर्ग के विकर्ण की लंबाई जैसे कि 2 इकाई ज्ञात करना अथवा एक दी हुई त्रिज्या वाले वृत्त का क्षेत्रफल ज्ञात करना इत्यादि। ▪ पिछली कक्षाओं में अर्जित किए गए संख्याओं के ज्ञान के आधार पर विभिन्न विधियों की खोज द्वारा विभिन्न प्रकार की संख्याओं के गुणों का अवलोकन करना, जैसे कि संख्याओं की सघनता। इनमें से एक विधि उन्हें संख्या रेखा पर निरूपित करना हो सकती है। • निम्नलिखित को सहज या सुगम बनाना— ▪ विभिन्न स्थितियों में 2, $2^{1/2}$, $2^{3/2}$, $2^{5/2}$ इत्यादि जैसी संख्याओं को आरोही (या अवरोही) क्रम में एक दी हुई समय सीमा में व्यवस्थित करना या यह बताना कि $\sqrt{17}$, $\sqrt{23}$, $\sqrt{59}$, $-\sqrt{2}$ इत्यादि जैसी संख्या किन दो संख्याओं के बीच स्थित है। • कारखानों के लिए प्रासंगिक बहुपद परिणाम लागू करें। • एक या दो चर में रैखिक समीकरणों के आरेखों की तुलना करें और उन्हें आरेखित करें।	**विद्यार्थी—** • वास्तविक संख्याओं को वर्गीकृत करने, उनके गुणों को सिद्ध करने और विभिन्न स्थितियों में उनका उपयोग करने के लिए तार्किक तर्क का उपयोग करता है। • बीजीय व्यंजकों के बीच बहुपद को पहचानता/वर्गीकृत करता है और उचित बीजीय सर्वसमिकाओं को लागू करके उन्हें विभक्त करता है। • एक/दो चर में रेखीय समीकरण के बीजगणितीय और ज्यामितीय निरूपण में संबंध ज्ञात करता है और दैनिक जीवन की स्थितियों में अवधारणाओं का अनुप्रयोग करता है। • विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों के बीच समानता और अंतर की पहचान करता है। • ज्यामितीय अवधारणाओं, जैसे— समानांतर रेखाओं, त्रिभुजों, चतुर्भजों, वृत्तों आदि से गणितीय कथनों के प्रमाण ज्ञात करता है और उनका उपयोग करके समस्याओं को हल करता है। • उपयुक्त सूत्रों को लागू करके सभी प्रकार के त्रिभुजों के क्षेत्रफलों को ज्ञात करता है। • अलग-अलग ज्यामितीय आकृतियों, जैसे कि— रेखाखंडों के तथा कोणों के समद्विभाजक और त्रिकोणों को दिए गए प्रतिबंधों के तहत निर्माण करता है। निर्माण की प्रक्रियाओं के लिए कारण प्रदान करता है।

- अभिगृहीतों तथा अभिधारणाओं का उपयोग करते हुए गणितीय कथनों की उपपत्तियों की चर्चा करें।
- ज्यामिति से संबंधित निम्नलिखित खेलों के खेलने के लिए प्रोत्साहन दें—
  - यदि एक समूह कहता है कि यदि बराबर को बराबर से जोड़ा जाए तो परिणाम बराबर होते हैं। अन्य, समूह को इस प्रकार के उदाहरण प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, यदि $a = b$ है, तो $a + 3 = b + 3$ होता है। एक अन्य समूह इसे और आगे बढ़ाकर $a + 3 + 5 = b + 3 + 5$ कर सकता है।
  - अपने आस-पास (परिवेश) की विभिन्न वस्तुओं को देखकर एक समूह ज्यामितीय आकारों, जैसे— रेखाएँ, किरण कोण, समांतर रेखाएँ, लंब रेखाएँ, सर्वांगसम आकारों, असर्वांगसम आकारों इत्यादि के संदर्भ में समानता ज्ञात कर सकता है तथा दूसरा समूह उनमें अंतर ज्ञात कर सकता है तथा यह समूह अपने-अपने अन्वेषण के तार्किक रूप से औचित्य बता सकते हैं।
  - मॉडल का उपयोग करके बीजीय पहचान के साथ काम करें और परिचित सन्दर्भों में बीजीय पहचान के उपयोग का पता लगाएँ।
- समूहों में त्रिभुजों के गुणों के बारे में तथा विभिन्न शर्तों के अंतर्गत त्रिभुजों, रेखाखंडों के समद्विभाजक कोण और उसके समद्विभाजक जैसे ज्यामितीय आकरों की रचना करने के बारे में चर्चा करें।
- किसी तल में एक बिंदु को ज्ञात करें और उसकी स्थिति को निर्धारित करने की विधियों तथा उससे संबंधित विभिन्न गुणों की चर्चा करें।
- किसी सर्वे में व्यस्त रखें तथा डेटा को बार ग्राफ़, हिस्टोग्राम (असमान आधार, लंबाइयों वाले भी) तथा बारंबारता बहुभुजों जैसी विभिन्न चित्रात्मक विधियों द्वारा निरूपित करने की चर्चा करें।
- उनके परिवेश से आँकड़ों को संग्रहित करना तथा माध्य, बहुलक या माध्यिका जैसी केंद्रीय प्रवृत्तियों का परिकलन करें।
- उपयुक्त सूत्र को लागू करके सभी प्रकार के त्रिभुजों का क्षेत्रफल ज्ञात करें और उन्हें वास्तविक जीवन की स्थितियों में लागू करें।
- एक कार्तीय समतल में बिंदुओं का पता लगाने के लिए कार्यनीतियाँ विकसित करता है।
- दैनिक जीवन की स्थितियों को पहचान कर उन्हें वर्गीकृत करता है तथा जिनमें माध्य, बहुलक और माध्यिका का उपयोग किया जा सकता है।
- विभिन्न रूपों, जैसे— सारणीबद्ध रूप (समूहीकृत या अनियंत्रित), बार ग्राफ़, हिस्टोग्राम (समान और अलग-अलग चौड़ाई एवं लंबाई के साथ) निरूपण, बारंबारता करके आँकड़ों का विश्लेषण करता है।
- प्रयोगों के माध्यम से अनुभवजन्य संभावना की गणना करता है।
- घन, घनाभ, लंब, वृत्तीय, बेलन/शंकु, गोला और अर्ध गोले जैसी विभिन्न ठोस वस्तुओं के पृष्ठीय क्षेत्रफलों और आयतनों के लिए सूत्र प्राप्त करता है और उन्हें परिवेश में पाई जाने वाली वस्तुओं पर लागू करता है।
- उन समस्याओं को हल करता है, जो बच्चे के परिचित संदर्भ में नहीं हैं। इन समस्याओं में उन स्थितियों को शामिल किया जाना चाहिए, जिनके बारे में बच्चा पहले से नहीं जानता है।

• दैनिक जीवन की स्थितियों से ठोस वस्तुओं के अभिलक्षणों की खोज करना तथा उन्हें घनों, घनाभों, बेलनों इत्यादि के रूप में पहचानें। • एक पासा फेंकने, एक सिक्का उछालने इत्यादि से संबंधित खेल खेलना तथा उनके घटित होने के संयोग ज्ञात करें। • विभिन्न संख्याओं के लिए प्राथमिकताएँ निरूपित करने की स्थितियों का संग्रह करने की एक परियोजना बनाएँ। • जियोज़ेब्रा और अन्य आईसीटी उपकरणों का उपयोग करके अवधारणाओं की कल्पना करें।	

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से या समूह में अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे— • बड़ी संख्याओं का लघुत्तम समापवर्त्यक (LCM) और महत्तम समापवर्त्यक (HCF) ज्ञात करने की पहले अध्ययन की गई विधियों का व्यापक रूप में विस्तार करें। • बहुपदों के विभिन्न पहलुओं, जैसे— उनकी घात, प्रकार (रैखिक, द्विघात, त्रिघात) शून्यक इत्यादि, उनके चित्रीय निरूपणों और उनके शून्यकों बीच संबंधों की चर्चा करें। • एक खेल खेलना, जिसमें किसी बहुपद के गुणनखंड करना तथा गुणनखंडों में से एक का उपयोग करते हुए नया बहुपद बनाना शामिल होता है। उदाहरण के लिए एक समूह, मान लीजिए $x^3 - 2x^2 - x - 2$ के गुणनखंड करता है तथा उसके गुणनखंडों में से एक गुणनखंड का उपयोग करते हुए एक अन्य बहुपद की रचना की जाती है। जिसके, दूसरे समूह द्वारा प्रक्रिया को जारी रखते हुए, आगे गुणनखंड किए जाते हैं। • विभिन्न पहलुओं के माध्यम से वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए द्विघात समीकरणों का उपयोग करें जैसे— एक पूर्व वर्ग, द्विघात सूत्र आदि। • निम्नलिखित प्रकार की गतिविधियों में विद्यार्थियों को व्यस्त रखते हुए, रैखिक समीकरणों के विभिन्न पक्षों की चर्चा करें। ▪ एक समूह, दूसरे समूह से किसी विशेष संख्या-प्रणाली अर्थात् प्राकृत संख्याओं/वे संख्याएँ जो पूर्णांक नहीं हैं इत्यादि गुणांकों वाली दो चरों में रैखिक समीकरण बनाने के लिए कह सकता है। ▪ किसी रैखिक समीकरण को 1D या 2D में आरेखीय निरूपण करना तथा उनकी प्रकृति में अंतर स्पष्ट करने का प्रयास करना। ▪ विद्यार्थियों को सर्वसमिकाओं और समीकरणों का अवलोकन करने तथा उन्हें अलग करने के लिए प्रोत्साहित करें।	**विद्यार्थी—** • पहले अध्ययन की गई संख्याओं के गुणों और उनके बीच संबंधों को यूक्लिड विभाजन एल्गोरिथ्म, अंकगणित की मूलभूत प्रमेय जैसे परिणामों को विकसित करता है तथा इसमें दैनिक जीवन के संदर्भों से संबंधित समस्याओं को हल करने में उनका अनुप्रयोग करता है। • किसी बहुपद के शून्यकों को ज्ञात करने की बीजीय और ज्यामितीय विधियों के बीच संबंध विकसित करता है। • आलेखीय विधि तथा विभिन्न बीजीय विधियों का उपयोग करते हुए, दो चरो वाले रैखिक समीकरणों के युग्मों के हल ज्ञात करता है। • किसी द्विघात समीकरण के मूल ज्ञात करने की युक्तियों तथा उसके मूलों (roots) की प्रकृति निर्धारित करने की विधि को प्रदर्शित करता है। • दैनिक जीवन की स्थितियों में ए.पी. की संकल्पना का अनुप्रयोग करने की युक्तियों को विकसित करता है। • सर्वांगसम आकृतियों तथा समरूप आकृतियों में भेद बताने के लिए विधियों का निर्माण करता है। • पहले से स्थापित विभिन्न ज्यामितीय मानदंडों और परिणामों, जैसे— आधारभूत समानुपातिकता प्रमेय, इत्यादि का उपयोग करते हुए दो त्रिभुजों की समरूपता के लिए गुणों को स्थापित करता है। • एक कार्तीय समतल के संदर्भ में ज्यामतीय आकारों के लिए संबंध व्यक्त करता है, जैसे कि दो दिए हुए सभी बिंदुओं के बीच की दूरी ज्ञात करना, दिए गए बिंदुओं के बीच स्थित बिंदु के निर्देशाँक ज्ञात करना इत्यादि। • एक दिए हुए न्यूनकोण (एक समकोण के) के साथ सभी त्रिकोणमितीय अनुपात निर्धारित करता है तथा उनका उपयोग दैनिक जीवन के संदर्भ की समस्याओं, जैसे विभिन्न संरचनाओं की ऊँचाईयाँ या इनसे दूरी ज्ञात करने करने में करता है।

- रैखिक समीकरणों के विभिन्न पक्षों को चित्रित (विज़ुअलाइज) करने के लिए आलेख बनाने की विधियों का उपयोग करें, जैसे दो चरों वाली रैखिक समीकरणों का चित्रण अथवा उनके हल ज्ञात करना।
- अपने दैनिक जीवन की स्थितियों में यह जाँच करने के लिए पैटर्नों का अवलोकन करें और उनका विश्लेषण करें कि इनमें अंकगणितीय प्रगति होती है और यदि होती है तो, उनके nवें पद तथा n पदों के योग के लिए नियम ज्ञात करें। ये स्थितियाँ हमारी बचत/जेब खर्च तथा साँप और सीढ़ी इत्यादि जैसे खेल में हो सकती हैं।
- विभिन्न ज्यामितीय आकारों, चार्ट, कागज़ मोड़ने की प्रक्रिया से बने मॉडलों का विश्लेषण करें और उनकी तुलना करें तथा उनकी समरूपता और सर्वांगसमता के बारे में बताएँ।
- समूहों में ऐसी विभिन्न स्थितियों की चर्चा करें, जैसे— मानचित्रों की रचना इत्यादि जिनमें त्रिकोणमिति की संकल्पनाओं का उपयोग होता है।
- ऊँचाइयों और दूरियों से संबंधित ऐसी परियोजना में कार्य करें, जिनमें ऐसी स्थितियाँ में सम्मिलित हों कि किसी भवन के शीर्ष का उन्नयन कोण मापने तथा स्वयं की उस भवन से दूरी मापने की विधियाँ विकसित करनी पड़े।
- एक त्रिकोणमितीय अनुपात के एक दिए हुए मान के लिए, विभिन्न त्रिकोणमिति अनुपातों के मान को ज्ञात करने के लिए विधियाँ विकसित करें।
- परिवेश में ऐसे आकारों का अवलोकन करें जो अब तक अध्ययन किये गए आकारों, जैसे— शंकु, बेलन, घन, घनाभ, गोला, अर्धगोला इत्यादि का संयोजन हों। वे समूहों में कार्य कर सकते हैं तथा इन संयोजित आकारों के विभिन्न पक्षों के लिए सूत्र प्रदान कर सकते हैं।
- अपने आस-पास की विभिन्न सामग्री, वस्तुओं, डिज़ाइनों का क्षेत्रफल निर्धारित करें। उदाहरण के लिए, रुमाल पर डिज़ाइन, फ़र्श की टाइलों की डिज़ाइन, ज्यामिति बॉक्स इत्यादि।
- वृत्त की स्पर्श रेखा से संबंधित प्रमेयों के प्रमाण निकालना।
- एक दिए हुए स्केल गुणक के अनुसार एक दिए गए त्रिभुज के समरूप त्रिभुज की रचना करता है।
- किसी वृत्त के बाहरी बिंदु से स्पर्श रेखाओं के एक युग्म की तथा इसमें प्रयुक्त प्रक्रिया का औचित्य बताता है।
- ज्यामितीय रचनाओं के चरणों की जाँच करता है तथा प्रत्येक चरण के लिए कारण बताता है।
- आस-पास (परिवेश) की वस्तुओं की कल्पना विभिन्न ठोस आकारों के संयोजन के रूप में करते हुए पृष्ठीय क्षेत्रफल और आयतन ज्ञात करता है, जैसे कि बेलन और शंकु, बेलन और अर्धवृत्त, विभिन्न घनों का संयोजन इत्यादि।
- दैनिक जीवन के संदर्भों से संबंधित आंकड़ों के लिए विभिन्न समुच्चयों के माध्य, माध्यक और बहुलांक पर परिकलित करता है।
- किसी घटना की प्रायिकता निर्धारित करता है।
- दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करने में अवधारणा को लागू करता है।

- विभिन्न वस्तुओं के सतही क्षेत्रों और आयतनों से संबंधित स्थितियों पर चर्चा और विश्लेषण करें, जैसे कि (क) विभिन्न विमाओं वाले एक विशेष आकार के दो बक्सों के दिए होने पर, यदि एक बक्से को ठीक दूसरे प्रकार के बक्से के रूप में ही बदलना है तो कौन सी विशेषता बदलेगी, पृष्ठीय क्षेत्रफल का आयतन? (ख) एक बक्से की प्रत्येक विमा में कितने प्रतिशत का बदलाव किया जाएगा, जिससे वह एक दूसरे बक्से के समान हो जाएगा?
- सरल गतिविधियों के माध्यम से विभिन्न घटनाओं के होने की संभावना पर चर्चा और विश्लेषण करें, जैसे कि सिक्का उछालना, दो पासे एक साथ फेंकना, ताश के 52 पत्तों में से डेक का एक कार्ड उठाना आदि।
- पिछली कक्षाओं में अध्ययन किए गए माध्य, माध्यक और बहुलाँक के सूत्रों को इन केंद्रीय प्रवृत्तियों के लिए स्थितियाँ प्रदान कर सामान्यीकृत करें।
- अपने आस-पास के परिवेश से डेटा एकत्रित करें और इन से केंद्रीय प्रवृत्तियों की गणना करें।
- किसी वृत्त के बाहरी बिंदु से स्पर्श रेखा खींचें तथा ऐसे बिंदु से स्पर्श रेखा खींचें जो वृत्त के अंदर स्थित है। इस प्रकार उन्हें स्पर्श रेखाओं के गुणों को सत्यापित करने के लिए विभिन्न विधियाँ खोजने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।

एक समावेशी व्यवस्था में सुझाई गई शैक्षणिक प्रक्रियाएँ

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को कक्षा के अन्य बच्चों के साथ लेकर चलना चाहिए तथा उपरोक्त अधिगम उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, इसी प्रकार के अन्य उपयुक्त क्रियाकलापों को डिज़ाइन किया जा सकता है। अध्यापक को बच्चे की विशेष समस्या को ध्यान में रखना चाहिए तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के लिए वैकल्पिक युक्तियों की योजना बनानी चाहिए।

कक्षा-कक्ष में एक स्वस्थ समावेशी वातावरण, सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करता है, चाहे वह अधिगम कठिनाइयों वाले हो या बिना अधिगम कठिनाइयों वाले हों। जिन उपायों को अपनाने की आवश्यकता है, वे निम्नलिखित हैं—

- समूह में गतिविधियों के माध्यम से प्रक्रिया कौशल विकसित करना तथा उत्प्रेरकता के लिए आईसीटी का उपयोग करना, बार-बार अभ्यास कराना तथा मूल्यांकन करना।
- विद्यार्थी के उत्तरों का संज्ञान लेते हुए, विभिन्न विधियों के माध्यम से अधिगम प्रक्रिया का आकलन करना।
- विभिन्न विधियों तथा संबद्धता स्तरों के माध्यम से बच्चे की बहुविकल्पीय गतिविधियों में व्यस्तता का अवलोकन करना।

- शिक्षाशास्त्र से संबंधित प्रक्रिया तथा अधिगम प्रगति के लिए नक्काशी वाले आरेखों का उपयोग करना।
- अवलोकनों और खोजने में अनुकूल उपकरणों (बड़ी प्रिंट सामग्री, सरल सामग्री, अधिक चित्र और उदाहरण इत्यादि) का उपयोग करते हुए (उदाहरण के लिए— दृश्य प्रदर्शन यंत्रो में श्रवण संबंधी उपकरण होने चाहिये) और श्रवण संबंधी यंत्रों में दृश्य संबंधी उपकरण) शिक्षण-प्रशिक्षण प्रक्रिया।
- अवलोकनों और खोजने में अनुकूल उपकरणों का उपयोग करना (उदाहरण के लिए— विज़ुअल (दृश्य) यंत्रों में श्रवण संबंधी आउटपुट होने चाहिए और श्रवण संबंधी यंत्रों में दृश्य संबंधी उपकरण)।
- उन बच्चों से उत्तरों को प्राप्त करने के लिए बहुविकल्पीय प्रश्नों का उपयोग करना, जिन्हें लिखने में कठिनाई अनुभव होती है अथवा मौखिक रूप से स्पष्ट नहीं कर पाते हैं।

स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा सीखने के प्रतिफल

परिचय

बच्चों का स्वास्थ्य और शारीरिक कल्याण भारत में स्कूली शिक्षा के मुख्य पाठ्यक्रम संबंधी सरोकारों में से एक रहा है। स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के महत्व को न केवल छात्रों के शारीरिक फिटनेस और कल्याण सुनिश्चित करने के लिए एक साधन के रूप में माना है, बल्कि इसे स्कूली पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग के रूप में शामिल करना भी महत्वपूर्ण सरोकार का विषय है। इस विषय के पाठ्यक्रम क्षेत्र में स्वास्थ्य की एक समग्र परिभाषा को अपनाया जाता है, जिसमें शारीरिक शिक्षा और योग के माध्यम से बच्चे के शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और मानसिक विकास में योगदान दिया जाता है। स्वतंत्र रूप से खेलने, अनौपचारिक और औपचारिक खेलों, योग और खेल गतिविधियों में सभी बच्चों की भागीदारी उनके शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास के साथ-साथ विभिन्न जीवन कौशलों, जैसे— संचार, समस्या समाधान, निर्णय लेने, टीम भावना एवं अन्य जीवन संबंधी कौशल विकास के लिए आवश्यक है। सरल अनुकूलन और/या खेल के मैदान पर कामचलाऊ व्यवस्था, खेल के मैदान, उपकरण, सीडब्ल्यूएसएन बच्चों की ज़रूरतों के अनुसार नियमों द्वारा स्कूल में सभी बच्चों के लिए गतिविधियों और खेलों को सुलभ बनाया जा सकता है। सभी छात्रों को स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षण गतिविधियों में शामिल होना चाहिए, जो वे क्रीड़ा और खेल में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए चुनते हैं उन्हें क्रीड़ा और खेल में उत्कृष्टता पाने के लिए प्रयास करने के पर्याप्त अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है। इस पूरे समूह के लिए एक व्यापक स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षण पाठ्यक्रम के रूप में स्वास्थ्य, शारीरिक शिक्षा और योग को शामिल करने की आवश्यकता है। स्वास्थ्य की बहुआयामी प्रकृति को देखते हुए, पूरे पाठ्यक्रम में साथ-सीखने और एकीकरण के कई अवसर हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना, भारत स्काउट्स और गाइड्स और राष्ट्रीय कैडेट कोर जैसी गतिविधियाँ कुछ ऐसे क्षेत्र हैं। भारत सरकार ने 'खेलो इंडिया' के माध्यम से सक्रिय और स्वस्थ जीवन की अवधारणा के साथ-साथ विभिन्न खेलों में विभिन्न स्तरों पर छात्रों की सामूहिक भागीदारी की शुरुआत की है।

इस क्षेत्र का शिक्षण विज्ञान (छात्रों से संबंधित स्वास्थ्य), अपनी ज़िम्मेदारी, समाज के लिए ज़िम्मेदार और कानून का पालन करने वाले नागरिक के रूप में योगदान हेतु सभी छात्रों के लिए शारीरिक गतिविधि बढ़ाने पर ध्यान देने के साथ गुणवत्तापूर्ण शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों की शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं से संबंधित है।

पाठ्यक्रम से अपेक्षाएँ

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे—

- क्रीड़ा, खेल और योग में भागीदारी के परिणामस्वरूप अपनी स्वयं की फिटनेस क्षमताओं को विकसित करें।
- घर, स्कूल और समुदाय में रहने के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक ज़िम्मेदारी को समझें।
- राष्ट्र निर्माण कार्यक्रमों, अभ्यास और गतिविधियों में भागीदारी के माध्यम से नेतृत्व के गुण, मूल्य, उत्तम चरित्र, आत्मविश्वास, देशभक्ति अभिव्यक्त करें।
- खेल से जुड़े व्यक्तियों की भावना, निर्णय लेने की क्षमता और साधन संपन्नता को प्रदर्शित करें।
- रोगमुक्त जीवन के महत्व को समझें, स्वस्थ रहने की आदतों, वृद्धि और विकास को प्रदर्शित करें तथा जेंडर के अंतर को बताएँ।
- स्कूल, घर और समुदाय में नशीली दवाओं के दुरुपयोग, चिंता, मनोवृत्ति, व्यवहार, तनाव और भावनाओं का सामना करने जैसे मनो-सामाजिक मुद्दों से निपटें।
- क्रीड़ा, खेल, एनसीसी, एनएसएस रेड क्रॉस, स्काउट्स और गाइड्स आदि के माध्यम से ज़िम्मेदार व्यवहार प्रदर्शित करें।
- मानसिक स्वास्थ्य, आत्म-नियंत्रण, एकाग्रता, अनुशासन को बढ़ावा देने के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण और जीवन कौशल विकसित करें।

कक्षा 9

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से या समूहों में अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे—	**विद्यार्थी—**
• खाने की स्वास्थ्यपूर्ण आदतों, सक्रिय जीवन शैली और व्यक्तिगत स्वच्छता पर चर्चा करें।	• स्वास्थ्य और कल्याण को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करता है।
• फ़िल्मों की क्लिप देखें, स्वस्थ आदतों को प्रदर्शित करने के लिए पोस्टर/चार्ट बनाएँ।	
• स्कूल और समुदाय में स्वास्थ्य जाँच शिविर/गतिविधियों/ कार्यक्रमों में भाग लें और उनका हिस्सा बनें।	• सहनशीलता गतिविधि के विकल्पों (दौड़ना, लांघना, तैराकी आदि) और पर्याप्त पानी पीने के बीच संबंधों का पता लगाता है।
• विशेषज्ञों द्वारा नियमित चिकित्सा परीक्षण में भाग लें।	
• बीमारियों के विभिन्न लक्षणों पर चर्चा करें और इस पर भी जानकारी दें कि वे बीमारियाँ कैसे फैलती हैं।	
• तसवीरों, समाचार आदि के माध्यम से संचारी और गैर-संचारी रोगों के बारे में, इनके कारणों, जोखिम कारकों और निवारक उपायों आदि के बारे में जानकारी इकट्ठी करें।	
• भारत में स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाली जीवन शैली से संबंधित सांस्कृतिक रुझानों और प्रथाओं, ऐतिहासिक और वर्तमान कारकों के बारे में जानकारी एकत्र करें।	
• सूचना एवं संचार तकनीकी सक्षम अधिगम शिक्षण संसाधनों का उपयोग करें, जैसे— एनसीईआरटी/भारत सरकार आदि द्वारा एनआरओईआर, स्वयंप्रभा पोर्टल आदि।	• किशोरावस्था की अवधि में वृद्धि और विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करता है।
• प्रस्तुतीकरण/समूह चर्चा के माध्यम से भोजन के विकल्प, आहार और पोषण, भेदभाव से सम्बंधित मिथकों/भ्रांतियों को स्पष्ट खेलों मे करने के लिए चर्चा करें।	
• ऊँचाई और शरीर के वज़न के बारे में डेटा इकट्ठा करें। किशोरावस्था से पहले और उसके दौरान होने वाले विभिन्न विकासात्मक परिवर्तनों की समयरेखा विकसित करें।	
• विभिन्न जन्मजात दोषों, जैसे— हीमोफ़ीलिया, पोलियो, डिस्लेक्सिया पर चर्चा करें।	• स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक भोजन की आवश्यकता के बारे में बताता है।

• विशेष गतिविधियों, जैसे— फेंकने, पकड़ने या ट्रैक करने के माध्यम से वृद्धि और विकास के पहलुओं पर चर्चा करें।	
• संदर्भ के अनुसार तात्कालिक/संशोधित उपकरण, जैसे— ब्रुश, पेन, समायोजन योग्य मेजों, कुर्सियों आदि का उपयोग करें।	• निवारक उपायों के रूप में शारीरिक गतिविधि के संबंध में उचित समय पर खाने, पर्याप्त ऊर्जा प्रदान करने के लिए उपयुक्त खाद्य पदार्थों को सूचीबद्ध करता है।
• माता-पिता और समुदाय के माध्यम से स्थानीय रूप से उपलब्ध फलों, सब्ज़ियों, पशु उत्पादों और उनके पोषण मूल्य के बारे में जानकारी इकट्ठा करें।	
• सूचना और उसकी आवश्यकता के अनुसार उम्र, खेल में व्यक्ति के जेंडर और साथियों के साथ साझा करें।	• विभिन्न प्रकार के खेलों और खेलों में व्यक्तिगत अंतर के प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित करता है।
• विभिन्न खाद्य पदार्थों के औषधीय महत्व के बारे में दैनिक जीवन से साक्ष्य प्राप्त करें।	
• विभिन्न खेलों और क्रीड़ाओं को समावेशी बनाने के लिए परियोजनाओं को तैयार करें और समूहों में चर्चा करें।	
• खेलों से संबंधित विभिन्न कौशलों का अभ्यास करते हुए अलग-अलग वज़न/साउंड प्लेट, लैडर, कैलीस्थैनिक्स व्यायाम आदि के साथ अलग-अलग रंग की गेंदों का उपयोग करें।	• क्रीड़ा और खेल के दौरान न्यूरोमस्कुलर समन्वय को दर्शाता है।
• क्रीड़ा/खेल में लोकोमोटर, गैर-लोकोमोटर और जोड़-तोड़ गतिविधियों को शामिल करने के लिए मौलिक गतिविधियों में योगदान करने के लिए समूहों में काम करें।	• क्षेत्र में उपलब्ध विभिन्न अवसरों, जैसे कि कॅरियर के दृष्टिकोण आदि की पहचान करता है।
• शारीरिक क्षमता परीक्षण कराएँ और शॉर्ट रन, डिस्टेंस रन, सिट-अप, पुल-अप, पुश-अप, वर्टिकल और स्टैंडिंग ब्रॉड जंप आदि खेलों में भाग लें और प्रदर्शन करें।	• खेल दिवस और एथलेटिक्स मीट, साहसिक खेल, क्रिकेट, शतरंज, भारोत्तोलन आदि के दौरान अनुशासन के साथ उत्तम संगठनात्मक क्षमता/कौशल प्रदर्शित करता है।
• शरीर की क्षमता के अनुसार गति का प्रदर्शन करें।	• अपनी पसंद के खेल/क्रीड़ा में क्षमता/कौशल का प्रदर्शन करता है।
• विभिन्न खेलों/उनकी रुचि के खेल से संबंधित चयन के लिए प्रतिभा खोज के शिविरों में भाग लें।	
• चयन/प्रतिभा खोज के आधार पर छात्रों और स्वयं को शामिल करते हुए, दूसरों को भी समूह में सहभागी बनाएँ।	• विभिन्न खेलों एवं अन्य शारीरिक कौशलों के प्रदर्शन के रिकॉर्ड और दस्तावेज तैयार करता है।
• अपनी रुचि की क्रीड़ा/खेल के उन्नत प्रशिक्षण में भाग लें/शामिल हों।	• विशेषकर टीम वाले खेलों के संदर्भ में खेल के प्रति व्यक्ति, समूह के नेतृत्व और नैतिकता को प्रदर्शित करता है।
• भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं/छात्रवृत्ति के बारे में जानकारी हासिल करें और उन्हें उचित मंच पर साझा करें।	• समग्र स्वास्थ्य के लिए यौगिक गतिविधियाँ करता है। सहकारी खेलों, सहकारी चुनौतियों, छात्र द्वारा आविष्कार किए गए खेलों का प्रदर्शन करता है।

• योग के विभिन्न पहलुओं (उत्पत्ति, इतिहास और इसके प्रभाव) के बारे में जानकारी एकत्र करें। • आसन, प्राणायाम और क्रियाओं का अभ्यास करें। • राष्ट्रीय खेल दिवस, महिला दिवस, योग दिवस आदि पर खेल कार्यक्रम/बैठकें/विशेष थीम कार्यक्रम आयोजित करने की ज़िम्मेदारी लें। • विभिन्न समितियों (योजना, संगठनात्मक, तकनीकी समितियों आदि) में भाग लें और नेतृत्व करें। • ऐसे लीडरों की पहचान करें, जो खेल के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहयोगी टीम के साथियों का एक मानदंड शामिल कर सकते हैं। • क्लिपिंग/चित्रों/ऑडियो-विज़ुअल सामग्री के माध्यम से संभावित लीडरों की गतिविधि देखें।	
• संभावित लीडरों की पहचान करने के लिए समूह चर्चा का आयोजन करें और छात्रों को वर्गीकृत करने के लिए रूब्रिक्स नोट करें। • समूह के लीडर, उप-लीडर, कप्तान, सचिव, स्वयंसेवक, अंपायर, रेफरी, टिप्पणीकार आदि की भूमिका पर चर्चा करें। • विभिन्न स्थितियों, जैसे— मित्र के साथ संबंध निर्माण, सहकर्मी का दबाव संचार, स्वतंत्रता बढ़ाने की इच्छा पर अभिभावकों के साथ बात, साथियों से बात, मिथकों और भ्रांतियों को वर्गीकृत करने पर भूमिका निर्वाह (रोल-प्ले) में भाग लें।	• ज़िम्मेदार व्यवहार, पारस्परिक संबंध प्रदर्शित करता है और जीवन कौशल (जैसे— संचार, समस्या सुलझाने/अनुरोध, मुखरता आदि) को प्रदर्शित करता है। • क्रीड़ा/खेल के नियमों और विनियमन का परिचय प्राप्त करता है और प्रर्दशन करके रिपोर्ट बनाता है।
• सहकर्मी, माता-पिता और विशेष शिक्षा शिक्षकों आदि से सहायता लें। (यदि उपलब्ध हों) • जगह, साधनों और व्यवहार्यता की उपलब्धता के अनुसार व्यक्तिगत/टीम गेम आयोजित करें एवं उनमे से किसी एक में भाग लें। किसी भी मनोरंजन के खेल को चुना जा सकता है, जैसे कि सोलह तक गिनती (स्टार फॉर्मेशन), रिले (होपिंग, फ्रॉग जम्प) आदि। • विभिन्न खेलों के लिए खेल का मैदान चिह्नित करें। कबड्डी, खो-खो, रस्साकशी आदि।	• साथियों के साथ सहयोग करता है, जेंडर का सम्मान करता है और समूह/व्यक्तिगत गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेता है।
• अन्य छात्रों को सही तकनीक और अनुक्रम के साथ वॉर्म अप और कूलिंग डाउन अभ्यास में संलग्न करें।	• तनाव व आक्रमकता का नियंत्रण करने के तरीके प्रदर्शित करता है।

• व्यक्तियों में तनाव के कारणों का पता लगाएँ। • मनोरंजक खेलों और गतिविधियों, जैसे— हँसी योग, ताली बजाना, डम्ब कैरेड, अंताक्षरी आदि में भाग लें और तनाव को प्रबंधित करें तथा उनके प्रभावों पर चर्चा करें। • एक प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स बनाने के लिए आवश्यक सामग्री इकट्ठा करें, जैसे कि पट्टी, गॉज, और क्रेप बैंडेज, कुछ दवाएं, एंटीसेप्टिक दवा आदि। • सामान्य चोटों और उनके प्रबंधन और कार्डियो पल्मोनरी रेसुसिटेशन (सीपीआर) पर गतिविधियों का आयोजन करें। • कक्षा में प्रेरित करने के लिए विभिन्न खेलों में उपलब्धियाँ प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की क्लिपिंग, चित्र दिखाने के बाद उनकी उपलब्धियों पर चर्चा करें। • उन्हें प्रेरित करने के लिए, विशेष खेल व्यक्तियों के बारे में सामग्री एकत्र करें और उन पर चर्चा करें, जिन्होंने पैरालंपिक खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। • लीड-अप खेलों का आयोजन (फाइव स्टार खेल, जैसे— आइस-ब्रेकर), साहसिक खेल, सिमुलेशन गतिविधियाँ, भूमिका निभाना आदि का आयोजन करें। • एनसीसी, एनएसएस, स्काउट्स और गाइड्स में भाग लें।	• सामान्य चोटों/सीपीआर के दौरान प्राथमिक चिकित्सा के उपयोग को दर्शाता है। • विभिन्न क्रीड़ाओं और खेल गतिविधियों के दौरान उनके बीच आत्म-अनुशासन/आत्म-नियंत्रण प्रदर्शित करता है।

कक्षा 10

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से या समूहों में अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे—	**विद्यार्थी—**
• क्रीड़ा, खेल और योग गतिविधियों में भाग लें और अपनी पसंद का खेल खेलने के बाद अपने अनुभव को साझा करें।	• शरीर की विभिन्न प्रणालियों पर खेलकूद एवं योगिक क्रियाओं के प्रभावों की व्याख्या करता है।
• क्रीड़ा/खेल और अन्य शारीरिक गतिविधियों, जैसे— सीने के विस्तार, गहरी और तेज़ साँस आदि में भाग लेकर दिखाई देने वाले शारीरिक परिवर्तनों पर चर्चा करें।	
• उपकरण के साथ या उसके बिना गतिविधि तथा सुधार करते समय सीडब्ल्यूएसएन की समस्याओं को हल करने के लिए उनकी पहचान करें और प्रयास करें।	• सही प्रक्रिया का उपयोग कर शरीर के मापदंडों, जैसे कि पल्स दर, ऊँचाई, शरीर का वज़न, परिधि आदि को मापता है।
• फेफड़ों की क्षमता बढ़ाने के लिए सहनशीलता का प्रशिक्षण लें।	
• विशेष रूप से छात्राओं और सीडब्ल्यूएसएन के बीच हड्डी के स्वास्थ्य, व्यायाम और शक्ति प्रशिक्षण के बीच संबंधों पर चर्चा करें।	
• गर्दन, कलाई और टखने में नाड़ी का पता लगाएँ।	• खेल/क्रीड़ा और योग के क्षेत्र में विभिन्न हस्तियों व विशिष्ट योग्यताओं वाले व्यक्तियों की उपलब्धियों और योगदान की सराहना करता है।
• शरीर के अंगों, वज़न को मापें और उन्हें रिकॉर्ड करें तथा विभिन्न प्रकार के मापन के लिए वीडियो क्लिपिंग अथवा रिकॉर्डिंग देखें।	
• क्रीड़ा/खेल (जैसे— चित्र/वीडियो) के नियमों से संबंधित जानकारी/सामग्री इकट्ठा करें और साझा करें।	
• चार्ट तैयार करें और क्रीड़ा/खेल अर्थात् एथलेटिक्स, फुटबॉल, बास्केटबॉल, हॉकी, क्रिकेट आदि से संबंधित वर्तमान नियम प्रस्तुत करें।	• अन्य विषय क्षेत्रों के साथ क्रीड़ा/खेल सीखने के संबंध स्थापित करता है।
• विश्व-कप, ओलंपिक, पैरालंपिक, कॉमनवेल्थ एशियाई खेल और विभिन्न स्रोतों से विभिन्न संघों और संगठनों से संबंधित नवीनतम जानकारी एकत्र करें और इस पर चर्चा करें।	• स्वदेशी/स्थानीय क्षेत्रों के खेलों की सराहना करता है।
• अर्जुन पुरस्कार/द्रोणाचार्य पुरस्कार, पद्म पुरस्कार एवं राज्य पुरस्कार विजेताओं सहित विशेष ज़रूरतों वाले लोगों की जीवनी को एकत्र करें, साझा करें और उन पर चर्चा करें तथा एक प्रेरक साधन के रूप में उनकी उपलब्धियों को दर्शाएँ।	• तनाव और आक्रामकता का प्रबंधन करने के लिए अलग-अलग तरीके प्रदर्शित करते हैं।

• शारीरिक शिक्षा व खेलों की संकल्पनाओं और उनके अनुप्रयोगों, जिनका उपयोग विभिन्न विषय क्षेत्रों में हो सकता है, पर चर्चा करें। • परिवार/समुदाय के सदस्यों से विभिन्न स्वदेशी खेलों के बारे में जानकारी इकट्ठा करें।	• नियमों का पालन करके क्रीड़ाओं/खेलों में भाग लेता है, जिसमें परस्पर भारतीय खेल है।
• खेलों (फुटबॉल, तैराकी, खो-खो, एथलेटिक्स, ओलंपिक, एशियाई) से संबंधित खेल की प्रसिद्ध हस्तियों के जीवन इतिहास, पुरस्कार व सम्मान के बारे में जानकारी एकत्रित करें व चर्चा करें। • नियमों को अपनाएँ/अंगीकार करें और साथियों के साथ खेलने का प्रयास करें। • स्वदेशी परिवार एवं समुदाय से भारतीय एवं स्थानीय खेलों की जानकारी एकत्रित करें एवं स्वास्थ्य पर उनके महत्व पर चर्चा करें। • दैनिक जीवन से व्यक्तिगत अनुभव साझा करें और अधिकांशत: सामान्य तनावों को दूर करें तथा तनाव के विभिन्न कारणों और उन तनावपूर्ण स्थितियों का समाधान कैसे किया गया, इस पर चर्चा करें। • मनोरंजक खेलों और गतिविधियों, जैसे— हँसी योग, ताली बजाना, डम्ब कैरेड, अंताक्षरी आदि में भाग लें, संशोधित औपचारिक, मज़ेदार क्रीड़ाएँ तथा सिमुलेशन अभ्यास आयोजित करें।	• स्कूल और समुदाय में खेल सुविधाओं और उपकरणों की पहचान करता है। विशेषकर सी.डब्ल्यू.एस.एन. विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए।
• प्रकरण अध्ययन और रोल-प्ले में समूह चर्चा में भाग लें। संबंधित मुद्दों पर ई-अधिगम के तरीकों और संसाधनों (जैसे कि भारत सरकार द्वारा स्वयं पोर्टल) का उपयोग करें। • स्वस्थ जीवन के लिए इसके महत्व के साथ योग के विभिन्न पहलुओं (उत्पत्ति, इतिहास और इसके प्रभाव) के बारे में जानकारी एकत्र करें। • सामान्य दिशानिर्देशों, क्या करें और क्या नहीं करें तथा योगिक गतिविधियों के लाभों पर ज़ोर देने वाले पोस्टर बनाएँ व प्रस्तुतीकरण तैयार करें।	• खेलों तथा क्रीड़ाओं का आयोजन करने वाले संगठन की योजना, योगदान और संसाधन जुटाने के लिए विशेष संदर्भ सहित नेतृत्व के गुणों, और प्रशासन को प्रदर्शित करता है। • किशोरों के स्वस्थ रहने के लिए आहार की योजना बनाता है।

• आसनों में संलग्न हों और उन्हें वस्तुओं, जानवरों के साथ जोड़ें। • सीडब्ल्यूएसएन सहित प्रदर्शन के लिए उपयुक्त ऑडियो और वीडियो का उपयोग करें। उदाहरण के लिए— शॉट पुट, डिस्कस थ्रो, हाई जंप, लॉन्ग जंप, शॉर्ट स्प्रिंट आदि। • पास के खेल के मैदान, व्यायामशाला, खेल सुविधा आदि के लिए एक विज़िट का आयोजन करें। • खेल उपकरण (डम्बल, डंडों, रस्सियों, शंकु आदि) और सुरक्षा उपायों के बारे में अनुभव साझा करें। • जूनियर स्कूल स्पोर्ट्स मीट के आयोजन की योजना बनाएँ और पेश करें। • एक प्रस्तुतीकरण बनाएँ और समिति के गठन के लिए कर्तव्यों को सौंपें। • एकल लीग और एकल नॉक आउट आधार पर अधिकतम 12 टीमों के लिए उचित प्रक्रिया के साथ सरल फ़िक्सचर बनाएँ। • स्थानीय रूप से उपलब्ध फलों, सब्जियों, पशु उत्पादों और स्वास्थ्य के लिए उनके महत्व के बारे में जानकारी इकट्ठा करें।	
• जानकारी पर चर्चा करें और आयु, जेंडर और खेल कार्मिकों के अनुसार आहार योजना तैयार करें और साथियों के साथ साझा करें। • स्वास्थ्य पर कीटनाशकों और कीटनाशकों के हानिकारक प्रभावों की व्याख्या करें। • खेल और खेल के मैदान में, निर्मित/सिमुलेटेड स्थितियों में सुरक्षा उपायों पर चर्चा करें। • प्राथमिक चिकित्सा के संबंध में विभिन्न स्रोतों से जानकारी/वीडियो और अन्य सामग्री एकत्र करें। • आग, भूकंप जैसी कोई आपात स्थिति होने पर क्या प्राथमिकता दी जानी चाहिए, इस बारे में जानकारी एकत्र करें। युवाओं और बुज़ुर्गों को चोट, दिल के दौरे जैसी आपात स्थितियों में कैसे मदद करें, पर चर्चा करें। • विशेषज्ञ वार्ता और बहस में शामिल हों और भाग लें। • बैडमिंटन, टेबल-टेनिस, शतरंज, कैरम, जिम्नास्टिक आदि संबंधित खेलों में उपयोग करने के लिए पोस्टर बनाने, प्ले फ़ील्ड्स के मॉडल बनाने, चिह्न बनाने, खेल संबंधी उपकरणों के उपयोग में भाग लें।	• अनुलोम/विलोम प्राणायाम (वैकल्पिक नासिका श्वास) और क्रिया और ध्यान को प्रदर्शित और अभ्यास करता है। • अलग-अलग स्थिति में सुरक्षा-उपाय अपनाता है। • चोटों और आपातकाल के दौरान प्राथमिक चिकित्सा सिद्धांतों और उत्तरजीविता कौशल को अपनाता है। • स्वास्थ्य संवर्धन में शिक्षा की भूमिका की व्याख्या करता है।

• दवाओं, धूम्रपान, शराब पीने, नशे के दुरुपयोग के प्रभावों पर चर्चा करें। • मादक पदार्थों की लत के कारणों पर चर्चा करें और संवेदनशील समूहों को खोजें। • नशामुक्ति केंद्रों पर जाएँ और रोकथाम और नशामुक्ति के तरीकों के बारे में जानकारी एकत्र करें। • पीएचसी (भौतिक स्वास्थ्य केंद्र) में जाएँ, चर्चा करें और स्वयं के अवलोकनों पर एक रिपोर्ट तैयार करें।	• जीवन संबंधी कौशलों के उपयोग के चलते, छात्र मादक पदार्थ के दुरुपयोग एवं जीवन के अन्य संबंधों में ज़िम्मेदार व्यवहार को व्यक्त करता है।

एक समावेशी व्यवस्था में सुझाई गई शैक्षणिक प्रक्रियाएँ

शारीरिक गतिविधियाँ स्वास्थ्य, कल्याण और जीवन की गुणवत्ता के रखरखाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। गतिविधियाँ दिव्यांग बच्चों को शारीरिक गतिविधियों से लेकर उनके गतिशीलता प्रतिबंध तक वे अपने अनुसार पर्यावरण की खोज में अग्रणी हो सकते हैं और उन्हें आवश्यक समर्थन और कामकाज के स्तर के आधार पर भौतिक वातावरण और खेल में कई अनुकूलनों की आवश्यकता हो सकती है। उन्हें चलने, बोलने, बारीक मोटर कौशल, हाथ की गतिविधियों आदि जैसे शारीरिक कार्यों में कमी (आंशिक या पूर्ण) का अनुभव हो सकता है। महत्वपूर्ण यह है कि बच्चे को किसी भी गतिविधि से अलग नहीं रखा जाना चाहिए जिसका अन्य छात्रों द्वारा आनंद लिया जाता है, खेल और अन्य शारीरिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में बच्चे को शामिल करना चाहिए। कक्षा में ऐसे बच्चे भी हो सकते हैं, जिन्हें निरंतर जाँच और चिकित्सा की आवश्यकता वाली स्वास्थ्य समस्याएँ होती हैं । स्कूल के सभी क्षेत्रों को समतल करने के साथ-साथ कक्षा से खेल के मैदान तक रैंप का निर्माण करने से भी इन बच्चों को भाग लेने में मदद मिलेगी।

ऐसे बच्चे भी हो सकते हैं जो अन्य बच्चों की तरह देख और सुन नहीं सकते। उन्हें ध्वनि इनपुट या इसके विपरीत इसकी जगह दृश्य आदानों को प्रतिस्थापित करके अनुकूलित करने की आवश्यकता हो सकती है। नि:शक्त बच्चों के लिए शारीरिक गतिविधियों और खेलों को प्रोत्साहित करने, एक मित्र प्रणाली स्थापित करने, दूसरे बच्चों के साथ शारीरिक गतिविधि के निर्दिष्ट स्तरों को पूरा करने के लिए संपर्क बनाने या दोस्ती और समर्थन प्रदान करने के लिए चलने के समूहों या अन्य समूहों को स्थापित करने मे मदद मिलेगी; फिटनेस और स्वास्थ्य से संबंधित पेशेवर को खोजना होगा जो शारीरिक गतिविधियों के विकल्प प्रदान कर सकते हैं जो उनकी विशिष्ट क्षमताओं से मेल खाते हैं, यह भी एक सहायक कदम होगा।

शिक्षक, कक्षा और क्षेत्र की गतिविधियों के लिए स्पष्ट बुनियादी नियम स्थापित करने का प्रयास करेंगे जो विभिन्न क्षमता स्तरों के लिए सम्मान और प्रेरणा प्रदर्शित करते हैं। शारीरिक शिक्षा, शिक्षक कक्षा के माहौल को प्रोत्साहित कर सकते हैं जिससे छात्रों को सकारात्मक, सम्मानजनक और सहायक तरीकों से एक-दूसरे के साथ को सक्षम बनाया जा सकता है। साथ ही शिक्षक को छात्रों के गैर-मौखिक संकेतों को पढ़ने के लिए और

सीखने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित होना चाहिए। शिक्षक को जहाँ तक संभव हो बहुत अधिक ध्यान देने से बचना चाहिए। किसी की अनुपस्थिति में, शारीरिक शिक्षा के निर्देशों में स्पर्श करने से बचना चाहिए, कौशल सीखने, अनुक्रम, कार्यप्रणाली, सामग्री और उपकरण, प्रौद्योगिकी, चिह्नों और सेटिंग जैसे क्षेत्रों में इन बच्चों का अनुकूलन किया जा सकता है। शारीरिक शिक्षा कक्षा की गतिविधियों में कुछ शैक्षणिक प्रक्रिया नीचे दी गई है —

- गतिविधि/कौशल की जटिलता को बढ़ाकर या घटाकर कार्य स्तर में बदलाव करें।
- नियमों और स्कोरिंग सिस्टम को अपनाएँ (जैसे— दोनों हाथों से फेंकने के बजाय एक हाथ से फेंकने की अनुमति दें)।
- छोटे, नरम या हल्के बैट, गेंदों का उपयोग करें।
- अधिक अभ्यास/परीक्षण, अतिरिक्त समय के लिए अवसर प्रदान करें।
- छात्रों की व्यक्तिगत ज़रूरतों को समायोजित करने के लिए अनुकूली मूल्यांकन मानदंड (रुब्रिक्स)।
- छात्र द्वारा पूरी की जाने वाली अपेक्षित गतिविधियों की संख्या में वृद्धि या कमी करें।
- छात्र को निर्देश का जवाब देने के तरीके की अपेक्षा को अपनाएँ।
- समूह के सदस्यों को इस तरह से बढ़ाना या घटाना कि प्रत्येक समूह में कम से कम एक विशेष बच्चा हो, जो प्रत्येक समूह के सामने आने वाली चुनौती से समझौता किए बिना उसकी नि:शक्तता से मेल खाता हो।
- बुनियादी सांकेतिक भाषा सीखने और ड्रम, सीटी और कमांड, क्लैपर, स्टार्टिंग गन आदि का सही उपयोग करने के लिए प्रयास करें।
- पिरामिड, प्रदर्शन, संतुलन की घटनाओं, जैसे— समूह प्रदर्शन, फिर विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चे की सही स्थिति का ध्यान रखा जाना चाहिए।

कला शिक्षा सीखने के प्रतिफल

परिचय

माध्यमिक स्तर पर कला शिक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है। कला शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी को आनंददायक अनुभव प्रदान करना, उसकी सौंदर्यपरक संवेदनाओं को निखारना, उसे कला रूपों और अन्य सांस्कृतिक घटकों के माध्यम से, भारत के विभिन्न प्रदेशों की सांस्कृतिक विविधता से परिचित करना एवं राष्ट्रीय विरासत और संस्कृति के बारे में जागरूकता और सराहना का भाव सिखाना है। यह दृश्य (विज़ुअल) और प्रदर्शन कलाओं के माध्यम से विभिन्न कला रूपों की खोज, प्रयोग और अभिव्यक्त करते हुए कलात्मक और रचनात्मक अभिव्यक्ति के परिप्रेक्ष्य को विकसित करने में मदद करती है। इस स्तर पर प्राप्त कला के अनुभव, विद्यार्थी को सामाजिक और सांस्कृतिक सद्भाव के लिए मूल्यों को समझने में मदद करते हैं, जिससे वैश्विक शांति को बढ़ावा मिलता है।

सभी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाओं *(एनसीएफ़)*, 1975, 1988 और 2000 में स्कूल के पाठ्यक्रम के कला शिक्षा की अनुशंसा एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में की गई थी। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* की अनुशंसाओं से कला शिक्षा में प्रमुख बदलाव आया है जो एक तरफ़ इसे कक्षा 1–10 तक स्कूली शिक्षा के एक पाठ्यक्रम का दर्जा प्रदान करता है और दूसरी तरफ़ इसे स्कूल की संपूर्ण पाठ्यचर्या में सम्मिलित करने की बात कहता है।

स्कूली शिक्षा के इस स्तर पर विद्यार्थियों के पास यथा कला शिक्षा विषयों— दृश्य कला (विज़ुअल आर्ट्स), संगीत, नृत्य या रंगमंच में से एक का चयन करने का विकल्प होता है। यहाँ दृश्य कला का तात्पर्य है— ड्राइंग, पेंटिंग, मूर्तिकला, प्रिंटिंग, अनुप्रयुक्त कला, फ़ोटोग्राफ़ी, कंप्यूटर ग्राफ़िक्स और शिल्प (राज्य/क्षेत्र विशिष्ट पारंपरिक कला रूप जैसे कि— दीवार पर पेंटिंग, रंगोली, विरासत शिल्प, मुखौटे, कठपुतलियाँ आदि) और संगीत, नृत्य, थियेटर, प्रदर्शन कला की श्रेणी के अंतर्गत आते हैं।

इस स्तर पर कला का अधिगम कला सामग्रियों, साधनों (औज़ारों) और तकनीकों का ज्ञान, कला की 'हैंड्स-ऑन-प्रैक्टिस' के माध्यम से पर्याप्त कलात्मक कौशल विकसित करना, चयनित कला के माध्यम से बनाने और संवाद करने की क्षमता, सांस्कृतिक विविधता की समझ और प्रशंसा, कलात्मक अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक बहुलतावादी परिप्रेक्ष्य के लिए आदर आदि पर केंद्रित है। साथ ही स्वयं के और दूसरों के काम का महत्वपूर्ण विश्लेषण (कलाकारों और कारीगरों सहित), दैनिक जीवन में सीखे गए जीवन-कौशलों और मूल्यों का अभ्यास, रचनात्मक और एक अच्छे नागरिक के रूप में विद्यार्थियों को विकसित करना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

दूसरे शब्दों में, सामान्य रूप से शिक्षा और विशेष रूप से कला शिक्षा के विद्यार्थी के लिए यह प्रकृति, सामाजिक मूल्यों और समग्र रूप से जीवन के सौंदर्य संबंधी पहलुओं के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने का एक तरीका है।

पाठ्यक्रम से अपेक्षाएँ

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में निम्नलिखित के विकास की अपेक्षा की जाती है—

- कलात्मक सोच और आस-पास की प्रकृति तथा मानव निर्मित वस्तुओं में सुंदरता की सराहना करने की क्षमता,
- कला सामग्री संबंधित ज्ञान और कौशल तथा उनसे संबंधित साधन और तकनीक को जानना,
- चुने गए कला रूपों के माध्यम से स्वतंत्र रूप से संवाद करने की क्षमता,
- सांस्कृतिक विविधता और बहुलतावादी परिप्रेक्ष्य का आदर,
- टीम के रूप में काम करने का कौशल, अन्य विद्यार्थियों की कलात्मक अभिव्यक्ति के प्रति संवेदनशील और प्रशंसात्मक होना एवं विशेषकर, विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के साथ काम करने का कौशल,
- परिप्रेक्ष्य, अनुपात, आकार, गहराई, प्रकाश और छाया, स्पर्श भावना, मौसम, समय, मन आदि के कौशल का दृश्य कला में उपयुक्त उपयोग,
- नाद और उसके प्रकारों, श्रुति, स्वर, ताल, नोट्स का संयोजन, संगीत वाक्यांश, लयबद्ध प्रतिमानों की बहुलता, आवर्तन, चेहरे के भाव, शृंगार, वेशभूषा, आभूषण, केश विन्यास आदि के बारे में प्रमाणिकता, रंगमंच की सामग्री का उपयोग, पटकथा लेखन, संवाद वितरण, आशु रचना, रसों आदि को समझने का कौशल,
- पारंपरिक क्षेत्रीय और शास्त्रीय कलाओं के बीच अंतर करने के लिए समझ और कौशल,
- समुदाय या आस-पास की पारंपरिक कलाओं के विषय में जानकारी, समुदाय के कलाकारों और कारीगरों के साथ बातचीत करना; अंतर-समूह, अंतर-स्कूल अंतर-राज्यीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर कला गतिविधियों में भाग लेने में रुचि,
- सांस्कृतिक विरासत, स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, राष्ट्रीय पहचान, संवैधानिक दायित्व, वर्तमान सामाजिक मुद्दे, पर्यावरण की सुरक्षा, जीवन-कौशल आदि से संबंधित मूल्यों का शिक्षा में समन्वयन।

कक्षा 9 दृश्य कला

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से या समूह में कलात्मक क्रिया हेतु अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे — • प्रकृति और प्राकृतिक व्यवस्थाओं का निरीक्षण करें, कलात्मक अन्वेषण का अभ्यास करने के लिए उपयुक्त स्थलों/स्थानों पर आउटडोर स्केचिंग और पेंटिंग के बारे में संभावना का पता लगाएँ। • छाया के साथ प्रकाश, कठोर सतह के साथ कोमल सतह, हलके रंगों के साथ चमकीले रंगों, पेड़, वनस्पति, पत्ते, फूल, जड़, फल आदि के अध्ययन के लिए गहराई तक जाएँ और उनके पोत में अंतर का अनुभव करें। • प्रकृति के तत्वों (रेखा, आकार, रूप, बनावट, रंग, रचना और परिप्रेक्ष्य) का निरीक्षण करें और समझें; स्थितियाँ, जैसे— धूप से रेखा और पेड़ों तथा पत्तियों से गोलाई और दिन से प्रकाश तथा छाया को समझना, ज्यामितीय आकार और आकृति के लिए वास्तुशिल्प दृश्य, लाइन परिप्रेक्ष्य हेतु परिदृश्य आदि और विभिन्न रचनाएँ बनाने में इन सभी का संयोजन। • कला कार्य में प्रत्येक तत्व और उसके महत्व को दर्शाने के लिए कलाकारों के अनुकरणीय कार्य के उपयोग से कक्षा में दृश्य कला के प्रत्येक तत्व के विवरण पर काम करें। • खुले स्थानों में 'व्यू फ़ाइंडर' के साथ विभिन्न रचनाएँ बनाएँ; जैसे— रेखा, आकार, प्रकाश और छाया, परिप्रेक्ष्य आदि के बुनियादी ज्ञान का उपयोग करते हुए पेंसिल या लकड़ी के कोयले से त्वरित रचनाएँ। • पोत (टेक्सचर) बनाने के लिए अलग-अलग पेड़ों की छाल, टहनियों, सूखी शाखाओं और पत्तियों के और किसी भी त्रि-आयामी वस्तु के छापे लें। रेखा, आकार, प्रकाश छाया और परिप्रेक्ष्य का अभ्यास करने हेतु 3–4 वस्तुओं (एक फल, एक बोतल जैसे कोणीय वस्तु; ईंट या पुस्तक आदि) के समूह के साथ स्टिल लाइफ़ बना सकते हैं।	**विद्यार्थी —** • पहचान करता है— दृश्य कलाओं में द्वि-आयामी कला रूपों (स्केचिंग, ड्रॉइंग और पेंटिंग, प्रिंटिंग, ग्राफ़िक डिज़ाइनिंग) और त्रि-आयामी (मिट्टी से मॉडलिंग, शिल्प, मूर्तिकला, निर्माण कार्य आदि)। • विज़ुअल आर्ट्स (रेखा, आकृति, रूप, बनावट, रंग, रचना और परिप्रेक्ष्य) के तत्वों का वर्णन करता है। • प्राकृतिक सुंदरता की सराहना करता है; जैसे— रंग, रूप, प्रकाश और छाया, विभिन्न बनावटें और प्राकृतिक रूप; कलाकारों/शिल्पकारों के कलात्मक सौंदर्य आदि। • विभिन्न विधियों और सामग्री, जैसे— मिट्टी, पानी वाले रंग और पोस्टर रंग, रंगीन पेंसिल और क्रेयॉन, आदि से चित्र बनाना सीखता है। • दृश्य कला के अंतर्गत विभिन्न कला रूपों में प्रयुक्त साधनों, उपकरणों और सामग्रियों के बारे में सीखता है।

- रंगों का पहिया बनाएँ, रंग योजनाओं का पता लगाएँ, थीम/विषय आधारित रंग-संयोजन, शेड और टोन आदि पर काम करें।
- द्वि-आयामी और त्रि-आयामी सामग्री की विविधता के साथ दोनों के बीच मूल अंतर को समझने के लिए स्वयं कार्य करने के अनुभव में भाग लें। उदाहरण के लिए, त्रि-आयामी सामग्री के साथ काम करना, जैसे— मिट्टी, गत्ते के खाली डिब्बे/बक्से, मुलायम तार, फेंकने योग्य बोतलें आदि, जबकि मूर्तियाँ और द्वि-आयामी सामग्री, जैसे— कागज़, रंग पेंसिल, क्रेयॉन, पानी के रंग, पोस्टर रंग, या पेंटिंग या मूर्तिकला के लिए गैर-पारंपरिक सामग्री द्वि-आयामी और त्रि-आयामी तरीकों और सामग्री की बेहतर और गहरी समझ प्रदान की जा सकती है।
- दृश्य कला में विभिन्न तरीकों और सामग्रियों पर वीडियो क्लिप और स्लाइड शो, जैसे कि— ड्राइंग, पेंटिंग, पेंसिल और चारकोल स्केचिंग, ऑयल-पेस्टल और रंगीन चॉक ड्राइंग, ब्लॉक प्रिंटिंग, वॉल पेंटिंग, कॉमिक स्ट्रिप बनाना, क्ले मॉडलिंग, पॉटरी, सॉफ़्ट वायर पर स्कल्पटिंग (शिल्प कला), प्लास्टर ऑफ़ पेरिस आदि से त्रि-आयामी निर्माण की तकनीकों का पता लगाएँ। मिश्रित सामग्रियों के साथ और शिक्षकों/विशेषज्ञों/कलाकारों/कारीगरों के साथ चर्चा में नए शिल्प तैयार करें।
- दो श्रेणियों के अंतर्गत और द्वि-आयामी, त्रि-आयामी श्रेणियों में एक ही समूह के अंतर्गत और बहुआयामी श्रेणी में विभिन्न कलाकारों द्वारा किए गए कार्यों पर चर्चा करें। द्वि-आयामी और त्रि-आयामी तरीकों और सामग्री के साथ कलात्मक कार्य करें।
- विभिन्न सामाजिक विषयों/मुद्दों पर चर्चा करें और किसी भी सामाजिक विषय पर पोस्टर रचनाओं के माध्यम से और उनके बारे में जागरूकता पैदा करें।
- यह समझने का अनुभव हासिल करें कि कला के सभी त्रि-आयामी कार्य (मूर्तिकला, क्ले मॉडलिंग, टेराकोटा, मिट्टी के बर्तनों आदि) को बंद आँखों से भी महसूस किया जा सकता है। दृष्टिहीन शिक्षार्थी त्रि-आयामी कला कार्यों का आनंद/समझ सकते हैं और त्रि-आयामी कला सामग्रियों के माध्यम से भी व्यक्त कर सकते हैं।

- किसी एक कला रूप के उपस्कर, उपकरण और सामग्री पर चर्चा करें। प्रत्येक टीम को चयनित कला के रूप में पारंपरिक उपकरणों और सामग्रियों की सूची का पता लगाने और तैयार करने के लिए सभी संभावनाओं (पुस्तकों, इंटरनेट, कला शिक्षकों, कलाकारों आदि) का पता लगाने हेतु दृश्य कला श्रेणी के तहत अलग-अलग कला रूप दिया जा सकता है।
- कक्षा में चर्चा (शिक्षक द्वारा सुविधा) के बाद अनुकरणीय कला कार्य (कला प्रदर्शनियों या चुने गए चित्रों से) देखें। तकनीक की संरचना और सुंदरता के सौंदर्यशास्त्र महत्व का अनुभव करने हेतु, जाने-माने कलाकारों के चुने हुए कला कार्यों की डिजिटल तसवीरों को कक्षा-कक्ष में देखा जाए।
- दृश्य कला के विभिन्न क्षेत्रों के कलाकारों और शिल्पकारों के साथ यह जानने के लिए मिलना, बातचीत करना, कि उनकी कला शैली क्या है? क्यों है? और टीम में सचित्र कहानियों के माध्यम से निर्माण यात्रा को जानना।
- दो-तीन विद्यार्थियों के छोटे समूहों में भ्रमण कार्यक्रम, प्रदर्शनियों आदि की रिपोर्ट का लेखन और प्रस्तुति (श्रव्य-दृश्य और/या लिखित रूप) करें, चयनित कार्य के साथ कला के विभिन्न रूपों पर स्क्रैपबुक्स बनाएँ। संबंधित क्षेत्र में कलाकारों/कारीगरों की, समूह प्रस्तुति (मोबाइल, कैमरा, आईसीटी का उपयोग ऐसी गतिविधियों के लिए किया जा सकता है) करें, कला और कलाकारों के कार्य की प्रशंसा करें।
- कलात्मक और ऐतिहासिक महत्व (संग्रहालय, दीर्घा, कला-स्टूडियो, विरासत स्थल, स्मारक, मेले, प्रदर्शनियाँ, उत्सव, समारोह और आयोजन, हाट और बाज़ार आदि) के विभिन्न स्थानों पर जाएँ तथा स्थानों, स्थितियों, लोगों और उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति का अनुभव प्राप्त करने के लिए दृश्य समृद्धि और मौलिकता के लिए उनकी सांस्कृतिक विरासत की जानकारी प्राप्त करें। शिक्षक/शिक्षिकाओं के साथ चर्चा करने के बाद कक्षा-कक्ष में प्रस्तुतिकरण करें।

- दृश्य कला में समकालीन, लोक/क्षेत्रीय शैलियों की पहचान करता है।
- चित्रकला, मूर्तिकला, तसवीरें, ग्राफ़िक्स, शिल्प आदि की सराहना करता है।
- कलाकारों और शिल्पकारों के काम के प्रति गंभीरता से प्रतिक्रिया दर्शाता है।
- मनुष्य द्वारा निर्मित वस्तुओं के डिज़ाइन में सुंदरता की व्याख्या करता है।
- संग्रहालयों/स्टूडियो/दीर्घाओं के भ्रमण, कलाकारों और शिल्पकारों के साथ बातचीत और उनके प्रदर्शन, मेलों और त्यौहारों का प्रलेखन करता है।
- पारंपरिक और लोक चित्रकारों के कौशल और शैलियों की सराहना करता है और उसे अपनी कला में प्रयोग में लाता है।

- पारंपरिक, समकालीन और लोक चित्रों की मुख्य विशेषताओं पर चर्चा करें, पता लगाएँ और समूह बनाएँ, पारंपरिक और समकालीन कला के दिए गए कार्यों के बीच अंतर की सूची बनाएँ।
- स्थानीय शिल्प की पारंपरिक शैली और लोक शैली को अपनाते हुए 4–5 विद्यार्थियों के समूह में शिल्प कार्य कराएँ, इसके पारिस्थितिक मूल्य को समझते हुए और इसे सुरक्षित पर्यावरण के साथ जोड़कर स्थानीय शिल्प के उपयोग को बढ़ावा दें।
- कला कार्य की योजना और उत्पादन में आईसीटी का उपयोग करें।
- विभिन्न प्लेटफ़ार्मों पर अभिव्यक्ति और प्रदर्शन करें, जैसे— मानव संसाधन विकास मंत्रालय के कला उत्सव और कई अन्य विभागों और मंत्रालयों द्वारा विद्युत मंत्रालय द्वारा आयोजित पेंटिंग प्रतियोगिताएँ, जाने-माने संगठनों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताएँ, शंकर अंतरराष्ट्रीय बाल प्रतियोगिता और अन्य कई प्रतियोगिताओं में भाग ले सकते हैं, बच्चों के मन में इससे प्रोत्साहन आता है। इस विषय पर गहराई से जानकारी प्राप्त करें और सामाजिक जागरूकता पैदा करने के लिए इसके महत्व का अनुभव करें।
- अपनी कलाकृतियों और अपने साथियों द्वारा किए गए कार्यों का मूल्यांकन करने के लिए उनका अवलोकन करें।
- विभिन्न माध्यमों का उपयोग करते हुए स्वतंत्र रूप से पेंट करें और शिल्पकारी करें और उनके वास्तविक कार्य का एक फ़ोल्डर/ पोर्टफ़ोलियो बनाएँ।
- स्कूल स्तर पर एक विशिष्ट विषय के साथ कला प्रदर्शन/प्रदर्शनी (कम-से-कम वर्ष में एक बार) लगाएँ, जहाँ विद्यार्थियों को प्रदर्शन, शिक्षकों के साथ चर्चा में संसाधनों को व्यवस्थित करने, कैटलॉग तैयार करने, प्रदर्शन कार्यक्रम का विज्ञापन देने के लिए पोस्टर बनाने, माता-पिता/समुदाय और अधिकारियों के लिए निमंत्रण कार्ड, प्रदर्शन को क्यूरेट करने और कार्यक्रम पर विद्यार्थियों, कर्मचारियों और समुदाय की अभिव्यक्ति की रिकॉर्डिंग करते समय (प्रिंट और वीडियो) की रिपोर्ट बनाने की ज़िम्मेदारी दी जाती है।
- कला की घटनाओं, प्रदर्शनियों और अन्य लोगों के साथ अपनी अभिव्यक्ति और दृष्टिकोण साझा करने हेतु प्रतियोगिता में भाग लें, एक ही विषय/थीम पर कई दृष्टिकोणों का पता लगाएँ, अन्य विद्यार्थियों के काम को समझें और प्रशंसा की सामान्य भावना को बढ़ावा दें।

- गतिविधि, संसाधनों की पहचान करना और कला अभिव्यक्ति की रचना का उपयोग करता है।
- कलात्मक कार्य करता है और कला के चयनित माध्यमों के माध्यम से कुशलता और कलात्मक रूप से भावनाओं का संचार करता है।
- दिन-प्रतिदिन के जीवन में कलात्मक और सौंदर्य संवेदना को अपनाता है।

• कक्षा और स्कूल के डिस्प्ले बोर्ड पर रोटेशन से प्रदर्शन, स्कूल परिसर के सौंदर्यीकरण की योजना, विभिन्न विषयों के साथ स्कूल की दीवार पर चित्रकारी, स्कूल अभियान/जागरूकता अभियान आदि के लिए प्लेकार्ड, पोस्टर और बैनर बनाएँ। • कक्षा की व्यवस्था में दैनिक गतिविधियों में कलात्मक कौशल का अभ्यास और प्रदर्शन करें, बैठने की व्यवस्था में बदलाव लाएँ, कलाकृतियों का रखरखाव करें, आस-पास को स्वच्छ और सुंदर रखें। • साधनों, उपकरणों, सामग्री का उपयोग करने के बाद उसे साफ़ करें और उनका रखरखाव करें, टीम में एक नियमित कक्षा के रूप में बनाए गए कला उत्पादों को संभालकर रखें और संरक्षित करना सीखें। • टीम में अपनी परियोजनाओं/गतिविधियों हेतु स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों का चयन करें और उन्हें एकत्र करें तथा उनके द्वारा एकत्रित सामग्री की गुणवत्ता पर प्रस्तुति दें।	
• कक्षा की गतिविधियों के दौरान नियमित रूप से रुचि और इच्छा के साथ वांछित मूल्यों का अभ्यास कराएँ, साथियों और कई तरह के विचारों द्वारा अपनाए जाने वाले मूल्यों, टीम लीडर और अनुयायियों के रूप में टीम भावना की प्रशंसा करें, साझा की गई सामग्रियों और उपकरणों के लिए आदर दर्शाएँ।	• साधनों और उपकरणों के सुरक्षित उपयोग और रखरखाव के लिए सरोकार प्रदर्शित करता है। • संवेदनशीलता के साथ कला सामग्री, कला कार्य और कलाकृतियों का रखरखाव करता है।
• प्रकृति और उसके विभिन्न रूपों (मौसम, समय, रंग आदि) और पृथ्वी पर जीवन संबंधी चित्र बनवाएँ। दैनिक आधार पर पर्यावरण की सुरक्षित प्रथाओं और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए पोस्टर, स्लोगन और चित्र कैप्शन आदि के माध्यम से कला गतिविधियों के जरिए जागरूकता अभियान कराएँ। • पारिस्थितिक सद्भाव हेतु उसके महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए परियोजना के रूप में पशु और पक्षियों पर कलात्मक कार्य करें, उनसे संबंधित रोचक जानकारी के साथ पोस्टर, कार्ड, मुखौटा, टी-शर्ट, बैज आदि पर पेंटिंग बनाकर पक्षियों और जानवरों की सुंदरता का उत्सव मनाएँ।	• विभिन्न मूल्यों, जैसे— सहयोग, टीम का काम, देखभाल और साझा करना, अनुशासन, प्रकृति और जानवरों के लिए करुणा, दूसरों के लिए सम्मान, सांस्कृतिक विविधता और सांस्कृतिक विरासत की सराहना करता है।

• महान कलाकारों के जीवन और उच्च स्तर की कला के अभ्यास में नैतिकता और मानवीय मूल्यों का सम्मान, प्रकृति के प्रति प्रेम और इस के निकट होने की रुचि आदि के बारे में कहानियाँ साझा करें। • नियमित अभ्यास के रूप में साथियों और दूसरों के सकारात्मक व्यवहार की सराहना करें। • भारतीय संस्कृति, उनमें उपयोग किए गए कला तत्वों के स्पष्ट कलात्मक उदाहरणों की विविधता से परिचित कराएँ, स्लाइड-शो के माध्यम से विभिन्न विरासत कला और शिल्प पर कक्षा में चर्चा करें।	

कक्षा 9 प्रदर्शन कला (संगीत)

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से या समूहों में अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है, कि वे —	**विद्यार्थी —**
• प्राकृतिक ध्वनियों को सुनें और संगीत और गैर-संगीत ध्वनियों में अंतर की समझ बनाएँ। • हमारे प्राकृतिक परिवेश में विद्यमान ध्वनियों का अनुकरण करें और उन्हें संगीतमय ध्वनियों से जोड़ें। • सभी मनुष्य विभिन्न तरह की ध्वनियों से भावों को व्यक्त करते हैं, उन्हीं का अनुकरण एवं संगीत से उसके संबंध पर विचार करें। • बातचीत और ध्वनियों के उतार-चढ़ाव पर विचार एवं विभिन्न संगीतकारों के प्रदर्शन वाद्ययंत्रो की ध्वनियों घुँघरू पहने पैरों की चाल और संगीत के साथ उनका संबंध जानें।	• विभिन्न प्रकार की ध्वनियों के प्रति संवेदनशील व्यक्ति अपने आस-पास के परिवेश से सुनता है— ▪ संगीत और गैर-संगीत दोनों प्रकार की ध्वनियों में अंतर जानता है। ▪ गायन संगीत के माध्यम से या संगीत वाद्ययंत्र बजाने से ध्वनि को पुन: उत्पन्न करता है। ▪ संगीतकारों की ध्वनियों की पहचान करता है। ▪ संगीत वाद्ययंत्र की ध्वनियों की पहचान करता है।
• संगीतकारों की विभिन्न प्रकार की ध्वनियों, विभिन्न संगीत वाद्ययंत्रों की आवाज़, घुँघरू पहनते समय पैरों की हलचल, तानपुरा और इलेक्ट्रॉनिक तानपुरा, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, जैसे— कीबोर्ड आदि सुनें । • विभिन्न प्रकार के वाद्ययंत्र, जैसे कि तबला, ढोलक, बाँसुरी, मंजीरा, सरोद आदि वाद्ययंत्रों से बजाए जाने वाला संगीत सुनें। • मूर्तियों, चित्रों आदि की तसवीरें लें, जो संगीत के विभिन्न संबंधों को प्रदर्शित करती है। • नृत्य, संगीत, वाद्ययंत्रों नाटयकला आदि कलाकारों के प्रस्तुतिकरण का वीडियो एवं उस पर चर्चा करें। • अन्य कला/कलाओं के साथ संगीत के अंतर-संबंध पर चर्चा करें। • कलाकारों की वेशभूषा उनके कर्मस्थल, सामाजिक व्यवस्था आदि से उनके संबंध के बारे में चर्चा करें। • सातों स्वरों को गाना एवं बजाना सुनकर, दोहराकर क्रमिक व्यवस्था को समझकर एवं त्रुटि और स्वरों आंदोलन समस्याओं को जानकर नोट्स व्यक्त करें।	• दृश्य और प्रदर्शन (संगीत, नृत्य और रंगमंच) कला की श्रेणी के अंतर्गत कला रूपों को वर्गीकृत करता है। • समाज में विभिन्न कलाकारों और संगीतज्ञों के योगदान की सराहना करता है (जो एक समावेशी संकल्पना है)। • समाज में विभिन्न कलाकारों और संगीतज्ञों के योगदान की सराहना करता है (जो एक समावेशी अवधारणा है)। • प्रदर्शन— मूल बातें यहाँ तक कि संगीत के स्वर (शुद्ध, कोमल, तीव्र) विभिन्न तालबद्ध संरचनाओं के साथ-साथ विभिन्न परिवर्तनों तथा संयोजनों की रचना करता है, विभिन्न स्केलों में गाता है, शास्त्रीय रचनाओं और शास्त्रीय संगीत पर आधारित रचनाओं को गाता है। • शास्त्रीय संगीत के बुनियादी तकनीकी शब्द और संकल्पनाएँ, विभिन्न प्रकार के रिकॉर्ड किए गए संगीत प्रस्तुतियों का विश्लेषण और चर्चा करता है।

• नाद, स्वर, सप्तक, शब्द और कोमल और विकृत स्वर, सप्तस्वर और वरिशा के बारे में जानकारी प्राप्त करें। • सुनने के कौशल को तराशें, संगीतमय ध्वनि में नाद और श्रुति की जानकारी प्राप्त करें।	• संगीत के अनेक परिभाषित शब्दों की जानकारी प्रदान कराता है।
• भारतीय संगीत के दो विधानों की जानकारी, हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत (रिकॉर्डिंग द्वारा, प्रदर्शन द्वारा मूल तत्वों की समझ)	• संगीत में स्वयं के कार्य करने की क्षमता को बढ़ाता है।
• अलंकार (सात स्वरों के विभिन्न स्वर समूहों का अभ्यास शुद्ध स्वर और राग के अंतर्गत कोमल स्वर) शुद्ध राग और राग गाएँ। • राग अर्थात् भूपाली, यमन, बिलावल, खमाज़, मोहन्नम, कल्याणी, तोड़ी, शंकरावृहन्नम और वृंदावनी, सारंग आदि के स्वरों का अभ्यास करें।	• संगीत में समकालीन, पारंपरिक, लोक, क्षेत्रीय और शास्त्रीय शैलियों की पहचान करता है। • संगीत, संगीतकारों, कला और कलाकारों की सराहना करता है।
• संगीत की विभिन्न विद्याओं को गाने के लिए एवं वाद्ययंत्रों को बजाने के लिए चयनित स्केलों (C#, B.) का अभ्यास करें। • विभिन्न प्रकार की रिकॉर्ड की गई संगीत प्रस्तुतियों को सुनें, उन पर गंभीर रूप से चर्चा करें और उनका विश्लेषण करें। • तबला, ढोलक, खोल, मृदंगम आदि जैसे वाद्ययंत्रों को बजाने के लिए अंगुलियों और हथेली का उपयोग करके ताल और लयकारी बजाएँ। • विभिन्न राज्यों के शास्त्रीय, समकालीन और लोक संगीत के प्रदर्शनों के संग्रह सुनें एवं विभिन्न लयकारियों के बारे में भी जानें। • लाइव व रिकॉर्डेड प्रस्तुतियों के माध्यम से विभिन्न प्रकार के लयबद्ध तरीके बनाएँ।	• पारंपरिक संगीत को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। • ध्वनि या संगीत वाद्ययंत्रों के माध्यम से विभिन्न प्रकार के ध्वनि के उतार-चढ़ाव के ज़रिये कुशलतापूर्वक और नियमानुसार सामग्री, विषय, दक्षता, भावनाओं आदि का संचार करता है। • अलग-अलग ताल, लयबद्ध पैटर्न और रचनाओं की इकाइयों को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त तरीके में अंतर जानता है और उन्हें प्रदर्शित करता है।
• संगीत के विभिन्न कार्यक्रम सुनें— त्यौहार, मेला, संगीत, सम्मेलन इत्यादि के ज़रिये। • कलाकारों एवं शिल्पकारों के योगदान के बारे में चर्चा करें। • विभिन्न राज्यों के ख्याल, गीतम, कृतियों, वर्णम, गत, भजन, लोकगीत आदि को सुनें और सीखें। • तबला, ढोलक, मृदंगम आदि पर विभिन्न कलाकारों द्वारा बजाई गई ताल एवं लयकारियों को सुनें और समझें, जैसे — त्रिताल, दादरा, आदिताल, रूपक तालों की पठन्त-ताली और खाली सहित।	• संगीत वाद्ययंत्र की श्रेणियों और वाद्य प्रकारों में अंतर जानता है। • संगीत के माध्यम से अंदर छिपी सांगीतिक प्रतिभा को तराशने का प्रयास करता है। • विभिन्न पिचों और टोन, प्रॉप्स, वेशभूषा के माध्यम से लयबद्ध तरीके की रचना करता है, हाथ और पैर की गतिविधि तथा चेहरे के हाव-भाव व्यक्त करता है।

- विभिन्न तालों, दुगुन, तिगुन, चौगुन को बजाने की क्रिया सीखें।
- चार प्रकार के संगीत वाद्ययंत्रों को समझें । (तत्, अवनहद, सुषिर, घन)
- कम-से-कम एक संगीत वाद्ययंत्र बजाएँ और सीखें।
- संगीत के स्वरों एवं तालों के उपयोग से नई रचनाओं का निर्माण एवं प्रदर्शन (प्रदर्शन हेतु कोई भी संबंधित वस्तुओं का प्रयोग) करें।
- पाठ्यपुस्तक के विषयों को अधिक गतिशील या रोचक बनाने के लिए संगीत की विधाओं का उपयोग करें, जैसे— पाठ्यपुस्तक की एक तेलुगू कविता को लिया जा सकता है और आंध्र प्रदेश के एक परिचित पारंपरिक संगीत की धुन में डाला जा सकता है। उन सामग्रियों का उपयोग करें जो राज्य के लिए विशिष्ट हैं। इस प्रक्रिया से दूसरे विषय, जैसे— सामाजिक विज्ञान, भाषा इत्यादि के दरवाज़े खुल पाते हैं।
- स्वयं के प्रदर्शन/दोस्तों के संगीत प्रदर्शन को रिकॉर्ड करें और प्रदर्शन का स्वयं से मूल्यांकन या विश्लेषण करें। इसे साथियों के साथ मिलकर भी करें।
- पाठ्यपुस्तकों से विभिन्न कविताओं का संगीत के सुर और ताल द्वारा पाठ करें। कक्षा में चेहरे और शरीर के भावों के साथ संगीत का प्रदर्शन करें।
- कक्षा, विद्यालय परिसर और विभिन्न स्थानों पर किसी भी कला का अभ्यास करें।
- विभिन्न कलाओं के श्रव्य-दृश्य, चित्र, ई-सामग्री साथियों के साथ आदान प्रदान करें।
- भारतीय संगीत के इतिहास और विकास और विभिन्न संगीतकारों द्वारा इसमें किए गए योगदान से संबंधित कहानियों को पढ़ने के लिए पुस्तकालय जाएँ।
- राग और ताल के इतिहास और विकासवादी प्रक्रिया का ज्ञान, अन्य संस्कृतियों के संगीत एवं अन्य कलाओं की कहानियाँ आदि का हमारी संस्कृति पर प्रभाव, जैसे— फ़ारसी प्रभाव आदि को साझा करें।
- विभिन्न आयामों का कला और संस्कृति से संबंध जानने हेतु संग्रहालयों में जाएँ।

- रचनात्मक कौशल प्रदर्शित करता है— उपलब्ध संसाधनों और विषयों के चयन का उपयोग करते हुए योजना बनाना, रचना करना।
- चेहरे की अभिव्यक्ति, हाथ और पैर की गति के साथ रंगमंच की सामग्री और वेशभूषा का उपयोग करते हुए धुन और उचित लय में गाने को प्रदर्शित करता है।
- अन्य लोगों के साथ स्वयं के संगीतमय भावों को दर्शाता है और तुलना करता है।
- भारत की सांस्कृतिक विरासत में संगीतकारों के योगदान की सराहना करता है, जिसमें विविध कलाओं के कलाकार और विभिन्न राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के कलाकार शामिल हैं।
- मल्टीमीडिया संसाधनों के ज़रिये व्यक्त करता है, जैसे— पीपीटी, समूहों में साथियों के साथ साझा करने के लिए मूवीमेकर के माध्यम से संपादन करता है।

• मेलों और त्यौहारों में कलाओं के प्रदर्शन के दौरान कलाकारों और कारीगरों के साथ बातचीत करें। • संगीतकारों के जीवन वृत्तांतों पर चर्चा करें, उनकी सीखने की प्रक्रियाओं और सामने आई कठिनाइयों के बारे में जानें।	
• स्थानीय कलाकारों के साथ बातचीत करें, उदाहरण के लिए— जो लोग किसी त्यौहार, मेले, मंदिर, मस्जिद, गिरजा घर में प्रदर्शन करते हैं। विद्यार्थियों को उन्हें सुनने, बातचीत करने और विश्लेषण करने के साथ-साथ उनका दस्तावेज़ भी तैयार करने के लिए कहें। • संगीत वाद्ययंत्र बनाने वाले, गाना गाने वाले कलाकारों/ कारीगरों के साथ बातचीत आदि का ई-सामग्री में दस्तावेज़ बनाएँ जो सहभागिता के काम आए।	• सामग्री, संगीत वाद्ययंत्र, उपकरण और उपकरणों के सुरक्षित और उचित उपयोग के प्रति संवेदनशीलता दर्शाता है।
• कलाकृतियों का अवलोकन करने के लिए ऐतिहासिक स्मारक या संग्रहालयों में जाएँ। संगीत संबंधी विषयों को इनसे जोड़ें। संगीतकारों और कलाकारों की भूमिका को समझें। दस्तावेज़ के निष्कर्षों से पावर पॉइंट प्रेज़ेंटेशन या श्रव्य-दृश्य रिकॉर्डिंग को बनाया जा सकता है। • हारमोनियम, तानपुरा, तबला या ढोलक आदि वाद्ययंत्रों को संभाल के रखें। • भिन्न क्षमता वाले लोगों की देखभाल करें। उनका हाथ पकड़कर विभिन्न गतिविधि कक्षा में लाएँ। बारी-बारी से बच्चों को इनकी ज़िम्मेदारी सौपें जिससे साथ रहने की क्षमता पनपे।	• सहयोग, टीम के काम, साझाकरण, सहानुभूति, अनुशासन जैसे विभिन्न मूल्य को अपनाता है। • आत्मविश्वास को प्रदर्शित करता है। • बढ़ती तकनीकों को सीखने, तथा समझने की क्षमताओं को अग्रेषित करता है।
• प्रातःकालीन स्कूली सभा, विभिन्न कार्यक्रम और समारोहों में प्रदर्शन करें। इसमें 100 प्रतिशत भागीदारी होनी चाहिए।	• समयानुसार कार्य करने तथा उसके अनुरूप ढलने की प्रवृत्ति को जन्म देता है।

कक्षा 9 नृत्य

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से या समूहों में अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है, कि वे —	**विद्यार्थी —**
• प्राकृतिक परिवेश में नृत्य का अवलोकन करें— हवा में उड़ते हुए पेड़, चारों ओर से उड़ते हुए पक्षी अपने पंखों को फड़फड़ाते हुए और उड़ान भरते हुए, तालाब में लहरें, बगीचे में तितलियाँ, एक नदी में लहरें, समुद्र की लहरें, आकाश में छाए बादल, काले गरजने वाले बादल आदि प्रत्येक उदाहरण में गति और लय प्रकट होती है।	• लय, हाव भाव और मनोदशा (कोमल, तेज़, कठोर) की पहचान करता है।
• रोज़मर्रा में उन वस्तुओं पर ध्यान दें जो लय में चलती हैं।	• लयबद्ध गतिविधियों का प्रदर्शन और अनुकरण करता है।
• प्रकृति में देखी गई प्रत्येक वस्तु, जैसे— हिरण की चाल, हाथी की चाल, मछली की तरह तैरना, तूफ़ान की तरह बढ़ना इत्यादि को शरीर के विभिन्न अंगों द्वारा प्रदर्शित करें जो कि लयबद्ध एवं कलात्मक हो।	• नृत्य के एक साधन के रूप में शरीर की पहचान करता है।
• नृत्य में लयबद्ध गति की चर्चा करें।	
• प्राकृतिक घटनाओं का निरीक्षण करें, उदाहरण— सूरज हर सुबह उगता है और शाम को फिर से ढल जाता है और इसे नृत्य की चाल से संबंधित करें।	• आवर्तन या लयबद्ध चक्र की संकल्पना का वर्णन करता है।
• मौसम में समय-समय पर होने वाले परिवर्तनों पर चर्चा करें और इस चक्र पर विचार करें।	
• प्राचीन काल से लोगों के बीच संचार की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और सामाजिक संबंध के लिए इस्तेमाल होने वाले एक गैर-मौखिक साधन के रूप में नृत्य पर चर्चा करें; सांस्कृतिक विरासत और पुरानी कथाओं को संरक्षित करने में नृत्य की भूमिका पर चर्चा करें; नृत्य को उनके कलात्मक कौशल को व्यक्त करने के लिए और आनंद के माध्यम के रूप में भी चर्चा करें।	
• विभिन्न प्रकार के नृत्यों का अवलोकन करें (प्रदर्शन, वीडियो रिकॉर्डिंग, टीवी इत्यादि। शास्त्रीय, लोक और समकालीन नृत्य रूपों के बीच अंतर पर चर्चा करें।	• शरीर की भाषा, पोशाक, शृंगार, संगीत की भाषा आदि के संदर्भ में विभिन्न नृत्य रूपों को अलग करता है। • विभिन्न प्रकार के नृत्यों की पहचान करता है।
• विभिन्न संगीत वाद्ययंत्र सुनें एवं नृत्य में उनके प्रयोग की चर्चा करें/(सराहना करें), जैसे कि— तबला, मृदंगम,	

ढोलक, पुंग, मर्दला, सारंगी, वायलिन, बांसुरी, सितार, सरोद मंजीरा आदि के साथ नृत्य।	• नृत्य में प्रयुक्त संगीत वाद्ययंत्र की ध्वनियों की पहचान करता है।
• यात्रा/भ्रमण के दौरान विभिन्न ऐतिहासिक धार्मिक स्थलों में, जैसे— मूर्तियाँ और शिलालेख इत्यादि का कलाओं के दृष्टिकोण से अध्ययन/देखे गए इसकी स्क्रैप बुक बनाएँ।	• दृश्य और प्रदर्शन (संगीत नृत्य और नाट्य कला) की श्रेणी के अंतर्गत कला रूपों को वर्गीकृत करता है।
• नर्तकियों, गायकों, संगीत वाद्ययंत्र बजाने वाले संगीतकारों, नाट्य कलाकार एवं अन्य, कला के सभी रूपों का अवलोकन करें और कक्षा में चर्चा के लिए इनका उपयोग करें।	• विभिन्न प्रदर्शन कला, दृश्य कला आदि के अंतर-संबंध को स्पष्ट करता है।
• नृत्य के दूसरी कलाओं के साथ अंतर-संबंध पर चर्चा करें।	• समाज में विभिन्न कलाकारों और शिल्पकारों के योगदान (समावेशी अवधारणा) की सराहना करता है।
• विभिन्न राज्यों की पृष्ठभूमि में कलाकारों की वेशभूषा पर कक्षा में चर्चा करें, जिससे इसके सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ का ज्ञान हो।	• अपने सभी क्षेत्रीय तत्वों के साथ सीखे हुए नृत्य प्रदर्शन करता है।
• शास्त्रीय नृत्य का एक विशेष रूप सीखें। शास्त्रीय नृत्य निम्न प्रकार के हैं —	• गंभीर रूप से कलाकारों और कारीगरों के नृत्य प्रदर्शन की सराहना करता है।

1.	कथक	2.	भरतनाट्यम
3.	कथकली	4.	मणिपुरी
5.	ओडिसी	6.	कुचिपुड़ी
7.	मोहिनीअट्टम	8.	सत्रिया नृत्य

• जनजातीय और लोक नृत्यों के कुछ रूपों को जानें।	
• संगीत नृत्य का एक महत्वपूर्ण अंग ताल की विशिष्टता है, इसकी हर एक मात्रा को समझें। सभी भारतीय नृत्य और संगीत ताल पर आधारित होते हैं। तीन ताल (16 बीट), आदि ताल (8 बीट्स), रूपक (7 बीट्स), झपताल (10 बीट्स), एक ताल (12 बीट्स), दादरा (6 बीट्स), कहरवा (8 बीट्स) और इसी तरह।	• ताल के आवश्यक सिद्धांतों से परिचित कराता है।
प्रायोगिक	
• एकाधिक गति (क्रमलय) में बुनियादी पद संचालन विशेषता को समझें; ताली/खाली (तीन ताल, दादरा, कहरवा आदि ताल, रूपक) के साथ निर्धारित तालों को सुनें और पढ़ें।	• विभिन्न स्तरों में पद संचालन प्रदर्शित करता है; अलग-अलग तालों को समझता है।
• नृत्यशैली की मूल मुद्राएँ, हस्त संचालन सीखें।	• मूल तकनीक (गतिविधियाँ और मुद्राएँ) की पहचान और प्रदर्शन करता है।
• चुनी हुई नृत्यशैली मे पारंपरिक प्रदर्शन (25–30 मिनट करने की क्षमता) के लिए अभ्यास करें।	• एक नृत्य के रूप में विभिन्न गतिविधियों में अभिव्यक्ति प्रदर्शित करता है।

▪ कथक— एक आह्वान (वंदना, स्तुति या श्लोक), नृत्य क्रम, जिसमें आमद, तोड़ा/टुकड़ा, तिहाई, परन, लड़ी, अभिनय (भजन/ठुमरी), तराना आदि शामिल हैं ▪ भरतनाट्यम— अलारिप्पु, जातिस्वरम, शब्दम, तिलल्लाना। ▪ मणिपुरी— रस नृत्य, लाई हरोबा ओ कुचिपुड़ी, तरंगम, धारुवास ▪ मोहिनीअट्टम— चोलकट्टू, जातिस्वरम, श्लोकम, तिलल्लाना ▪ ओडिसी— मंगलाचरण, बटु नृत्य, पल्लवी ▪ सत्रिया— नृत्त, नृत्य (कहानी कहना) ▪ कथकली— कोई प्राचीन कथा • किसी भी आदिवासी/लोकनृत्य को सीखें और उसका अभ्यास करें। • नृत्य के शास्त्रीय, पारंपरिक, लोक और समकालीन शैलियों के जीवंत प्रदर्शन का निरीक्षण करें। • कलाकारों और शिल्पकारों द्वारा विभिन्न कलाओं मे दिए गए योगदान पर चर्चा करें।	• चुने हुए नृत्य के रूप में एक पारंपरिक प्रदर्शनों की सूची प्रदर्शित करता है।
• दिलचस्प लयबद्ध रचनाएँ बनाएँ जो पैरों द्वारा निष्पादित की जा सकती हैं। हाथों और भुजाओं के उपयोग के साथ चेहरे के उपयुक्त भावों का व्यवहार कर सकते हैं। प्रॉप्स और पोशाक को नृत्य का प्रभाव बढ़ाने के लिए तैयार किया जा सकता है। • स्वयं के प्रदर्शन/दोस्तों के नृत्य प्रदर्शन को रिकॉर्ड करें और प्रदर्शन का मूल्यांकन या विश्लेषण करें। इससे साथी से सीखने, स्वयं सीखने को बढ़ावा मिलेगा। • कक्षा, घर और विभिन्न स्थानों पर नृत्य का अभ्यास करें। • साथियों के साथ श्रृव्य-दृश्य, चित्र, ई-सामग्री को साझा करें। • सांस्कृतिक इतिहास, भारतीय नृत्य का विकास, पौराणिक कथाओं से संबंधित कहानियों को पढ़ने के लिए पुस्तकालय जाएँ एवं नृत्य से संबंधित आलेखों को पढ़वाएँ। • वस्तुओं का अध्ययन करने और उन्हें कला और संस्कृति से संबंधित करने के लिए संग्रहालयों में जाएँ।	• सीखे गए नृत्य का प्रदर्शन करता है, सामग्री, विषय, भावनाओं को प्रभावी ढंग से बताता है। • एक कला के रूप में नृत्य, कलाकारों और विभिन्न नृत्य के कलाकारों के रूप की सराहना करता है । • लयात्मक कार्यकलापों का उद्भव होता है। उपलब्ध संसाधनों की योजना, रचना और उपयोग करते हुए रचनात्मक कौशल प्रदर्शित करता है। • सहकर्मियों के साथ-साथ स्वयं के नृत्य के भावों को दर्शाता है। • दैनिक जीवन में नृत्य से प्राप्त कलात्मकता और सौंदर्यबोध को अपनाता है।

• नृत्य कलाकारों और शिल्पकारों के साथ बातचीत करें और उनके काम का दस्तावेज़ीकरण करें। विभिन्न विषयों पर पावरप्वाइंट प्रेज़ेंटेशन बनाया और प्रस्तुत किया जा सकता है। • नर्तक-नर्तकियों के जीवन पर चर्चा करें और उनके नृत्य सीखने के साथ-साथ उनके सामने आने वाली चुनौतियों को भी समझें। • नृत्य के साथ संगत में उपयोग किए जाने वाले संगीत वाद्ययंत्रों का रखरखाव करें।	• कलाकारों के साथ या विभिन्न स्रोतों (प्रिंट और मीडिया) से बातचीत से प्राप्त सूचनाओं को व्यक्त करता है। • नृत्य के विकास के अतीत और वर्तमान परिदृश्य को जोड़ता है।

कक्षा 9 नाट्यशाला/थियेटर

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से या समूहों में अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है, कि वे —	**विद्यार्थी —**
• सभी तरह के कर्मों (अनुष्ठानों) का निरीक्षण एवं अध्ययन करें— (यह व्यापक रूप से माना जाता है कि रंगमंच की जड़ें इसकी पद्धतियों में होती हैं— प्राचीन या ऐतिहासिक)	• नाटक के माध्यम से अनुष्ठानों, त्यौहारों या किसी अन्य महत्वपूर्ण उत्सव/अवसर से संबंधित गतिविधियों को व्यक्त करता है।
• घर और हमारे आस-पास, जैसे— दैनिक दिनचर्या, विभिन्न त्यौहार, जन्म, शादी, मृत्यु, त्यौहारों आदि के अवसर से संबंधित विभिन्न अनुष्ठानों को याद करें। उन विभिन्न प्रथाओं को याद कर सकते हैं। गीत, नृत्य, कथा और रामलीला जैसे प्रदर्शन या विभिन्न समुदायों द्वारा साझा की गई अन्य कहानियाँ इन सभी क्रियाओं के बारे में विचार करें।	• मौखिक और गैर-मौखिक संचार कौशल के माध्यम से एकत्र किया गया अनुभव व्यक्त करता है।
• इन अनुष्ठानों की उत्पत्ति और महत्व के बारे में लोगों अथवा अध्ययन सामग्री आदि से जानकारी इकट्ठा करें।	
• एक भूमिका निभाने की व्यवस्था करें जिसमें उत्सव और समारोहों से संबंधित विभिन्न विषयों को दर्शाया जाता है।	• प्रकृति को उसकी विविध अभिव्यक्तियों में पहचानता है और उससे जुड़ जाता है।
• विभिन्न अभिव्यक्तियों/रूपों में प्रकृति का निरीक्षण करें। पेड़-पौधों, जानवरों, पक्षियों, मानव आदि के किसी भी व्यवहार, गतिविधि या आवाज़ की नकल करें।	• प्रकृति की मौखिक और गैर-मौखिक रूप से विशेषताओं को व्यक्त करता है।
• जीवन की इन स्थितियों को याद रखें— आपका अपना, एक समूह में, एक परिवार में, पड़ोस में, समाज में या कहानी की पुस्तक या समाचार-पत्र पढ़ते समय। एक कहानी और एक विषय खोजने के लिए इनका पुनर्निर्माण करें।	• जीवन की स्थितियों का वर्णन करता है— नाटक जीवन की परिस्थितियों से संबंधित है, संघर्षों का सामना करने, समस्याओं को सुलझाने और पूरे आनंद के लिए।
• अपने बचपन को याद करें और बालनाटक (घर-घर खेलना) या हमारे दैनिक जीवन में घटती घटनाओं की कल्पना की भूमिका में बच्चों का निरीक्षण करें और इन पर नाटक तैयार करने की कोशिश करें।	• संवाद रंगमंच की अपनी भाषा होती है जिसमें कुछ बुनियादी श्रेणियाँ शामिल होती हैं — ▪ मौखिक ▪ गैर-मौखिक ▪ दृश्य ▪ श्रव्य ▪ कामुक ▪ भावपूर्ण ▪ रचनात्मक लेखन

• एक भूमिका निभाएँ— यह एक भूमिका निभाने की तैयारी है जिसमें शामिल किए जाने वाले चरित्र को जानना और समझना शामिल होगा। ▪ निभाई जाने वाली भूमिका की पृष्ठभूमि ▪ अन्य पात्रों के संबंध में चरित्र ▪ नाटक के संबंध में चरित्र • प्रदर्शन — ▪ पाठ्यपुस्तक से कविताओं का पाठ ▪ पाठ्यपुस्तक या किसी अन्य पुस्तक में अध्याय से कहानी सुनाना ▪ नाटक/रंगमंच तैयार करने के लिए स्क्रिप्ट बनाना	• विश्लेषण करता है कि अभिव्यक्ति के लिए हमारे शरीर के विभिन्न हिस्सों का उपयोग कैसे किया जा सकता है। • विश्लेषण करता है कि नाटक की विचार प्रक्रिया की प्रस्तुतियों में मल्टीमीडिया या कठपुतली कैसे एक बड़ी भूमिका निभाती है।
• रंगमंच के विभिन्न रूपों के उदाहरणों के साथ चर्चा करें — ▪ नाटकीय ▪ संगीत ▪ नृत्य ▪ कठपुतली ▪ माइम (संकेत) ▪ मास्क ▪ मल्टीमीडिया • इसके संबंध में एक नाटक पर चर्चा करें — ▪ एक स्थापित नाटककार द्वारा एक नाटक पढ़ना ▪ दृश्यों और इकाइयों द्वारा नाटक का विश्लेषण करें ▪ नाटक के रूप के बारे में निर्णय लें ▪ विभिन्न नाटको को पढ़ें ▪ एक नाटक प्रदर्शन में भाग लेने और इसका विश्लेषण करें।	• विभिन्न प्रकार के नाटक और नाटककारों की सराहना करता है। • दृश्यों, पात्रों, स्थितियों और वास्तविक जीवन की स्थितियों से उनके संबंध का विश्लेषण करता है। • आवाज़ के मॉड्यूलेशन के कौशल को प्रदर्शित करता है।

इस स्तर पर विद्यार्थियों को नाट्यशाला की मूल बातों को समझने के लिए तैयार किया जाता है जिसमें अवलोकन, प्रतिबिंब, रचनात्मक अभिव्यक्ति, समस्या को सुलझाना आदि शामिल हैं। वे नाट्यशाला कौशल की मूल बातें भी सीख सकते हैं और साथ ही वे विरासत और विविधता की पृष्ठभूमि में जीवन के कलात्मक और रचनात्मक पहलुओं के बारे में संवेदनशील हो सकते हैं।

कक्षा 10 दृश्य कला

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से या समूहों में अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है, कि वे —	**विद्यार्थी —**
• प्राकृतिक और मानव निर्मित वस्तुओं के कलात्मक अन्वेषण के अभ्यास के लिए उपयुक्त स्थलों/स्थानों पर आउटडोर स्केचिंग और पेंटिंग के लिए जा सकें।	• द्वि-आयामी कला रूपों (स्केचिंग, ड्रॉइंग और पेंटिंग, प्रिंटिंग, ग्राफ़िक डिज़ाइनिंग) और त्रि-आयामी (दृश्यकला में मिट्टी मॉडलिंग, शिल्प, मूर्तिकला, निर्माण कार्य आदि) का अंतर करता है।
• छाया के साथ प्रकाश, कठोर सतह के साथ कोमल सतह, हलके रंगों सहित चमकीले रंगों, पेड़, वनस्पति, पत्ते, झाड़ी, फूल, जड़ आदि के अध्ययन की गहराई में जाएँ और उनके मध्य अंतर का अनुभव करें।	• विज़ुअल आर्ट्स (रेखा, आकृति, रूप, बनावट, रंग, रचना और परिप्रेक्ष्य) के तत्व द्वारा बताता है।
• प्राकृतिक संरचनाओं में सभी तत्वों (अर्थात्— रेखा, आकार, रूप, बनावट, रंग, रचना और परिप्रेक्ष्य); दृश्यों, स्थितियों आदि, तेज़ रोशनी और छाया के लिए धूप का दिन, ज्यामितीय आकृतियों और रेखाओं के लिए वास्तुशिल्प दृश्य, घुमावों और उतार-चढ़ावों के लिए फोलिएज, हवाई परिप्रेक्ष्य के लिए परिदृश्य आदि का निरीक्षण और पहचान करें।	• रंग, रूप, प्रकाश और छाया, विभिन्न बनावटें और प्राकृतिक रूप, कलाकारों/शिल्पकारों के कार्य और मानव निर्मित वस्तुओं में सौंदर्य द्वारा प्राकृतिक सुंदरता की सराहना करता है।
• दिए गए कला कार्य में प्रत्येक तत्व और उसके मूल्य को सूचित करने के लिए कलाकारों के अनुकरणीय कार्य का उपयोग करते हुए कक्षा में दृश्य कला के प्रत्येक तत्व की चर्चा करें।	• दृश्यकला की विभिन्न तरीकों और सामग्री के साथ प्रयोग करता है।
• 'व्यू फाइंडर' (तत्काल या आस-पास के परिवेश) की सहायता से विभिन्न प्रकार की रचनाओं (क्षैतिज ऊर्ध्वाधर, सममित, असममित आदि) का अभ्यास करें। रंग परिप्रेक्ष्य और रैखिक परिप्रेक्ष्य के आधार पर रचनाओं की फ़ोटो खींचने के लिए मोबाइल कैमरों का उपयोग कर सकते हैं।	• दृश्यकला की विभिन्न कलाओं में प्रयुक्त साधनों, उपकरणों और सामग्रियों की पहचान करता है।
• बनावट में विविधता का पता लगाने के लिए विभिन्न पेड़ों की छाल के छाप लें, 3–4 वस्तुओं (एक किताब/ब्लॉक, एक या दो फलों/सब्ज़ियों, एक बोतल (या कोई सममित वस्तु) एक कपड़ा/ड्रेपरी आदि) की स्टिल तसवीरें अलग-अलग आकार, प्रकाश और छाया, बनावट, रेखा और परिप्रेक्ष्य आदि का अभ्यास करने के लिए बना सकते हैं।	• दृश्यकला की समकालीन, पारंपरिक/लोक/क्षेत्रीय शैलियों को मान्यता देता है। • विभिन्न कलाओं, जैसे— पेंटिंग, मूर्तिकला, प्रिंट, तसवीरें, ग्राफ़िक्स, शिल्प आदि की सराहना करता है। • कलाकारों और शिल्पकारों के काम पर गंभीरता से प्रतिक्रिया दर्शाता है। • वस्तुओं में मनुष्य के द्वारा निर्मित डिज़ाइन में सुंदरता की व्याख्या करता है।

• रंगों का पहिया, विभिन्न रंग संयोजन, थीम और स्थिति द्वि-आयामी और त्रि-आयामी सामग्री की विविधता के साथ दोनों के बीच मूल अंतर को समझने के लिए स्वयं कार्य करने के अनुभव में भाग लें। उदाहरण के लिए त्रि-आयामी सामग्री के साथ काम करना, जैसे— मिट्टी, नरम लकड़ी, नरम पत्थर, गत्ते के खाली डिब्बे/बक्से, मुलायम तार, फेंकने वाली बोतलें आदि। जबकि दिए गए विषय/विषय-वस्तु पर मूर्तियाँ बनाते समय और द्वि-आयामी सामग्री, जैसे— कागज़, पेंसिल, क्रेयॉन, पानी या पोस्टर के रंग आदि, और चित्रकला और मूर्तिकला की गैर-पारंपरिक कम लागत वाली क्षेत्रीय सामग्री का उपयोग करें।	• संग्रहालयों/ कलाकार स्टूडियो/दीर्घाओं के भ्रमण, आधारित रंग योजनाएँ, शेड्स और टोन आदि बनाएँ। कलाकारों और कारीगरों के साथ बातचीत करता है और उनके लाइव परफ़ार्मेंस/प्रदर्शनी, मेलों और त्यौहारों का प्रलेखन करता है। • नए चित्रों को बनाने के लिए पारंपरिक और लोक चित्रकारों के पेंटिंग कौशल और शैलियों की सराहना करता है और अपनाता है।
• कक्षा में वीडियो क्लिप, दृश्यकला में विभिन्न तरीकों और सामग्रियों पर स्लाइड-शो, जैसे— ड्राइंग पेंटिंग, पेंसिल और चारकोल स्केचिंग, ऑयल-पेस्टल और रंगीन चॉक ड्राइंग, ब्लॉक प्रिंटिंग, प्रिंट मेकिंग, वॉल पेंटिंग, म्यूरल मेकिंग, कॉमिक स्ट्रिप्स बनाना, क्ले मॉडलिंग, टेराकोटा और पॉटरी को देखने के लिए शामिल हों। नरम लकड़ी/प्लास्टर ऑफ़ पेरिस और नरम पत्थर के साथ मूर्तिकला बनाना, मिश्रित माध्यम के साथ त्रि-आयामी रूपों का निर्माण, शिल्प के रूप में नए उपयोगिता उत्पादों की डिज़ाइनिंग आदि।	• गतिविधि, संसाधनों की पहचान करना और कला अभिव्यक्ति की योजना बनाते समय रचनात्मक कौशल उपयोग करता है। • कलात्मक कार्य बनाता है और चयनित माध्यमों के माध्यम से कलात्मक कुशलता से भावनाओं का संचार करता है। • दैनिक जीवन में कलात्मक और सौंदर्य संवेदना को अपनाता है।
• द्वि-आयामी और त्रि-आयामी अलग-अलग कलाकारों द्वारा उनकी विशेषताओं और कारणों को विशिष्ट श्रेणी में रखने के कारणों का स्पष्ट उल्लेख करें। द्वि- और त्रि-आयामी विधियों और सामग्री के साथ आलंकारिक रचनाएँ बनाएँ।	• साधनों और उपकरणों के सुरक्षित उपयोग और रखरखाव के लिए सरोकार प्रदर्शित करता है।
• विभिन्न सामाजिक विषयों/मुद्दों पर चर्चा करें और चुने गए किसी भी सामाजिक विषय पर पोस्टर रचना और उनके माध्यम से उनके बारे में जागरूकता पैदा करें। • अनुभव करें कि मूर्तिकला, क्ले मॉडलिंग, टेराकोटा, पॉटरी, रिलीफ़ कार्य आदि के साथ काम करते हुए कला के सभी त्रि-आयामी कार्यों को नज़दीक से महसूस किया और समझा जा सकता है, यह संबंध जानें कि ब्रेल भी उसी सिद्धांत पर काम करता है और दृष्टिलोप विद्यार्थी कला के त्रि-आयामी काम को समझ सकते हैं/आनंद ले सकते हैं और त्रि-आयामी कला सामग्रियों के माध्यम से भी इन्हें बना सकते हैं/व्यक्त कर सकते हैं।	• संवेदनशीलता के साथ कला सामग्री और कलाकृतियों का रखरखाव करता है। विभिन्न मूल्यों, जैसे— सहयोग, टीम में कार्य करना, देखभाल और साझा करना, अनुशासन, प्रकृति और जानवरों के लिए करुणा, दूसरों के लिए सम्मान, सांस्कृतिक विविधता और सांस्कृतिक विरासत के लिए सराहना को प्रदर्शित करता है।

- समूहों में किसी भी एक कला के साधन, उपकरण और सामग्री पर कैटलॉग बनाएँ। विभिन्न टीमों को चयनित कला के रूप में पारंपरिक उपकरणों और सामग्रियों की सूची का पता लगाने और तैयार करने के लिए सभी संभावनाओं (पुस्तकों, इंटरनेट, कला शिक्षकों, कलाकारों आदि) का पता लगाने हेतु दृश्यकला श्रेणी के तहत अलग-अलग कला रूप दिया जा सकता है।
- कक्षा में चर्चा (शिक्षक द्वारा सुविधानुसार) के बाद अनुकरणीय कला कार्य (कला प्रदर्शनियों या चुने गए चित्रों से) देखें। तकनीक की संरचना और सुंदरता के सौंदर्यशास्त्रीय महत्व का अनुभव करने हेतु, जाने-माने कलाकारों के चुने हुए कला कार्यों की डिजिटल तसवीरों को कक्षा में देखें।
- विभिन्न कलाकारों और शिल्पकारों के साथ मिलना और बातचीत करना, यह जानना कि उनकी शैलियों को विकसित करने में किसने उन्हें अपने अभ्यास आदि के साथ जारी रखने के लिए प्रेरित किया।
- दो-तीन विद्यार्थियों की छोटी टीमों में भ्रमण के कार्यक्रम, प्रदर्शनियों आदि की छोटी रिपोर्ट बनाएँ और प्रस्तुति (श्रव्य-दृश्य और/या लिखित रूप) करें। संबंधित क्षेत्र में महान कलाकारों की कलाकृति के उल्लेख के साथ कला के विभिन्न रूपों पर स्क्रैपबुक्स बनाएँ। प्रस्तुतिकरण (मोबाइल, कैमरा, आईसीटी का उपयोग ऐसी गतिविधियों के लिए किया जा सकता है) के माध्यम से कक्षा में साझा करें।
- कलात्मक और ऐतिहासिक महत्व (संग्रहालय, दीर्घा, कला-स्टूडियो, विरासत स्थल, स्मारक, प्रदर्शनियाँ, उत्सव, समारोह, हाट-बाज़ार आदि) के विभिन्न स्थानों पर जाएँ तथा स्थानों, स्थितियों लोगों और उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति का प्रथम अनुभव प्राप्त करने के लिए दृश्य समृद्धि और मौलिकता के लिए उनकी सांस्कृतिक विरासत की जानकारी प्राप्त करें। कक्षा में विवरण और प्रस्तुतिकरण बनाएँ तथा शिक्षक/शिक्षिकाओं के साथ चर्चा करें।

- पारंपरिक, समकालीन और लोक शैली के चित्रों की मुख्य विशेषताओं पर चर्चा करें और उनके विषय में पता लगाएँ।
- समकालीन विषयों पर पारंपरिक शैली (उदाहरण के लिए— राजस्थानी/पहाड़ी/मुगल मिनिएचर) और चित्रकला की लोक शैली (उदाहरण के लिए— मधुबनी/गोंड/वारली आदि) का अभ्यास करते हुए पेंटिंग बनाएँ। कला की योजना और उत्पादन तथा प्रचार में आईसीटी का उपयोग करें। प्रिंट (पोस्टर वॉल मैगज़ीन, स्कूल बुलेटिन और स्कूल मैगज़ीन) के माध्यम से अपने कला कार्य को प्रदर्शित करें।
- विभिन्न प्लेटफ़ार्मों पर विद्यार्थियों की कलात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त और प्रदर्शित करें, जैसे— मानव संसाधन विकास मंत्रालय के कला उत्सव और कई अन्य विभागों और मंत्रालयों द्वारा आयोजित पेंटिंग प्रतियोगिताएँ, शंकर अंतरराष्ट्रीय बाल प्रतियोगिता और अन्य, जो बच्चों के मन में प्रोत्साहन लाती हैं (शिक्षक की सुविधानुसार) इनकी जानकारी विद्यार्थियों तक पहुँचाएँ।
- अपने कला के कार्य पर और अपने साथियों द्वारा किए गए कार्यों पर स्वयं मूल्यांकन के लिए इनका अवलोकन करें।
- विभिन्न माध्यमों का उपयोग करते हुए स्वतंत्र रूप से पेंट करें और शिल्पकारी करें और पूरे किए गए कार्य का एक फ़ोल्डर/पोर्टफ़ोलियो बनाएँ।
- स्कूल स्तर पर एक विशिष्ट विषय के साथ कला प्रदर्शन या/और प्रदर्शनी (कम-से-कम वर्ष में एक बार) लगाएँ, जहाँ विद्यार्थियों को व्यवस्थित प्रदर्शन, शिक्षकों के साथ चर्चा में संसाधनों को व्यवस्थित करने, कैटलॉग तैयार करने, प्रदर्शन कार्यक्रम का विज्ञापन देने के लिए पोस्टर बनाने, माता-पिता/समुदाय और अधिकारियों के लिए निमंत्रण कार्ड, प्रदर्शन को क्यूरेट करने और प्रदर्शन पर विद्यार्थियों, कर्मचारियों और समुदाय की अभिव्यक्ति की रिकॉर्डिंग करते समय (प्रिंट और वीडियो) की रिपोर्ट बनाने की ज़िम्मेदारी दी जाती है।
- कला की घटनाओं, प्रदर्शनियों और अन्य लोगों के साथ अपनी अभिव्यक्ति और दृष्टिकोण साझा करने हेतु प्रतियोगिता (विभिन्न स्तरों पर इंटर-स्कूल) में भाग लें और एक ही विषय/थीम, अन्य विद्यार्थियों के काम के अनुभव पर कई दृश्य बिंदुओं को समझें और कला प्रशंसा की सामान्य भावना को बढ़ावा दें।

- कक्षा और स्कूल के बोर्ड पर रोटेशन द्वारा प्रदर्शन, स्कूल परिसर के सौंदर्यीकरण की योजना, विभिन्न विषयों के साथ स्कूल की दीवार पर चित्रकारी, स्कूल अभियान/जागरूकता अभियान आदि के लिए प्लेकार्ड, पोस्टर और बैनर बनाएँ।
- कक्षा की व्यवस्था में दैनिक गतिविधियों में कलात्मक कौशल का अभ्यास और प्रदर्शन करें, बैठने की व्यवस्था में बदलाव लाएँ, स्टोर सामग्री, औज़ार और उपकरणों, कलाकृतियों का रखरखाव करें, आस-पास को स्वच्छ और सुंदर रखें।
- कला गतिविधियों के दौरान उपयोग किए जाने वाले साधन, उपकरण, सामग्री को स्वच्छ रखना और रखरखाव करें, उनके द्वारा बनाए गए कला उत्पादों के संरक्षण का कौशल विकसित करें।
- कला कार्यों को प्रस्तुत करने के कौशल का अभ्यास करने के लिए नियमित अंतराल पर डिस्प्ले बोर्ड पर कक्षा में कला के कार्य का कलात्मक प्रदर्शन आयोजित करें।
- अपनी परियोजनाओं/गतिविधियों के लिए गैर-पारंपरिक सामग्रियों के साथ अपने रंग, ब्रुश और हाथ से बने कागज़ों, प्रयोग से रचनाएँ बनाएँ और प्रक्रिया में बनाए गए अपने नवाचार/उत्पादों पर प्रस्तुतीकरण दें। कक्षा की गतिविधियों के दौरान वांछित मूल्यों का अभ्यास करें, जिसमे साथियों की सराहना और सहयोग करें, टीम लीडर और अनुयायियों के रूप में टीम भावना प्रदर्शित करें, साझा की गई सामग्रियों और उपकरणों के लिए आदर दर्शाएँ।
- पृथ्वी पर जीवन के लिए प्रकृति के मूल्य को समझने और कला के माध्यम से जागरूकता फैलाने के साथ इसको चित्रित करें। पोस्टर, नारे, चित्र के कैप्शन आदि के माध्यम से सरोकार साझा करें। दैनिक जीवन में सुरक्षित पर्यावरण प्रथाओं और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए योजना अभियान में भाग लें और प्रस्तुतीकरण दें।

• जानवरों और पक्षियों पर पारिस्थितिकीय सौहार्द के लिए उनके महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने हेतु पोस्टर, कार्ड, मास्क और पेंटिंग बनाकर पक्षियों और जानवरों की सुंदरता का पता लगाने के लिए कला परियोजनाओं पर काम करें। पक्षियों और जानवरों के बारे में रोचक जानकारी के साथ टी-शर्ट, बैज आदि के लिए डिज़ाइन बनाएँ। • महान कलाकारों के जीवन और उनकी कला तथा मानवीय मूल्यों के प्रति आदर की कहानियाँ पढ़ें और सुनाएँ। • नियमित अभ्यास/जीवन कौशल के उपयोग और मूल्यों को संकल्पपूर्वक मज़बूत करने हेतु शिक्षकों की मदद से साथियों के सकारात्मक व्यवहार की सराहना करें और इसे स्वीकार करके मूल्यों को बढ़ावा दें। • भारतीय संस्कृति, उनमें उपयोग किए गए कला तत्वों के कलात्मक उदाहरणों की विविधता से परिचित हों, स्लाइड-शो के माध्यम से विभिन्न विरासत कला और शिल्प पर कक्षा में चर्चा करें।	

कक्षा 10 प्रदर्शन कला (संगीत)

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से या समूहों में अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है, कि वे —	**विद्यार्थी —**
• प्रकृति में ध्वनियों और बाहर के शोर को सुनें तथा संगीत और गैर-संगीत ध्वनियों में अंतर की समझ बनाएँ। • संगीतज्ञों या लोगों द्वारा व्यक्त की जाने वाली विभिन्न प्रकार की ध्वनि की नकल करें। • संगीत में वाणी और आवाज़ के उतार-चढ़ाव पर चर्चा में भाग लें। • संगीतकारों की विभिन्न प्रकार की आवाज़ें, विभिन्न संगीत वाद्ययंत्रों की ध्वनि, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, जैसे की-बोर्ड आदि सुनें। • विभिन्न प्रकार के संगीत वाद्ययंत्रों, जैसे— ढोल, सितार, रावणहत्था, सारंगी, शहनाई, तबला आदि के माध्यम से बजाया जाने वाला संगीत सुनें।	• विभिन्न प्रकार की ध्वनियों के प्रति संवेदनशील व्यक्ति अपने आस-पास के परिवेश से सुनता है— ▪ संगीत और गैर-संगीत दोनों प्रकार की ध्वनियों को पहचानता है। ▪ गायन संगीत के माध्यम से या संगीत वाद्ययंत्र से ध्वनि को पुन: उत्पन्न करता है। ▪ संगीतकारों की विभिन्न प्रकार की ध्वनि की पहचान करता है। ▪ संगीत वाद्ययंत्र की विभिन्न प्रकार की ध्वनि की पहचान करता है।
• विभिन्न राज्यों के विभिन्न प्रकार के रिकॉर्ड किए गए संगीत तथा लोक संगीत प्रस्तुतीकरणों और कलाकारों के लाइव शो को सुनें। • संगीत और संगीतकारों से संबंधित मूर्तियों, चित्रों आदि की तसवीरें लें। • गायन-वादन, संगीत, नृत्य तथा नाट्य प्रस्तुतियों के वीडियो रिकॉर्ड करें और कक्षा में सुनें। • विभिन्न समुदायों की संगीत रचनाओं की बोली को समझें। • शास्त्रीय और उप शास्त्रीय दोनों प्रकार के नृत्य के वीडियो दिखाएँ। • संगीत की विधाओं के ऐतिहासिक विकास और उनके क्रमिक विकास को जानने के लिए संगीत और नृत्य पर किताबें पढ़ें। • संगीत वाद्ययंत्रों के विभिन्न प्रकारों को सुनें और उनकी श्रेणियों अर्थात् तंतवाद्य (स्ट्रिंग इंस्ट्रूमेंट्स), घनवाद्य, अवनद्यवाद्य (परक्युशन इंस्ट्रूमेंट्स), सुषिरवाद्य (ब्लोइंग इंस्ट्रूमेंट्स) आदि की पहचान करें।	• गायन की विभिन्न शैलियों और संगीत वाद्ययंत्र की श्रेणियों को वर्गीकृत करता है। • भारत की सांस्कृतिक विरासत की विविधता के साथ इसका वर्णन करता है। • कलाकारों के योगदान, संगीत के विभिन्न रूपों और अन्य कलाओं की सराहना करने के लिए संगीत, नृत्य और नाटकीय प्रस्तुति के वीडियो विकसित करता है। • विभिन्न संगीत और नृत्य रूपों के बीच आपसी संबंध को बनाता है। • पाठ्य पुस्तकों में कहानियों से संबंधित पृष्ठभूमि संगीत की संकल्पना को समझता है। • विभिन्न प्रकार के संगीत वाद्ययंत्रों को वर्गीकृत करता है। • विभिन्न रागों और लयबद्ध संरचनाओं में विभिन्न ताल में नोट्स के विभिन्न तरीके प्रदर्शित करता है। • कलाकारों को सुनकर कुछ रागों को वर्गीकृत करता है। • विभिन्न लयबद्ध प्रतिरूपों को बजाकर तालवाद्य का प्रदर्शन करता है।

• राग भैरव, भैरवी, भोपाली, देश, वृन्दाबनी, सारंग, बलिहारी, शंकरा-भरणम, कल्याणी, खमाज़, बिहाग आदि गाएँ। विद्यार्थियों को अन्य रागों में भी भारतीय शास्त्रीय संगीत में अंतर समझ में आना चाहिए।	• संगीत की समकालीन, पारंपरिक, लोक, क्षेत्रीय और शास्त्रीय शैलियों को एक-दूसरे से अलग करने वाली विभिन्न विशेषताओं को समझकर अंतर करता है।
• संगीत में विविध रूपों को गाने के लिए स्केल को चुनें।	• संगीत और नृत्य की पारंपरिक शैलियों का प्रदर्शन करता है।
• विभिन्न प्रकार के रिकॉर्ड किए गए संगीत प्रस्तुतीकरणों को सुनें।	• प्रदर्शन— अलंकार, शास्त्रीय रचनाएँ और शास्त्रीय संगीत आधारित विभिन्न लयबद्ध संरचनाओं और स्केल में रचनाएँ गाते हैं।
• तबला, ढोलक, ढोल, मृदंगम, या किसी भी तालवाद्य पर सही ध्वनि पैदा करने के लिए अंगुलियों और हथेली का उपयोग करके विभिन्न ताल और उनकी लय पर गाने बजाएँ।	
• ध्रुपद, ख्याल, कृति, वर्णम, तराना या तिल्लाना, पदम और गत जैसी शास्त्रीय संगीत की विभिन्न शैलियों को गाएँ और बजाएँ।	• विभिन्न वाद्ययंत्र पर ताल प्रदर्शन करता है।
• एनआरओईआर, स्वयं पोर्टल आदि जैसे रिपॉजिटरी में संगीत रिकॉर्डिंग को सुनें।	• पारंपरिक संगीत का प्रदर्शन करता है।
• हिंदुस्तानी संगीत में मूल विस्तार या एक चौका कला और दो मध्यम कलाकृति के साथ लयबद्ध संगत (दो द्रुत ख्याल) के साथ निर्धारित राग भैरव, बिहाग, दुर्गा आदि और कर्नाटकी संगीत में राग मायामलवगौला और शुभपंतुवराली में राग गाएँ।	• विभिन्न तरीके में ताल को प्रदर्शित करता है। • संगीत में समय चक्र के महत्व को समझने के लिए विभिन्न प्रकार के लयबद्ध तरीके को अलग करता है।
• विभिन्न राज्यों के ख्याल, गीतम, कृतियों, वर्णम, गत, भजन, लोकगीत आदि को सुनें और सीखें।	• हिंदुस्तानी, कर्नाटक और जनजातीय संगीत की विभिन्न ध्वनियों और लयबद्ध तरीके में अंतर करता है। • वाद्ययंत्रों में संगीतकारों द्वारा प्रस्तुत जटिल बोलों की सराहना करते हैं।
• हिंदुस्तानी संगीत में झपताल और तिलवाड़ा या कर्नाटक संगीत सुनने में आदिताल, खंडा, त्रिपुटताल जैसे तालों को प्रदर्शित करने के लिए संगीत में समय चक्र के महत्व को समझने के लिए विभिन्न प्रकार के लयबद्ध पैटर्न में अंतर जानें।	• पाठ्यपुस्तक में कविताओं की पहचान करता है और संगीत नाटक बनाता है । • कविता के लिए संगीत और कहानियों के लिए पृष्ठभूमि संगीत आदि बनाता है।
• पश्चिम की लयबद्ध ध्वनियों, कर्नाटक तालवाद्य कचेरी की आवाज़, तबला तरंग, काष्ठ तरंग, आदिवासी संगीत की लयबद्ध आवाज़, तालबद्ध वाद्यों और ताल वाद्ययंत्रों पर एकल ध्वनियों की ऑडियो-विज़ुअल रिकॉर्डिंग सुनें।	• लयबद्ध पैटर्न, पिचों और टोन, रंगमंच की सामग्री, वेशभूषा, हाव-भाव, अभिव्यक्ति, आदि के निर्माण के लिए गैर-पारंपरिक तरीकों और सामग्रियों के साथ प्रयोग करता है। • अपनी भावनाओं का मौलिकता के साथ कलात्मक रूप से संचार करता है।
• ताल-दुगुन, तिगुन, चौगुन के साथ तालों की लयकारी सुनें और बजाएँ। (शिक्षकों या विद्यार्थियों द्वारा एलईसी-डीईएम पाठ के साथ)	• रचनात्मक कौशल का उपयोग करता है— उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करते हुए गतिविधियों को डिज़ाइन करता है।

- तबला/मृदंगम्/पखावज वादकों द्वारा प्रस्तुत जटिल बोलों की रिकॉर्डिंग सुनें और इनमें से कुछ बोलों का सस्वर पाठ भी करें।
- पश्चिमी संगीत में विभिन्न प्रकार के ड्रम रिकॉर्ड या प्ले करें और पश्चिमी और भारतीय शैलियों में लयबद्ध पैटर्न को जानने की कोशिश करें।
- वर्ष के अंत तक रागों पर आधारित छोटी रचनाएँ बनाएँ।
- कविताओं को धुन दें और तुकांत पंक्तियों को भी सुनाया जा सकता है।
- पाठ्यपुस्तकों में कविताओं को संगीत दें और पाठ्य पुस्तकों में कहानियों के आधार पर संगीत नाटक भी प्रस्तुत करें।
- प्लास्टिक की बोतलों, सूखी पत्तियों, खोखले बाँस की टहनियों आदि जैसे कचरे का उपयोग करके ध्वनि बनाएँ, साथ ही अपशिष्ट पदार्थों का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।
- खेल खेलें— संगीत की ताल पर सूत कातें (कहानी को आगे बढ़ाने के लिए संगीत की पंक्तियाँ गाएँ) उदाहरण के लिए यदि थीम, वनों की कटाई है तो इसे किसानों द्वारा बनाया जा सकता है और फिर औपचारिक तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है।
- आपसी संबंध को समझने के लिए थिएटर, डांस, विज़ुअल आर्ट्स के वीडियो देखें। जैसे राजस्थान राज्य की एक फड़ पेंटिंग भोपों से जुड़ी है जो कहानी गाते हैं। ऐसे वीडियो दिखाए जा सकते हैं। सीखने वालों से कहा जाता है कि वे पारंपरिक फड़ चित्रकारों और भोपों के रूप में म्यूज़िकल पीस के साथ-साथ कहानी/पेंटिंग बनाएँ।
- हारमोनियम, तानपुरा, तबला या ढोलक जैसे संगीत वाद्ययंत्रों की देखभाल करें जिन्हें उचित देखभाल और भंडारण स्थान की आवश्यकता होती है। तानपुरा और अन्य उपकरणों को अलमारी, लकड़ी के बक्से में या स्टैंड पर रखा जाना चाहिए। इनका रखरखाव बच्चों द्वारा किया जाता है। बक्सों को बहुत साफ़-सुथरा रखा जाना चाहिए, धूल को हर रोज़ कपड़े से पोंछना चाहिए और हर दिन अभ्यास के बाद संगीत वाद्यों को अपने संबंधित स्थान पर वापस रखना होगा।

- प्रकृति के विभिन्न उपादानों से संगीत भावों की पहचान करता है और कहानी को आगे बढ़ाने के लिए संगीत बनाता है।
- नृत्य, रंगमंच, दृश्यकला के लिए संगीत के अंतर-संबंध को समझता है।
- संचार— चयनित कला के माध्यम से मौलिकता के साथ कलात्मक रूप से अपनी भावनाएँ व्यक्त करता है।
- सामग्री, संगीत वाद्ययंत्र, उपकरण और अन्य उपकरणों का सुरक्षित उपयोग करता है।
- महत्वपूर्ण सोच, कौशल का उपयोग करते हुए कलात्मक अभिव्यक्तियों (अपने और अपने साथियों के) पर प्रतिक्रिया देता है।
- सराहना करता है— साथियों के प्रदर्शन और विश्लेषण का प्रदर्शन करता है।

- विश्लेषण, प्रतिबिंबन और प्रथाएँ।
- दिन-प्रतिदिन के जीवन में कलात्मक और सौंदर्य संवेदना को अपनाता है।
- अभ्यास करता है— विभिन्न मूल्यों, जैसे— सहयोग, टीमवर्क, साझा करना, सहानुभूति, अनुशासन, करुणा, अभ्यास कला और दिन-प्रतिदिन की स्कूल गतिविधियों में विविधता के लिए सम्मान।
- कला रूपों की व्याख्या और स्पष्ट करता है।
- पीपीटी जैसे मल्टीमीडिया संसाधनों के माध्यम से प्रस्तुतीकरण करता है, कलाकारों और कला रूपों के बारे में अनुभव साझा करने के लिए समूहों में मूवीमेकर के माध्यम से संपादन, व्यवस्थित सीखने का मार्ग प्रशस्त करता है, जानकारी को संरक्षित करता है, सीखने वाले का आत्मविश्वास बढ़ाता है और जीवन में निष्पक्षता को बढ़ाता है।

• आरोह, अवरोह और पकड़ के माध्यम से राग बिहाग और भैरवी सीखें। राग में एक छोटी रचना सीखनी पड़ती है। विद्यार्थियों को पाँच के समूह में बैठने दें और एक ताल में एक सरगम गीत लिखें। प्रत्येक समूह कुछ पूर्वाभ्यास के बाद सरगम गीत की अपनी पंक्ति गाएगा। • एक-एक करके विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई रेखाओं पर विचार करें। सभी रचनाओं में से चार पंक्तियों को चुना जा सकता है और फिर पूरी कक्षा इसका अभ्यास कर सकती है। • कक्षा, स्कूल परिसर, अपने घर, सामाजिक समारोहों, सार्वजनिक कार्यों आदि में किसी भी कला के रूप को अपनाएँ। विभिन्न बच्चों द्वारा उत्पन्न विचारों पर व्यावहारिक रूप से चर्चा की जानी चाहिए और प्रदर्शन किया जाना चाहिए। स्कूलसभा/मंच के माध्यम से, त्यौहारों के घरेलू उत्सव या किसी भी महत्वपूर्ण दिन दर्ज़ किया जाना चाहिए। उस समय चित्र या वीडियो का प्रदर्शन किया जाना चाहिए। • संगीत गतिविधियों में भाग लेने के लिए अलग क्षमता वाले बच्चों को प्रदर्शन करने का अवसर दें और व्यक्तिगत रूप से कक्षा, सार्वजनिक स्थानों, असेंबली में अपनी संगीत प्रतिभा को प्रस्तुत करें। • संग्रहालय में जाकर उसमें उपलब्ध वस्तुओं की जाँच करें। • कलाकारों और कारीगरों के साथ बातचीत करें और उनके लाइव प्रदर्शन/मेलों और त्यौहारों या किसी अन्य कार्यक्रम में भाग लें। • संगीत, रागों आदि के विकास के बारे में जानने के लिए कलाकारों से बातचीत करें।	• अंदर छिपी क्षमता, दक्षता तथा भावनाओं को जाग्रत करता है।

कक्षा 10 नृत्य

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से या समूहों में अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है, कि वे— • नृत्य के तत्वों को पेश करने से पहले वार्म शारिरिक गतिविधियों में संलग्न करें। (शरीर, मन और आत्मा के बीच संबंध बनाएँ) • कक्षा 9 में सीखे गए शास्त्रीय नृत्य रूपों पर चर्चा और संशोधन, मूल पद संचालन, अन्य शारीरिक गतिविधियाँ, अभिव्यक्तियों, साहित्य, वेशभूषा, लयात्मक स्वरूप, संगीत आदि का अभ्यास करें। • कक्षा 9 में सीखे गए शास्त्रीय नृत्यरूप में उपयोग किए जाने वाले मूल पद संचालन का अभ्यास करें। • ताली और खाली (तीन ताल, झपताल, दिताला, रूपक) के साथ निर्धारित ताल की पढ़ंत को गायन में संलग्न करें। • विचार के तहत नृत्य शैली की मूल मुद्राओं, गतिविधियों का अभ्यास करें और कुछ नए हाव-भाव को भी सीखें। • सीखे जा रहे शास्त्रीय रूप में पारंपरिक प्रदर्शनी (25–30 मिनट) के लिए क्षमता अर्जन करें। • कथक— कक्षा 9 में सीखे गए नृत्य के अलावा एक और वंदना, स्तुति या श्लोक, तोड़ा/टुकड़ा, तिहाई, परमेलु, कवित्त, गतनिकास, गतभाव, परन और लड़ी से युक्त तीन ताल नृत्य अनुक्रम। • झपताल— तत्कार, थाट, उत्तम, अनाद, तोड़ा/टुकड़ा, तिहाई, परन, लड़ी। • अभिनय— (भजन/ठुमरी) एक और रचना। • तराना सहित कक्षा 9 में अध्ययन किए गए विषयों का अभ्यास। • भरतनाट्यम— अलारिप्पु, जातिस्वरम, शब्दम, तिल्लाना का अभ्यास, कीर्तनम और पदम को इसमे जोड़ा जा सकता है। • मणिपुरी— रसनृत्य, लाई हरोबा, खंबा-थोबी। • कुचिपुड़ी— तरंगम, धारुवास, शब्दम।	**विद्यार्थी —** • नृत्य के एक साधन के रूप में अपने आप में तैयार करता और धुन विकसित करता है। • कक्षा 9 में सीखे गए शास्त्रीय नृत्य रूपों के बुनियादी तत्वों को प्रदर्शित करता है। • विभिन्न लयबद्ध पैटर्न का पाठ करता है। • कक्षा 9 में सीखी गई नृत्यशैली के सभी तत्वों का प्रदर्शन करता है। • हाथ के संकेतों के साथ विभिन्न लयबद्ध पैटर्न का पाठ करता है। • एक कला के रूप में नृत्य, कलाकारों और विभिन्न नृत्य के कलाकारों के रूप की सराहना करता है । • एक औपचारिक नृत्य की प्रस्तुति करता है (अवधि 25–30 मिनट)। • सामग्री, विषय, भावनाओं को प्रभावी ढंग से संवाद करते हुए सीखा गया नृत्य करता है। • नृत्य की शास्त्रीय, लोक, पारंपरिक और समकालीन शैलियों की पहचान करता है। • नृत्य, कला और कलाकारों के प्रकारों की सराहना करता है। • लयबद्ध पैटर्न की रचना करता है। • उपलब्ध संसाधनों की योजना, रचना और उपयोग करते हुए रचनात्मक कौशल प्रदर्शित करता है। • अपने स्वयं के नृत्य भावों के साथ-साथ अन्य लोगों पर प्रतिक्रिया देता और अध्ययन करता है। • दिन-प्रतिदिन के जीवन में नृत्य से प्राप्त कलात्मक और सौंदर्य बोध को अपनाता है। • कलाकारों के साथ या विभिन्न स्रोतों (प्रिंट और मीडिया) से बातचीत से प्राप्त सूचनाओं को व्यक्त करता है। • नृत्य के विकास के अतीत और वर्तमान परिदृश्य को जोड़ता है। • नृत्य की संगत में प्रयुक्त संगीत वाद्ययंत्रों के रखरखाव में प्रयास करता है।

- मोहिनीअट्टम— चोलकट्टू, जतिस्वरम, श्लोकम, तिललाना, कक्षा 9 में सीखे गए नृत्य को अभ्यास करें; पदम और सप्तम अब सीखा जा सकता है।
- ओडिसी— मंगलाचरण, बटु नृत्य, पल्लवी कक्षा 9 में सीखे गए नृत्य का अभ्यास; मोक्ष अभिनय; मोक्ष अभिनय अब सीखे जा सकते हैं।
- सत्रिया— नृत्त, नृत्य (कहानी–कहना), नाट्य (टीम या एकल)।
- कथकली— कक्षा 9 में सीखे गए नृत्य से एक अलग कहानी को नाटकीय रूप से प्रस्तुत करें।
- कक्षा 9 में सीखे गए एक नृत्य के अलावा एक आदिवासी/पारंपरिक/लोक नृत्य को सीखें।
- नृत्य के शास्त्रीय, पारंपरिक, लोक और समकालीन शैलियों के जीवंत प्रदर्शन को देखें।
- कलाकारों और शिल्पकारों द्वारा विभिन्न कलाओं में दिए गए योगदान पर चर्चा करें।
- दिलचस्प स्वरूप के साथ रचनाओं का विकास करें। पैरों द्वारा और हाथों और भुजाओं के उपयोग के साथ चेहरे के उपयुक्त भावों के साथ तैयार कर सकते हैं। प्रॉप्स और पोशाकों को नृत्य का प्रभाव बढ़ाने के लिए तैयार किया जा सकता है।
- स्वयं के प्रदर्शन/दोस्तों के संगीत प्रदर्शन को रिकॉर्ड करें और प्रदर्शन का मूल्यांकन या विश्लेषण करें। इससे साथी से सीखने, अपने आप से सीखने, को बढ़ावा मिलेगा।
- कक्षा-कक्ष, स्कूल, परिसर, घर, और किसी अन्य स्थान पर अन्य कला के रूप का अभ्यास करें। साथियों के साथ श्रृव्य-दृश्य, चित्र, ई-सामग्री के रूप में रिकॉर्ड, प्रदर्शन/साझा करें।
- सांस्कृतिक इतिहास, भारतीय नृत्य के विकास और पौराणिक कथाओं से संबंधित कहानियों को पढ़ने के लिए पुस्तकालय जाएँ।
- वस्तुओं का अध्ययन करने और उन्हें कला और संस्कृति से संबंधित करने के लिए संग्रहालयों में जाएँ।

• कलाकारों और शिल्पकारों के साथ बातचीत करें और उनके काम का दस्तावेज़ीकरण करें। समूहों द्वारा तैयार किए गए दस्तावेज़ से एक पावरप्वाइंट प्रेज़ेंटेशन या ई-सामग्री को बनाया जा सकता है। • नर्तक-नर्तकियों के जीवन रेखाओं पर चर्चा करें और उनकी सीखने की प्रक्रिया के साथ-साथ उनके सामने आने वाली चुनौतियों को भी समझें।	

कक्षा 10 नाट्यशाला/थिएटर

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से या समूहों में अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है, कि वे — • पद्धतियों (अनुष्ठानों) और उनके महत्व का अध्ययन करें — (यह व्यापक रूप से माना जाता है कि रंगमंच की जड़ें इसकी पद्धतियों में होती हैं— प्राचीन या ऐतिहासिक)। जैसे होली के दौरान होलिका दहन एक अनुष्ठान होता है, जिसका सैकड़ों वर्षों तक पालन किया जाता है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का एक छोटा अध्ययन करने से इन अनुष्ठानों की उत्पत्ति और महत्व को समझने में मदद मिलेगी। • विभिन्न पात्रों के उचित कथानक और संवादों के साथ घटना पर एक ड्रामा/नाटक करें। • पात्रों के बीच संवाद के माध्यम से संवाद करें क्योंकि यह भाषा सीखने और बंधे हुए दायरे से बाहर सोचने का एक महत्वपूर्ण पहलू है। • जीवन और हमारे आस-पास की स्थितियों में इसी तरह की अन्य स्थितियों पर चर्चा करें और उन्हें समझकर गंभीर रूप से विश्लेषण करें। • उस अनुष्ठान के उद्देश्य पर चर्चा करें जिसे विद्यार्थियों द्वारा समझा जा सकता है। • विभिन्न अभिव्यक्तियों/रूपों में प्रकृति का निरीक्षण करें। पेड़-पौधों, जानवरों, पक्षियों, मानव आदि के किसी भी व्यवहार, गतिविधि या आवाज़ का अनुकरण करें। • प्रकृति और पर्यावरण को हमारे देश के अनुष्ठानों, त्यौहारों से जोड़ें। • एक विशेष प्रकार के वातावरण की विशेषताओं का अनुकरण करना और पर्यावरण के कारण जीवन के सौंदर्यशास्त्र की खोज करना। • हमारे दैनिक जीवन में कल्पना की भूमिका के माध्यम से प्रकृति के संबंध में विभिन्न स्थितियों की कल्पना करें। • कक्षा-कक्ष, सभा या स्कूल में किसी अन्य स्थान पर स्थान के उपयोग को समझें।	**विद्यार्थी —** • अनुष्ठान से संबंधित गतिविधियों को दर्शाता है। • त्यौहारों और उनके अनुष्ठानों के महत्व को समझता है। • अभिव्यक्ति का एक अर्थ खोजने के साथ-साथ भाषा के समुचित उपयोग को सक्षम करने के लिए एक भाषा बनाता है। • कक्षा के माहौल में एक नाटक बनाता है और कल्पना करता है। • अनुष्ठानों को वर्तमान जीवन स्थितियों का विश्लेषण/जोड़ता है और उनकी व्याख्या करता है। • अपनी विविध अभिव्यक्तियों में प्रकृति की विशेषताओं को व्यक्त करता है और कनेक्शन का विश्लेषण करता है। • जीवन की स्थितियों पर दर्शाता है— नाटक जीवन की परिस्थितियों और पूरे आनंद से संबंधित है। • प्रकृति और पर्यावरण की विशेषताओं को दर्शाता है और यह मानव को कैसे प्रभावित करता है। • विद्यार्थियों द्वारा नियमित रूप से उपयोग की जाने वाली वस्तुओं/प्रॉप्स का उपयोग करके एक दृश्य व्यक्त करता है। • उद्देश्य के साथ एक नाटक बनाता है। • सहजता से बनाता है और व्यक्त करता है। • संवाद और प्रतिबिंब करता है कि रंगमंच की अपनी भाषा होती है जिसमें कुछ बुनियादी श्रेणियाँ शामिल होती हैं— ▪ मौखिक ▪ गैर-मौखिक ▪ दृश्य ▪ विज़ुअल ▪ कामुक ▪ भावपूर्ण ▪ कल्पना करना • विश्लेषण करता है कि अभिव्यक्ति के लिए हमारे शरीर के विभिन्न हिस्सों का उपयोग कैसे किया जा सकता है।

- एक स्कूल में पाई जाने वाली सामान्य चीज़ों का उपयोग करें जैसे कि मेज़, कुर्सी, स्कूल बैग, कॉपी आदि।
- एक दृश्य बनाने के लिए एक स्थान व्यवस्थित करें।
- प्रदर्शन —
  - पाठ्यपुस्तक से कविताओं का पाठ
  - पाठ्यपुस्तक या किसी अन्य पुस्तक के अध्याय से कहानी सुनाना
  - इतिहास की पुस्तकों, भाषा की पाठ्यपुस्तकों आदि से पात्र
- नाटक/रंगमंच तैयार करने के लिए स्क्रिप्ट बनाना।
- शुरुआत में शिक्षक द्वारा कुछ हस्तक्षेपों के साथ दृश्यों को सहज रूप से शुरू करें, लेकिन धीरे-धीरे विद्यार्थी को चेहरे के भाव, संवाद बोलने, गतिविधियाँ करने, टोन की गुणवत्ता, लहजे, वेशभूषा या रंगमंच की सामग्री जैसे शारीरिक भाषा आदि के माध्यम से अभिव्यक्ति में सुधार के लिए मार्गदर्शन करें।
- एक नाटक बनाने के लिए संगीत, हाव-भाव, दृश्य कला, कठपुतली, माइम, मुखौटा, मल्टीमीडिया का उपयोग करें। इसे कला से संबंधित अन्य क्षेत्रों में शिक्षकों की मदद से अभ्यास करना चाहिए।
- एक नाटक का विश्लेषण करें—
  - एक स्थापित नाटककार द्वारा एक नाटक पढ़ें
  - दृश्यों और इकाइयों द्वारा नाटक का विश्लेषण करें
  - लोक और उचित दोनों प्रकार की प्रस्तुतियों में रंगमंच के रूपों को समझें
  - नाटक पढ़ें
  - एक नाटक प्रदर्शन में भाग लेने और इसका विश्लेषण करें
- अलग-अलग नाटकों की रिकॉर्डिंग देखें, जिन्हें अलग-अलग सांस्कृतिक संगठनों के अभिलेखागार से पाया जा सकता है।

- माइम या कठपुतली बनाने के लिए कैसे हमारे परिवेश और हमारे समाज के लोगों के अवलोकन की आवश्यकता होती है।
- जीवन में विभिन्न घटनाओं/स्थितियों से व्यक्ति की पहचान कैसे बनती है, यह दर्शाता/निरीक्षण है और बताता है।
- विश्लेषण करता है कि नाटक की विचार प्रक्रिया की प्रस्तुतियों में मल्टीमीडिया या कठपुतली कैसे एक बड़ी भूमिका निभाती है।
- विभिन्न प्रकार के नाटक और नाटककारों की सराहना करता है।
- दृश्यों, पात्रों, स्थितियों और वास्तविक जीवन स्थितियों से उनके संबंध का विश्लेषण करता है।
- आवाज़ के मॉड्यूलेशन के कौशल को समझता है।
- अनुभवी रंगमंच कलाकारों की सराहना करता है जिन्होंने रंगमंच के विकास में योगदान दिया है।
- व्यक्त करता है कि भारत के हर राज्य/क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के नाट्यशाला हैं जो विशाल दर्शकों द्वारा देखे और पसंद किए जाते हैं।

इस स्तर पर एक नाटक को आगे बढ़ाने के तकनीकी पहलुओं पर फ़ोकस किया जाता है; स्क्रिप्टिंग (पांडु लिपि लेखन) से शुरू होकर मंचन तक, जिसमें विभिन्न भारतीय थिएटर परंपराएँ शामिल हैं।

एक समावेशी सेट में सुझाई गई शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (दृश्य कला)

यह देखा गया है कि श्रवण क्षमता से बाधित, बच्चे दृश्य कला में असाधारण रूप से अच्छा प्रदर्शन करते हैं। उनका कट और पेस्ट, पिक्टोरियल डिस्प्ले, डायस्पोरा बनाने, निर्माण, क्ले-मॉडल, पेंटिंग, ग्रॉफ़िक्स, वॉल-पेंटिंग, फोटोग्रॉफ़ी या किसी अन्य दृश्य कला में गतिविधियों में पिक-अप बहुत ही अच्छा होता है। विश्व स्तर पर संज्ञानात्मक कमी वाले बच्चों की सीखने की सुविधा के लिए चिकित्सा के रूप में दृश्य कला के अनुभवों का उपयोग और प्रचार किया जा रहा है। यह केवल निर्देश देने, जानकारी साझा करने और उनकी क्षमताओं और कौशल का आकलन करते समय हो सकता है कि हमें कुछ उपायों का पालन करने की आवश्यकता है जो समावेशी व्यवस्था में बच्चों को सुविधा और लाभ दे सकते हैं।

- दृश्य; सीनरी; परिस्थिति; वस्तुओं; रंग आदि के विस्तृत मौखिक विवरण का उपयोग करें और उनके पिछले ज्ञान के साथ संबंध स्थापित करें।
- विभिन्न वस्तुओं, आकृतियों, सतह, बनावट आदि के मामले में 'स्पर्श करें और सीखें' की सुविधा देकर स्पर्श विद्या का उपयोग करें। इसे विपरीत चीजों के साथ देकर उनकी धारणा बेहतर बनाएँ।
- त्रि-आयामी सामग्री, जैसे— मिट्टी, नरम लकड़ी, पेरिस ब्लॉक के प्लास्टर आदि पर राहत कार्य, ब्लॉक पेंटिंग, रेत का उपयोग, त्रि-आयामी निर्माण, कागज़ पर शिल्प आदि का उपयोग करें।
- विषय/कला कार्यों/अभिव्यक्ति की व्याख्या के लिए रोज़मर्रा के जीवन के उदाहरणों का उपयोग करें।
- नयी संकल्पनाओं को समझाने के लिए ऑडियो का उपयोग करें; उदाहरण के लिए, प्रदूषण, भेदभाव, वनों की कटाई, खेल, त्योहार आदि।
- त्रि-आयामी स्थापना, प्रदर्शन और प्रदर्शनी जैसी गतिविधियों में समूह कार्य को व्यवस्थित करें।
- दिए गए विषय के साथ बेहतर संबंध बनाने हेतु विद्यार्थियों के लिए ऐतिहासिक स्मारकों, मेला, खेल के मैदान, शॉपिंग सेंटर के लिए भ्रमण, ट्रिप और दौरे आयोजित करें। अन्य इंद्रियों, जैसे— ध्वनि, गंध और स्पर्श का उपयोग करके वातावरण की खोज में विद्यार्थियों को शामिल करने के अधिक अवसर दें।
- संगत निर्देश, विधियों और तकनीक का पालन करने के लिए अनुभव पर लिखित निर्देश और सूचना प्रदान करें।
- मुख्य बिंदुओं और शब्दों को हाइलाइट/रेखांकित करें और विज़ुअल्स/ग्राफ़िक्स ऑर्गनाइज़र, फ़्लो-चार्ट, पोस्टर आदि का उपयोग करें।
- परियोजनाओं/असाइनमेंट के लिए समावेशी टीमों को व्यवस्थित करें। इससे सभी बच्चों को लाभ मिल सकता है क्योंकि वे एक से अधिक तरीकों का उपयोग करते हुए दूसरे लोगों को अपने दृष्टिकोण को समझाने के लिए विशेष प्रयास करते हैं।

- कक्षा की प्रस्तुति को (यदि हमेशा नहीं तो कभी-कभी) सभी टीमों को संकेत/इशारों की सहायता से संवाद के लिए प्रोत्साहित करें। विद्यार्थी साइन लैंग्वेज को समझ सकते हैं और अभ्यास कर सकते हैं। इससे उनके सामाजिक कौशल के अलावा, उन्हें अपने संज्ञानात्मक कौशल को भी तेज़ करने में मदद मिल सकती है।
- फ़िल्मों/प्रलेखन और वीडियो का उपयोग करें।
- जो सीखा जा रहा है, उसके साथ संबंध बनाने के लिए अपने पिछले ज्ञान का उपयोग करें।
- लिखित निर्देश और/या जानकारी दें और अप्रत्यक्ष और गैर-निर्णायक कौशल का उपयोग करके उनकी समझ सुनिश्चित करें।
- बहु-संवेदी निवेशों और विधियों का उपयोग करें जिसमें शामिल हैं; ध्वनियों को सुनना, दृश्य को देखना, महक और जहाँ भी संभव हो वस्तु/विषय की सतह/बनावट को छूना।
- बच्चे ने कितना सीखा है, इसे जाँचने की प्रक्रिया के बीच में सरल, लेकिन संगत प्रश्न पूछें। इससे चरणों को मज़बूत करने और बेहतर तरीके से अपनाने में भी मदद मिलती है।
- संकल्पनाओं को समझाने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग करें, जैसे कि नाटकीयता, रचनात्मक कदम, क्षेत्र का भ्रमण, वास्तविक जीवन के उदाहरण आदि।
- किसी भी कलात्मक कौशल पर उनका मूल्यांकन करते समय यह सुनिश्चित करें कि इसकी कोई तुलना नहीं है।
- सहकर्मी द्वारा मूल्यांकन या शिक्षक मूल्यांकन से पहले उन (ऐसे विद्यार्थी यदि सभी नहीं हैं) को अपने उत्पाद/निर्माण की व्याख्या करने और उनके अनुभव के बारे में बताने का अवसर दिया जाना चाहिए।
- उनके प्रति वास्तविक सहानुभूति और करुणा से उनकी कलात्मक प्रतिभा को सुविधाजनक बनाने में सबसे अधिक मदद मिलती है।

एक समावेशी व्यवस्था में सुझाई गई शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (संगीत)

- संगीत सिखाने के लिए विभिन्न इंद्रियों का उपयोग करें। उनके द्वारा गायन और रिकॉर्डिंग के द्वारा नाद, श्रुति, स्वर, ताल जैसी संकल्पनाओं की व्याख्या करें।
- मात्राओं के संगत तालों के उपयोग को समझने के लिए अँगुलियों और हथेली का उपयोग करें।
- स्वरों और रचनाओं को समझने के लिए अँगुलियों के माध्यम से गिनने की संकल्पना, अलग-अलग लयबद्ध पैटर्न के लिए निर्धारित हैं।
- रचनाओं और रागों को सीखने के लिए बार-बार अभ्यास करना।
- आईसीटी का उपयोग करें क्योंकि इसमें व्यक्तियों की सहायता के लिए बहुक्रियात्मक दृष्टिकोण और सहायक उपकरण, जैसे— कैलकुलेटर, कंप्यूटर, विज़ुअल एड या टॉकिंग डिवाइस का लाभ मिलता है।

- इन्हें रिकॉर्ड रखने में मदद करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करें।
- रिकॉर्डेड संगीत चलाएँ।
- विद्यार्थियों के साथ सहयोग करें और कक्षा को इसमें भाग लेने के लिए प्रेरित करें।
- विद्यार्थियों की ज़रूरतों के आधार पर गति के साथ एक अच्छी तरह से परिभाषित शिक्षण अनुक्रम का पालन करें। शिक्षक यह पता लगा सकता है कि विद्यार्थी पहले से क्या जानता है और उसके अनुसार अपने शिक्षण का निर्माण कर सकता है। उदाहरण के लिए, शिक्षण प्रक्रिया में एक कार्यनीति शामिल होगी, जैसे 'स्केफ़ोल्ड' (सीखने की प्रक्रिया के दौरान समर्थन देना) क्योंकि विद्यार्थी गहरी समझ का निर्माण करता है।

एक समावेशी व्यवस्था में सुझाई गई शैक्षणिक प्रक्रियाएँ कक्षा 9 (नृत्य)

नृत्य बच्चों की गतिशीलता प्रतिबंध या विशेष आवश्यकताओं के कारण उनके स्वास्थ्य और कल्याण को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसके लिए कक्षा-कक्ष के वातावरण को सहायक होने की आवश्यकता होती है। ऐसे बच्चे भी हो सकते हैं, जो अन्य बच्चों की तरह देख और सुन नहीं सकते। उन्हें दृश्य इनपुट और ध्वनियों के प्रतिस्थापन या इसके विपरीत अनुकूलन की आवश्यकता हो सकती है। नि:शक्त बच्चों को नृत्य के लिए प्रोत्साहित करने से उन्हें अन्य बच्चों के साथ संपर्क बनाने, सहायता प्रदान करने में मदद मिलेगी।

एक शिक्षक विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों के लिए कक्षा-कक्ष में स्पष्ट बुनियादी नियम स्थापित करने का प्रयास करता है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए कुछ गतिविधियाँ और कुछ शैक्षणिक प्रक्रियाएँ नीचे दी गई हैं —

- स्पर्श का उपयोग करने से उन्हें पैरों द्वारा की गई एक गतिविधि या लयबद्ध पैटर्न को सीखने में मदद दी जा सकती है। ऐसे बच्चों को जगह के बारे में अनुमान लगाने में समर्थन की आवश्यकता होगी। सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मौखिक निर्देश दिया जा सकता है।
- ऐसे बच्चों को परक्यूशनिस्ट या ड्रम-प्लेयर के फ़िंगर स्ट्रोक को देखकर ताल समझना सिखाया जा सकता है।
- फ़िल्मों/प्रलेखन और वीडियो का उपयोग करें।
- लिखित निर्देशों और संगत प्रमुख संकल्पनाओं, विधियों और तकनीक पर जानकारी का पालन किया जाना चाहिए।
- कक्षा-कक्ष की प्रस्तुतीकरण को (यदि हर समय नहीं तो कभी-कभी) सभी टीमों को संकेत/इशारों की सहायता से प्रोत्साहित करें। विद्यार्थी साइन लैंग्वेज को समझ सकते हैं और अभ्यास कर सकते हैं। इससे उनके सामाजिक कौशल के अलावा उनके संज्ञानात्मक कौशल को भी तेज़ करने में मदद मिल सकती है।

- बहु-संवेदी निवेशों और विधियों का उपयोग करें, जिसमें संगीत सुनना, ताली के माध्यम से ताल बजाना, उन्हें एक गतिविधि या पद संचालन के पैटर्न में मार्गदर्शन करने के लिए स्पर्श का उपयोग करना शामिल है।
- एक नृत्य रचना बनाने के लिए एक कहानी का उपयोग करें, जिसमें लय, सरल गतिविधि और नाटकीयता शामिल है।
- उनके कलात्मक कौशल पर उनका मूल्यांकन करते समय, कोई तुलना नहीं होनी चाहिए।
- सहकर्मी मूल्यांकन या शिक्षक मूल्यांकन से पहले ऐसे शिक्षार्थियों को अपने उत्पाद/ निर्माण की व्याख्या करने और उनके अनुभव के बारे में बताने का अवसर दिया जाना चाहिए।
- उनके प्रति वास्तविक सहानुभूति और करुणा उनकी कलात्मक प्रतिभा को सुविधाजनक बनाने से ही, उनकी सबसे अधिक मदद की जा सकती है।
- ऐसे बच्चों को कई तरह से नृत्य में भाग लेने के लिए तैयार किया जा सकता है। बैसाखी का उपयोग करने वाले बच्चे डांस स्पेस में 'फ्री आर्म' के साथ डांस मूवमेंट कर सकते हैं और इशारों और चेहरे के भावों का उपयोग करते हुए पूरी कहानी से संबंध बना सकते हैं; व्हीलचेयर पर बच्चे हाथ से इशारों और चेहरे के भावों के माध्यम से एक पूरी कहानी पर नृत्य कर सकते हैं। वे व्हीलचेयर को घुमाकर इसे अपने कौशल के उपयोग से नृत्य का हिस्सा भी बना सकते हैं।
- नृत्य गतिविधि में भागीदारी आत्म अभिव्यक्ति, आत्म-मूल्य, आत्मविश्वास, व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा मिलता है, इंद्रियाँ तेज़ होती हैं, मोटर कौशल, न्यूरो-मस्कुलर समन्वय, मानसिक और भावनात्मक कल्याण में सुधार आता है।

विकास समिति के सदस्य

सलाहकार

हृषिकेश सेनापति , *आचार्य* एवं *निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

विकास समिति, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

अंजनी कौल, *आचार्या*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग

अंबादत्त तिवारी, *आचार्या*, परीक्षा सुधार प्रकोष्ठ

अनीता नूना, *आचार्या* एवं *विभागाध्यक्षा*, पाठ्यचर्या अध्ययन विभाग

अपर्णा पांडे, *आचार्या*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग

अलका मेहरोत्रा, *आचार्या*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग

आर.आर. कोइरेंग, *सह आचार्य*, पाठ्यचर्या समूह

आर. मेघनाथन, *आचार्य*, भाषा शिक्षा विभाग

इंद्राणी भादुड़ी, *आचार्या* एवं *विभागाध्यक्षा*, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग

ए.के. वज़लवार, *आचार्य*, शैक्षिक किट प्रभाग

एम.वी. श्रीनिवासन, *सह आचार्य*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग

कीर्ति कपूर, *आचार्या*, भाषा शिक्षा विभाग

के. विजयन, *सहायक आचार्य*, अध्यापक शिक्षा विभाग

के.वी. श्रीदेवी, *सहायक आचार्या*, पाठ्यचर्या अध्ययन विभाग

गौरी श्रीवास्तव, *आचार्या* एवं *विभागाध्यक्षा*, जैंडर अध्ययन विभाग

चमन आरा खान, *सह आचार्या*, भाषा शिक्षा विभाग

जया सिंह, *सह आचार्या*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग

जे.एम. मिश्रा, *आचार्य*, भाषा शिक्षा विभाग

ज्योत्सना तिवारी, *आचार्या*, कला सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग

टी.पी. सरमा, *आचार्य*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग

तन्नु मलिक, *सह आचार्या*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग

दिनेश कुमार, *आचार्य*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग

नरेश कोहली, *सह आचार्य*, भाषा शिक्षा विभाग

नीरजा रश्मि, *आचार्या*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग

पवन सुधीर, *आचार्या* एवं *विभागाध्यक्षा*, कला सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग

पुष्पलता वर्मा, *सह आचार्या*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग

प्रतिमा कुमारी, *सह आचार्या*, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग

प्रमोद कुमार दुबे, *आचार्य*, भाषा शिक्षा विभाग

फारूक अंसारी, *आचार्य*, भाषा शिक्षा विभाग

बिजया मलिक, *सह आचार्य*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग

मीनाक्षी खार, *सह आचार्या*, भाषा शिक्षा विभाग

मोहम्मद मोअज़्ज़मुद्दीन, *आचार्य*, भाषा शिक्षा विभाग

रचना गर्ग, *आचार्या*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग

रूचि वर्मा, *आचार्या*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग

वीर पाल सिंह, *आचार्य*, शैक्षिक सर्वेक्षण विभाग

शंकर शरण, *आचार्य*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग

शर्बरी बैनर्जी, *सहायक आचार्या*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग

शशि प्रभा, *आचार्या*, शैक्षिक किट प्रभाग

संध्या रानी साहू, *आचार्या*, भाषा शिक्षा विभाग

संध्या सिंह, *आचार्या* एवं *विभागाध्यक्षा*, भाषा शिक्षा विभाग

सीमा एस. ओझा, *आचार्या*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग

सुखविंदर भगत, *सह आचार्य*, शैक्षिक सर्वेक्षण विभाग

सुनीता फरक्या, *आचार्या* एवं *विभागाध्यक्षा*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग

स्वर्गीय एम.वी.एस.वी. प्रसाद , *सहायक आचार्य*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग

हरीश मीणा, *सहायक आचार्य*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग

समन्वयक

शरद सिन्हा, *आचार्या*, अध्यापक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

समीक्षा समिति

अंजुम सिबिया, *आचार्या* एवं *विभागाध्यक्षा*, शैक्षिक अनुसंधान विभाग

अनीता जुल्का, *आचार्या*, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग

अनुप राजपूत, *आचार्य* एवं *विभागाध्यक्ष*, प्रकाशन प्रभाग

ए.के. श्रीवास्तव, *डीन रिसर्च*, *आचार्य* एवं *विभागाध्यक्ष*, शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शैक्षिक आधार विभाग

रंजना अरोड़ा, *आचार्या* एवं प्रभारी, पाठ्यचर्या समूह

सरोज यादव, *डीन* (अकादमिक), *आचार्या* एवं *अध्यक्षा*

आभार

सीखने के प्रतिफल पर चर्चा हेतु आयोजित कार्यशाला में निम्नलिखित सदस्यों ने योगदान दिया—

अनीता रस्तोगी, *आचार्या*, जामिया मिलिया इस्लामिया, नयी दिल्ली
अनूप कुमार साहा, *सहायक आचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर
अभय कुमार, *कार्यकारी निदेशक*, चैतन्य कश्यप, नयी दिल्ली
अमित रिछारिया, *टीजीटी*, केंद्रीय विद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश
अमिता पांडे भारद्वाज, *आचार्या*, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नयी दिल्ली
अरुणिमा चक्रवर्ती, *प्रधानाचार्या*, डीपीएस, रांची, झारखंड
अर्णव सेन, *सहायक आचार्य*, उत्तर पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग
अल्बर्ट होरो, *सह आचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
आभा झा, *प्रवक्ता*, गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, नयी दिल्ली
आर. वैजयंती, *सहायक आचार्या*, अविनाशिलिंगम इंस्टिट्यूट फॉर होम साइंस, कोयम्बटूर, तमिलनाडु
आर.बी. पारीक, *सह आचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
आशीष घोष, *स्वतंत्र रंगमंच कलाकार*, नयी दिल्ली
आशीष रंजन, *सहायक आचार्य*, सीआईई, दिल्ली विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली
एच.एस. गणेश भट्ट, *सलाहकार*, एमईएस किशोर केंद्र, कर्नाटक
एन. प्रधान, *आचार्य* एवं *प्राचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
एन.के. दास, *आचार्य*, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली
एल.के. तिवारी, *आचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
एस.के. पांडे, *सह आचार्य*, पाठ्यचर्या अध्ययन विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली
एस.सी. पाणिग्रही, *आचार्य*, एम.एस. बड़ौदा विश्वविद्यालय, गुजरात
के. कामेश्वर राव, *सह आचार्य* (सेवानिवृत्त), क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
के. सुरेश कुमार, *सहायक आचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर
के.सी. साहू, *अध्यक्ष*, शिक्षा विभाग, विश्वभारती, पश्चिम बंगाल
जफर आलम, *आचार्य* (सेवानिवृत्त), मगध विश्वविद्यालय, बिहार
जी. विश्वनाथप्पा, *आचार्य* एवं प्राचार्य (सेवानिवृत्त), क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
तबरेज़ हसन अंसारी, *टीजीटी*, केंद्रीय विद्यालय, सेक्टर 2, आर.के. पुरम, नयी दिल्ली
दीपा दास, *सहायक निदेशक*, आरएमएसए, छत्तीसगढ़
देवराज गोयल, *आचार्य*, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, नयी दिल्ली
देवव्रत बागुई, *सहायक आचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर
देवेन्दर कुमार, *पीजीटी*, सरकारी उच्च मध्यामिक विद्यालय, थुनाग, हिमाचल प्रदेश
दोरासमी के. *आचार्य* (सेवानिवृत्त), क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर
नम्रता टोगनट्टा, *शिक्षा विशेषज्ञ*, विश्व बैंक, नयी दिल्ली
निशा महाजन, *स्वतंत्र कथक कलाकार*, नयी दिल्ली
पी.के. चौरसिया, *आचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
पी.सी. अग्रवाल, *आचार्य* एवं *प्राचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर
बी. बड़ठाकुर, *आचार्य* एवं *प्राचार्य*, उत्तर पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग
बी.डी. सिंह, *आचार्य* (सेवानिवृत्त), बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश

बेनुधर चिनारा, *आचार्य*, विश्वभारती शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल
मानसी गोस्वामी, *आचार्या*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर
मोहम्मद अख्तर सिद्दीकी, *आचार्य* (सेवानिवृत्त), जामिया मिलिया इस्लामिया, नयी दिल्ली
राजरानी, *आचार्या एवं विभागाध्यक्षा*, अध्यापक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली
रिजवानुल हक, *सहायक आचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
रीता शर्मा, *आचार्या* (सेवानिवृत्त), क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
रीतांजलि दास, *आचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर
रंजीत बेहेरा, *सह आचार्य*, दिल्ली विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली
लेथा राम मोहन, *मुख्य सलाहकार*, टीएसजी, एमएचआरडी
वाई. श्रीकांत, *आचार्य एवं प्राचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर
विक्रम सिंह, *आचार्य*, जेएनयू, नयी दिल्ली
विजय लक्ष्मी, *टीजीटी*, केंद्रीय विद्यालय 2, नयी दिल्ली
वी. चंद्रन्ना, *सहायक आचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर
वी. तंगपु, *सहायक आचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर
वी.डी. भट्ट, *आचार्य* (सेवानिवृत्त), क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर
वेद प्रकाश, *सहायक आचार्य*, भाषा शिक्षा विभाग
वेलयुधन नायर, *सहायक आचार्य*, पीट मेमोरियल ट्रेनिंग कॉलेज, केरल
शतरूपा पालित, *सह आचार्य*, उत्तर पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग
शिखा जैन, *तकनीकी अध्यक्षा* (शिक्षा), प्लान इंडिया, नयी दिल्ली
संगीता ज़ैदी, *प्रधानाचार्या*, केंद्रीय विद्यालय 4, नयी दिल्ली
संगीता डे, *वरिष्ठ शिक्षा विशेषज्ञ*, विश्व बैंक, नयी दिल्ली
संदेश कुमार भट, *टीजीटी*, केंद्रीय विद्यालय 1, जम्मू
सरयुग यादव, *आचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
सीमा सहगल, *सह आचार्या*, उत्तर पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग
सुदर्शन चक्र पाणिग्राही, *आचार्य*, एम.एस. विश्वविद्यालय, गुजरात
सुदर्शन मिश्रा, *सह आचार्य*, रेवेंशा विश्वविद्यालय, ओडिशा

सीखने के प्रतिफल को अंतिम रूप देने की परामर्श बैठक (3–4 अक्तूबर 2019) में एससीईआरटी/ एसआईई, बोर्ड के निम्नलिखित सदस्यों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया —

अनवर खान, *अनुसंधान अधिकारी*, एसआईई, जम्मू
अल हिलाल अहमद, *संयुक्त सचिव* (अकादमिक), सीबीएसई, नयी दिल्ली
ए. सुब्बा रेड्डी, *निदेशक*, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, आंध्र प्रदेश
एन. केनेगौड़ा, *उप निदेशक*, डीएसईआरटी, कर्नाटक
एन. सथी, *सहायक आचार्य*, एससीईआरटी, तमिलनाडु
एम.पी. नारायणउन्नि, *अनुसंधान अधिकारी*, एससीईआरटी, केरल
एस. सुरेश बाबू, *आचार्य*, एससीईआरटी, तेलंगाना
एस.जीतलाल शर्मा, *उप सचिव*, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, मणिपुर
कोरडिया मनोज आर, *अनुसंधान सहयोगी*, जीसीईआरटी, गुजरात
टी. गोपालकृष्ण, *उपायुक्त*, नवोदय विद्यालय समिति, नयी दिल्ली
डिजाइसवोली सुरो, *शैक्षणिक अधिकारी*, नागालैंड बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन, नागालैंड

डीईओ नंदन सिंह, *फैकल्टी मेंबर*, जेसीईआरटी, झारखंड
तापस कुमार नायक, *सहायक निदेशक*, एससीईआरटी, ओडिशा
नंदिता सत्संगी, *आचार्य*, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी), उत्तर प्रदेश
नेपाल सिंह तोमर, *अकादमिक सहायक*, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, हरियाणा
पार्थ कर्मकार, *अकादमिक उप सचिव*, पश्चिम बंगाल बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन, कोलकाता
पुष्पा किस्पोट्टा, *आचार्या*, एससीईआरटी, छत्तीसगढ़
मनोज कुमार उपाध्याय, *वरिष्ठ सहायक निदेशक* (अकादमिक), राजस्थान बोर्ड, अजमेर
मोइरंगथेम इंदिरा देवी, *प्रधानचार्या*, डाइट, एससीईआरटी, मणिपुर
रमन अरोड़ा, *सहायक आचार्य*, एससीईआरटी, दिल्ली
राजेश शर्मा, *सहायक निदेशक*, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, हरियाणा
राणा एस.एस. कुमार सुमन, *उप निदेशक*, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, उत्तर प्रदेश
रामकृष्ण सामंत, *अध्यक्ष*, गोवा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, गोवा
रावल नरेंद्र कुमार नारायण दास, *अनुसंधान सहयोगी*, जीसीईआरटी, गुजरात
ललित कुमार, *व्याख्याता*, एससीईआरटी, हरियाणा
लाइबेर लिंगदोह, *व्याख्याता*, डीईआरटी, मेघालय
लालदुहुमी थोटे, *उप निदेशक*, एससीईआरटी, मिजोरम
वाई. लोकेन्द्र सिंह, *अवर सचिव*, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, मणिपुर
विकास नामदेव गरड, *उप निदेशक*, एमएससीईआरटी, महाराष्ट्र
वी. विजय दुर्गा, *व्याख्याता*, एससीईआरटी, आंध्र प्रदेश
वेद प्रकाश आर्य, *सहायक आचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
शंभू सिंह, *सहायक निदेशक*, एससीईआरटी, आंध्र प्रदेश
शिव कुमार शर्मा, *व्याख्याता*, एससीईआरटी, हिमाचल प्रदेश
सी. अमृतवल्ली, *संयुक्त निदेशक*, सरकारी परीक्षा निदेशालय, तमिलनाडु
सुरेंद्र कुमार, *विभागाध्यक्ष*, भाषा एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, एससीईआरटी, बिहार
सोना सेठ, *सहायक आयुक्त* (अकादमिक), केंद्रिय विद्यालय संगठन, नयी दिल्ली
हरिनारायण दास, *अकादमिक अधिकारी*, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, असम

सहायक सदस्य

अनीता रानी, *डीटीपी ऑपरेटर*, योजना एंव अनुवीक्षण प्रभाग
धीरज कुमार, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*, अध्यापक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली
पारुल, *वरिष्ठ सलाहकार*, आरएमएसए (30 मार्च, 2019 तक)
पूजा पटेल, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*, अध्यापक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली
मोहम्मद आतिर, *डीटीपी ऑपरेटर*, प्रकाशन प्रभाग
मोहम्मद ज़ियाउर रहमान, *डीटीपी ऑपरेटर*, प्रकाशन प्रभाग
रमाकांत बरुआ, *वरिष्ठ सलाहकार*, अध्यापक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली
वामसी श्रवण, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*, आरएमएसए (जनवरी, 2019 तक)
शुभी, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*, आरएमएसए (30 मार्च, 2019 तक)
हरकीरत कौर, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*, अध्यापक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

UN 81

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5292-205-5